

युद्धोपासनांक

परिन्नाणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृतान्
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥

साधना सिद्धि विज्ञान



- दुर्लभ माँ पारद कालिका पूजन
- महामृत्युंजय कवच
- तांत्रोक्त हनुमंत-प्रयोग
- युद्धोपासना
- तीव्र प्रभावकारी शत्रुनाशक प्रयोग
- युद्धरत निखिलेश्वर



संन्यासः कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरावुभौ ।
तयोस्तु कर्मसंन्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते ॥

मुक्ति के लिए तो कर्म का परित्याग तथा भक्तिमय-कर्म (कर्मयोग) दोनों ही उत्तम हैं किन्तु इन दोनों में से कर्म के परित्याग से भक्तियुक्त कर्म श्रेष्ठ है।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

साधना सिद्धि विज्ञान



वर्ष 02

अंक 01

माह- 15 नवम्बर से 15 दिसम्बर 2000



* विचार प्रवाह	2	* युद्धकला	37
* युद्धरत निखिलेश्वर	3	* लघु प्रयोग	41
* सत्यमेव जयते	5	* अंतर्द्वंद्व	44
* पारद कालिका पूजन	7	* अनुभूत प्रयोग	46
* युद्धोपासना	16	* दीक्षा संस्कार कार्यक्रम	50
* काली कवच	22	* मानसिक अवसाद	
* युद्धनीति	25	(होम्यो, चिकित्सा)	53
* चण्डी कवच	30	* हनुमंत प्रयोग	56
		* कुमारी पूजन	58
		* युद्ध तो होता ही है	62
		* अर्जुन की दिव्यास्त्र प्राप्ति	70
		* महामृत्युंजय मंत्र	73
		* बहेड़ा कल्प	76
		* शिवोपासना और ज्योतिष	78

आदि गुरु श्री शंकराचार्य जी

सम्पादक

डॉ. साधना सिंह

कार्यकारी सम्पादक

पं. लोकेश दीक्षित

उप सम्पादक

श्री अजय जी

कार्यकारी विभाग

श्री अशोक सिसोदिया,

अनिल सक्सेना,

अवधेश कुमार

प्रकाशक स्वामित्व एवं मुद्रक

अरविन्द सिंह

द्वारा

सहयोग ऑफसेट

227, हरेगोपाल कॉम्प्लेक्स,

जोन-1 एम.पी. नगर भोपाल से

मुद्रित एवं

साधना सिद्धि विज्ञान

5 प्लॉट नं. 210 जोन-1

एम.पी. नगर भोपाल से प्रकाशित

COVER DESIGN

Awork Bhopal ph: 580416

सभी विवादों के लिये न्याय क्षेत्र भोपाल मान्य होगा

मूल्य एक प्रति 18/-

वार्षिक सदस्यता 180/- (डाक व्यय सहित)

रजि. नं. म.प्र. हिन्दी/1999/598

* सम्पर्क *

साधना सिद्धि विज्ञान

शॉप नं. 5 प्लॉट नं. 210 जोन-1 एम.पी. नगर भोपाल-462011 दूरभाष : (0755) 576346, 591143

विचार प्रवाह

प्रत्येक मनुष्य के लिए युद्ध क्षेत्र की प्राप्ति नितांत आवश्यक है। युद्ध क्षेत्र ही नहीं होगा तो फिर कहाँ से विजय प्राप्त होगी, किससे प्रतिस्पर्धा करोगे, किस पर विजय प्राप्त करोगे। युद्ध क्षेत्र के अभाव में लक्ष्मी के विभिन्न आयामों का प्राकट्य भी सम्भव नहीं है। युद्ध क्षेत्र में ही सभी शक्तियाँ एक साथ उपस्थित होती हैं। मनुष्य अपने आपमें इस ब्रह्माण्ड में मौजूद सभी ज्ञात-अज्ञात, गोचर-अगोचर, शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों का जीता जागता शक्ति केन्द्र है। इन सभी शक्तियों का एक साथ प्राकट्य एवं एक साथ क्रियाशील होना केवल युद्धक्षेत्र में ही सम्भव है। युद्ध क्षेत्र में सब हिसाब किताब बराबर हो जाते हैं। सारे गिले-शिकवे, शिकायत इन सबका निवारण युद्ध क्षेत्र में ही होता है। मित्र, शत्रु, शुभचिंतक, हितैषी इत्यादियों की वास्तविक पहचान केवल युद्धक्षेत्र में ही होती है। हम क्या हैं? हमारी औकात क्या है? हम कितने समर्थ और शक्तिशाली हैं? हमारी कमियाँ क्या हैं? हमारी न्यूनताएं क्या हैं? यह सब युद्ध क्षेत्र में शीशे में दिखाई पड़ने वाली आकृति के समान स्पष्ट हो जाता है। युद्ध क्षेत्र का तात्पर्य केवल उस क्षेत्र से नहीं है जहाँ पर तलवार चलाई जाती है। युद्ध क्षेत्र कहीं भी हो सकता है। ज्ञानार्जन का क्षेत्र, व्यापार का क्षेत्र, खेल का मैदान, साधना का काल इत्यादि-इत्यादि। जहाँ प्रतिस्पर्धा है वहाँ युद्ध क्षेत्र है। भारत में तो प्रत्येक वस्तु के लिए प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है। दो वक्त की रोटी के लिए भी यहाँ पर प्रतिस्पर्धा है। सम्पूर्ण जीवन में एक मकान बनाना यहाँ पर महल बनाने के समान है। बहन, बेटियों की शादी के लिए भी घोर युद्ध करना पड़ता है, प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है। काफी मात्रा में धन, बल रूपी ऊर्जा को क्षय करना पड़ता है। होम करना पड़ता है। युद्ध में विजय केवल शारीरिक या आर्थिक बल पर प्राप्त नहीं की जा सकती। इसके लिए आध्यात्मिक बल की भी अत्यधिक आवश्यकता होती है। युद्ध का समीकरण ही ऐसा है। एक युद्ध प्रिय देश में रहने के कारण आप युद्ध से नहीं बच सकते। अतः युद्धोपासना कीजिए। युद्ध को प्रत्येक दृष्टिकोण से समझिए। खुले दिमाग से युद्ध की कलाओं पर विचार कीजिए। सत्य के लिए युद्ध कीजिए। यही युद्धोपासना का ध्येय है।

श्री अरविन्द जी

दो शब्द

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री विषय विशेषज्ञों के विवेक, सम्बन्धित क्षेत्र में उनके विशेष अनुभव तथा शास्त्र सम्मत है। पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य आध्यात्मिक चेतना जागृत कर पाठकों को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाना है तथा कथित बुद्धिमानों के तर्क-कुतर्कों में उलझकर विवाद उत्पन्न करना कदापि नहीं। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री यदि ऐसे बुद्धिमानों व तार्किकों की कसौटी पर खरी न उतरे तो वे इसे काल्पनिक समझकर भूल जाँय। हमारा उद्देश्य साधना, जप, तप, योग, ध्यान, प्राणायाम जैसी सनातन पद्धतियों की उपयोगिता तथा जीवन में इसकी महत्ता को पाठकों तक पहुँचाना है ताकि वे इनका अधिक से अधिक लाभ ले सकें।

पत्रिका में प्रकाशित लेख दुर्लभ ग्रंथों पर आधारित हैं सभी लेखों से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी प्रकार के विवाद का निपटारा भोपाल न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में होगा। बहुत से ऐसे लेख भी पत्रिका में प्रकाशित किये गये हैं जो लेखकों के स्वयं के अनुभव हैं जिसकी आलोचना करना व्यर्थ है। प्रकाशित साधना व प्रयोग आदि की सफलता/असफलता तथा आवरण पृष्ठ की डिजाइन एवं मुद्रण सम्बन्धी त्रुटियों के लिये पत्रिका परिवार जिम्मेदार नहीं होगा।

कार्यकारी सम्पादक

युद्धरत निखिलेश्वर

सन् 1930 के आसपास करांची के पास एक छोटे से गाँव में वैदिक ब्राह्मणों में श्रेष्ठ श्रीमाली परिवार में एक बालक जन्म लेता है। श्रीमाली ब्राह्मणों की कुल देवी महालक्ष्मी है परन्तु इन लक्ष्मी आराधकों ने लक्ष्मी पूजन विधिवत रूप से तो सभी जगह कराया परन्तु विडम्बना यह रही कि विशुद्ध रूप से ब्राह्मणत्व के सिद्धांतों का पालन करते हुए इन लोगों ने अपने परिवार का भरण-पोषण भिक्षा वृत्ति पर ही सीमित रखा।

न कोई जमीन न कोई व्यवसाय, बस लक्ष्मी की प्रत्येक घर में स्थापना ही आज से एक या दो पीढ़ी तक श्रीमाली ब्राह्मणों का कर्म रहा है। आज से 100 वर्ष पूर्व समय कुछ और था, आवश्यकताएँ कुछ और थीं इसीलिए दरिद्रता जैसे शब्द का ब्राह्मण वृत्ति पर चलने वाले लोगों के लिए इस्तेमाल नहीं किया जा सकता परन्तु पिछले 100 वर्षों में समय ने तेज करवट बदली। देखते ही देखते सारा विश्व युद्धरत हो गया दो-दो विश्वयुद्ध पिछले सौ वर्षों में सम्पन्न हुए। आर्य भूमि पिछले 500 वर्षों में गुलामी की जंजीरों में जकड़ी रहीं। इस्लाम ने सनातन धर्म को खण्डित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी और रही सही कसर ईसाइयों ने पूरी कर दी। ये दोनों धर्म एक ईश्वरवाद पर चलते हैं। इनके लिए सबसे बड़ी मुसीबत सनातन धर्म का बहुआयामी होना था। अंग्रेज इस विश्व के सबसे कुटिल प्राणी हैं। इस्लाम ने तो सिर्फ तलवार की नोंक पर धर्म परिवर्तन करवाया परन्तु ईसाइयों ने जोर जबर्दस्ती के अलावा कुटिल से कुटिल, दुष्टता से दुष्टता पूर्वक नीति अपनाकर सारे विश्व में हाहाकार मचा दी है। सब तरफ ईसाई मिशनरियों का जाल फैल गया लोगों को भ्रमित कर धर्म परिवर्तन कराने लगे। इस षडयंत्र से न तो सनातन धर्म बच सका न ही इस्लाम और अन्य धर्म। फिर कुटिल अंग्रेजों ने देश का विभाजन कर दिया। भयानक मारकाट मची। मेरे गुरु निखिलेश्वरानंद जी ने स्वयं कहा है कि जब मैं अपने पैतृक ग्राम से राजस्थान आया तो मेरे पाँव



के नीचे मानव रक्त और लाशें ही लाशें दिखाई पड़ रही थीं अंग्रेज परोक्ष रूप से तो चले गये परन्तु उन्होंने अपने अपरोक्ष दलाल और कुकर्म सहयोगी भारत में स्थापित कर दिए। उनका एकमात्र लक्ष्य है संचार माध्यमों, पत्र पत्रिकाओं इत्यादि के द्वारा आर्य संस्कृति, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, सिक्ख धर्म एवं अन्य सनातन धर्मों के पंथों को गाली देना, दुष्प्रचार करना ऊट-पटांग एवं कपटपूर्ण

लेखन के द्वारा भारत की प्राच्य विद्या को घृणित रूप में प्रचारित करना। इसके लिए उन्होंने भारत में ऐसे अनेकों लोगों को चुना जो कि पैसे की खातिर रामायण, महाभारत, गीता एवं अन्य ऋषि-मुनियों इत्यादियों को गाली दे सकें। आजाद भारत में तथाकथित सरकारी नौकरों के रूप में अपने आपको प्रगतिशील कहने वालों की एक फौज खड़ी कर दी। आज भी आप प्रत्येक घर में पायेंगे कि 1930 से लेकर 1950 तक के बीच जन्में

व्यक्ति भारत की संस्कृति को गाली देते हुए मिलेंगे। यह सब इसलिए हुआ कि इन्होंने अपनी युवावस्था में अंग्रेजों द्वारा षडयंत्र पूर्वक निकलवाई गई अनेकों प्रकार की पत्र-पत्रिकाओं को अपने मानस में आत्मसात कर लिया है। इनमें से कुछ सरिता, मुक्ता, धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान इत्यादि-इत्यादि रही हैं। इन पत्रिकाओं ने केवल सेक्स, कामुक कहानियाँ और उपभोक्तावाद भारत के युवा मस्तिष्कों पर लादा। दो पीढ़ियाँ पूरी तरह बर्बाद कर दी। इन्होंने तुलसी को गाली दी, विवेकानंद और रामकृष्ण को अपशब्द कहे, आर्य ऋषियों को गौ मांस भक्षक बताया, गीता के खिलाफ एक आंदोलन खड़ा किया। राम और कृष्ण के साथ-साथ सभी भारतीय देवियों का चरित्र हनन किया। बाबुओं की भारतीय जमात ने इन गद्दारों का पूरा-पूरा साथ दिया। 1950 से 1960 के बीच तो प्रत्येक भारतीय घर में लगभग पूजा-पाठ, अनुष्ठान इत्यादि एक तरह से रुक से गये। षडयंत्र कारियों ने अपना काम बखूबी किया। इसी बीच कुछ महापुरुष पुनः उदित हुए युद्ध के लिए।

उनमें से प्रमुख डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी, आचार्य श्री राम शर्मा जी एवं गीता प्रेस के संपादक हनुमान प्रसाद पोद्दार इत्यादि हैं। निखिलेश्वरानंद जी ने अपना जीवन अत्यंत ही निर्धनता से शुरू किया। उन्होंने दिव्य साधनाएँ की, सभी दुर्गम एवं गुप्त सिद्ध स्थानों पर यात्राएँ की, तिब्बत भी गये, हिमालय के दुर्गम स्थानों की खोज की और फिर शक्तिवान हो युद्ध कि लिए तत्पर हुए इन कुकर्मियों से। पैसा तो पास था नहीं। प्राच्य विद्याएँ इतनी ज्यादा दुष्प्रचारित कर दी गई थीं कि ज्योतिषी एवं ब्राह्मण भूखे मरने लगे थे। वे एक-एक गाँव, एक-एक शहर में गये। खटमलों से भरे हुए होटलों में रहे। ज्योतिष विद्या एवं तंत्र विद्या से लाखों लोगों को राहत पहुँचाई। अनेकों घरों में सात्विकता का वातावरण निर्मित किया। एक बात ध्यान से समझ लें उनका युद्ध उन लोगों से था जिन्हें कि अथाह पैसा पाश्चात्य व देश ईसाई एक विशेष मिशन के लिए दे रहे थे और वह था भारत की सभ्यता को खण्डित करने का। लक्ष्मी की आवश्यकता युद्ध में अत्यधिक है। विशेषकर इस युग में तो लक्ष्मी के बिना युद्ध किया ही नहीं जा सकता। युग के हिसाब से उन्होंने लक्ष्मी भी एकत्रित की जो उनके लिए जरूरी थी अन्यथा युद्ध में पराजय हो जाती। अनेकों किताबें उन्होंने लिखी ज्योतिष, कालज्ञान, तंत्र विद्या, पंचांगुली साधना से लेकर हमारे धर्म की प्रत्येक प्राच्य विद्या पर विस्तृत रूप से। उनकी प्रकाण्डता, तंत्र दक्षता, मंत्र दक्षता एवं सिद्धियों और ज्ञान का कोई सानी नहीं है। उनके आराध्य आदि गुरु शंकराचार्य जी थे। शंकराचार्य ने भी पुनः सनातन धर्म को महिमा मण्डित किया था। उनके इस अथक प्रयास से विशेषकर ईसाइयों द्वारा प्रायोजित दिल्ली प्रेस की पत्रिकाएँ एवं उनके दलाल उनकी जान के दुश्मन बन गये। सबने एक स्वर में पुनः निखिलेश्वरानंद जी के साथ-साथ आचार्य श्रीराम शर्मा जी एवं गीता प्रेस इत्यादि के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया। कुत्सित एवं कुकर्म मस्तिष्कों की एक पूरी फौज इन लोगों के खिलाफ युद्धरत हो गयी। घोर युद्ध बीस वर्ष तक चलता रहा। दुष्टों ने कोई भी मौका नहीं छोड़ा उन्हें अपमानित और बदनाम करने का। वे जहर पीते रहे। उन्हें समझ पाना बड़ा मुश्किल है। जैसे-तैसे संस्था खड़ी की कुछ अच्छे शिष्य भी मिले परन्तु उन्हें उनकी योग्यता के अनुरूप उनके जीवन के स्वर्णिम काल में कभी भी अपनी बात कहने का मंच प्राप्त नहीं हो पाया। जिस व्यक्ति ने अपनी दम पर पुनः लाखों समर्थ पुत्र पैदा कर लिए किन्तु वह कुछ

कुकर्मी एवं पाखण्डी लोगों को भी अपने सीधेपन के कारण शिष्य बना बैठे। इन्हीं में से एक गुरु सेवक नाम का व्यक्ति है जो कि षडयंत्र पूर्वक संस्था का अध्यक्ष बन बैठा। जीवन के अंत काल तक उन्हें विष भरे कांटे के समान कष्ट देता रहा। इसके साथ उनके परिवार के कुछ विद्रोही भी हैं। मुझे आज भी याद है 23 जनवरी 1993 का वह दिन जब वे भोपाल के एक छोटे से हाल में प्रवचन एवं दीक्षाएँ प्रदान कर रहे थे। मेरी मुलाकात प्रत्यक्ष रूप से सर्वप्रथम यहीं पर हुई। वहाँ पर मुश्किल से 200 लोग थे। वे बोले मेरे जीवन का यह संध्याकाल चल रहा है, मेरी किस्मत तो विधाता ने लोहे की कलम से लिखी है। सारा जीवन संघर्ष में बीत गया परन्तु तुम लोगों की किस्मत मैंने सोने की कलम से लिख दी है। 1998 तक उनके जीवन का स्वर्णिम काल हुआ। भोपाल में वे राष्ट्रपति से सम्मानित हुए। रक्षा मंत्री उनके चरणों में झुके। अनेकों राज्यपालों ने दीक्षा ग्रहण की। उनके अथक प्रयास की सभी जगह अंत में सराहना हुई। सारे देश में आध्यात्मिक साधकों का एक अति श्रेष्ठ वर्ग स्थापित हुआ। डॉ. बेनर्जी, कनक पाण्डे, डॉ. साधना जैसे अनगिनत उच्च श्रेणी के शिष्य उन्हें प्राप्त हुए परन्तु परिवार और कुछ षडयंत्रकारी एवं पैसे के लालची लोगों ने संस्था पर कब्जा जमा लिया। संस्था अपने पथ से भटक गई, लक्ष्यविहीन हो गयी। विशेषकर उनके शरीर त्यागने के पश्चात तो अब उनके नाम पर लूट-पाट एवं दुकानदारी चलने लगी है। गुरु सेवक के नेतृत्व में। सभी जो कल तक उनके प्रिय थे विस्मृत कर दिए गये। यही तो बिडम्बना है। खैर ये तो जग की रीत है। आज जिन पत्रिकाओं ने उन्हें अपमानित किया उनमें से अधिकांशतः बंद हो चुकी हैं, कूड़े के ढेर में डाल दी गयी हैं। इन दुष्टों के घर में विक्षत बालकों ने जन्म लिया। अनेकों लोगों की मौत कैंसर, दुर्घटना इत्यादि से हुई। अनेकों तथाकथित सम्पादकों ने आत्महत्या की। कुछ टूटे-फूटे और अधमरे आज भी लकवा ग्रस्त पड़े हुए हैं। पाप तो फूटता ही है आगे और फूटेगा। वे लाखों सच्चे शिष्य पैदा कर गये हैं उन्हीं में से कुछ पुनः उनके द्वारा चलाये गये धर्म रक्षा के ध्येय को निश्चित ही कायम रखेंगे। इन सबके साथ गुरु की शक्ति है। ये भी अपने गुरु के समान सत्य के लिए युद्ध करेंगे। जीत उसी की होती है जो सत्य के लिए लड़ता है। यही अपने गुरु का स्मारक बनायेंगे। उनकी आज्ञाओं का पालन करेंगे एवं एक सच्चे शिष्य का कर्तव्य निर्वाह करेंगे। शरीर बदलते रहते हैं युद्ध चलता रहता है।

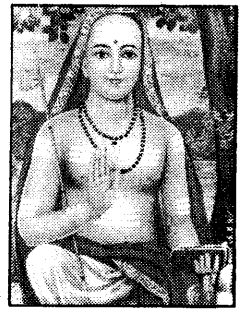
श्री अरविन्द जी

शिव उवाच

सत्यमेव जयते

भारत बड़ी उठा पटक के बाद ले देकर दो हजार वर्षों की गुलामी तोड़ते हुए 1947 में आजाद हुआ। यह धर्म भूमि है। अध्यात्म के अनुसंधान यहां अनंतकाल से होते चले आ रहे हैं। योद्धाओं और रण बाकुरों की भूमि है भारत। भारत का संविधान जल्दी बाजी में बना इसीलिए उस पर पाश्चात्य जगत का प्रभाव अत्यधिक दिखाई पड़ता है। एक तरह से वह कार्बन कापी है इंग्लैण्ड के संविधान की इसलिये पिछले 50 वर्षों में उसमें हजारों बार परिवर्तन करना पड़ गया। अब तो वह बस भगवान ही जाने किस प्रकार का ढाँचा बनकर रह गया है फिर भी एक अच्छा कार्य अध्यात्म के बीज मानस में होने के कारण शासन करने वालों ने कर ही दिया। उन्होंने राष्ट्रीय चिह्न अशोक की लाट पर बने हुए तीन सिंहों के रूप में लिया और उसके नीचे अंकित कर दिया सत्य मेव जयते अर्थात् सत्य की ही जीत होती है। सच बात है संविधान कैसा भी हो, प्रशासन कितना भी निकम्मा और भ्रष्ट हो, सब तरफ चोर और उच्चकों का साम्राज्य हो फिर भी भारत में सत्य तो चलता ही है। आम जनता अब भी सच्ची और भोली है। इनके सामने कोई नहीं टिक पाता। सत्य की सामूहिक शक्ति ने ही इस देश को पूरे विश्व में अजूबा बना दिया है। यहां सत्य ही चलता है। सत्य ही ईश्वर है, ईश्वर ही सुन्दर है और सुन्दर ही शिव है बाकी सब बदसूरत, बदरंग। इस अंक से पहले मैने शक्ति उपासनांक निकाला था। मुख्य पृष्ठ पर समुद्र मंथन का ब्रह्माण्डीय दृश्य उपस्थित था। मंथन की रस्साकसी कर्म का प्रतीक है। कर्म के मंथन से ही

लक्ष्मी का प्राकट्य होता है परन्तु लक्ष्मी के साथ कुछ और भी प्रकट होता है। और वह है विष। लक्ष्मी और विष साथ-साथ उत्पन्न होते हैं। आप प्रतिदिन कर्म करते हैं लक्ष्मी के विभिन्न आयामों की प्राप्ति के लिए। इन कर्मों से थक



जाते हैं, तनाव ग्रस्त हो जाते हैं, चिड़-चिड़े भी हो जाते हैं इत्यादि-इत्यादि यह सब विष का प्रतीक है। प्रत्येक कर्म लक्ष्मी की आराधना है। कर्म की प्रवृत्ति के अनुसार विष की मात्रा बढ़ती-घटती है। सात्विक कर्मों में विष नगण्य होता है फिर भी होता तो है। राजसिक और तामसिक कर्म की तो बात ही क्या है यहाँ पर तो जमकर विष उत्पन्न होगा। कौन पियेगा इस विष को? इस विष को पियेंगे शंकर। तभी तो यह जग चलेगा, आपका जीवन चलेगा इसीलिए शिव सबसे सुन्दर है। मैं भी पारदेश्वर बनाता हूँ, साधकों को देता हूँ उनके विष का हरण करने के लिए। विष पीना ही मेरा कार्य है। शिव की उपसाना ही मेरा धर्म है। शिव के अलावा कुछ भी नहीं। विष पीने से फुरसत ही कहाँ मिलती है। चन्द्रमा बादलों में ढका दिखाई देता है। चन्द्रमा कभी बादलों में नहीं ढकता। चन्द्रमा तो बादल विहीन है। उसके पास तो बादल हैं ही नहीं। उसने बादलों को धारण ही नहीं किया है। बादल तो पृथ्वी का मामला है। वह उससे अच्छादित है यही है माया। इसी माया में रहकर भ्रम होता है। हम गलत

देखते हैं, असत्य देखते हैं। सत्य और असत्य में यही फर्क है। जो देख रहे हैं वह सत्य है ऐसा कभी मत सोचो नहीं तो असत्य मेव जयते हो जायेगा। दृष्टि भ्रम महाभ्रम है। माया के पर्दों को हटाओ। माया के पर्दे क्या हटाओगे? माया तो चलती ही रहती है। सम्यक भाव से सत्य को समझो। बादल आते जाते रहेंगे परवाह मत करो। आकाश में तारे हैं निरंतर चमक रहे हैं। आप जहाँ पर रहते हैं हो सकता है वहाँ पर आकाश मेघमय हो गया हो इसका मतलब यह नहीं है कि तारे सो गये हैं। सूर्य के प्रकाश से भी मायाग्रस्त मत होना। सूर्य के प्रकाश में हो सकता है चन्द्र प्रकाश और ऋषि मण्डल के तारों का प्रकाश तुम देख पाने में समर्थ न हो परन्तु सत्य तो यह है कि वे भी साथ-साथ प्रकाशवान हैं। कुछ घण्टे ठहर जाओ जैसे ही सूर्य अस्त होगा सच्चाई सामने आ जायेगी। समय की सीमा में अपने मस्तिष्क की क्षमताओं को व्यर्थ में बर्बाद मत करो। सत्य समय के द्वारा आबद्ध नहीं है। आबद्ध तो हम हैं समय में। हमें समय लगता है सत्य को स्वीकारने में। सत्य तो सदैव हमारे सबसे करीब रहने वाली स्थिति है। मृत्यु तो सत्य है आज स्वीकारो, कल स्वीकारो या मत स्वीकारो। मैं कहना यह चाह रहा हूँ कि सत्य की अनुभूति व्यक्ति विशेष का विषय है। यह हृदय की अनुभूति है। मनुष्य मनुष्य को सत्य नहीं बता सकता। सत्य डण्डे के जोर पर स्वीकार नहीं कराया जा सकता। इसके लिए बड़ा ही मजबूत ब्रह्माण्डीय मस्तिष्क चाहिए। एक गुरु का कार्य शिष्य को पीट-पीटकर ब्रह्माण्डीय मानव के रूप में ढाल देना होता है। बचपन की एक घटना सुनाता हूँ। मुझे नहाने से बहुत चिढ़ थी पिताजी सुबह जबरन सारे कपड़े उतारकर जबर्दस्ती स्नानग्रह में ले जाते। ठण्डा पानी डाल देते। उस जमाने में लाइफबाय साबुन चलता था। जबरन बेदर्दी से सारे शरीर को घिस देते। मुझे खूब गुस्सा आता फिर अनेकों लोटे पानी ऊपर डाला जाता तत्पश्चात् टावेल से रगड़-रगड़कर सारे शरीर को पोंछते। प्रतिदिन की यह घटना मेरे लिए बहुत ही कष्टदायक और गुस्से का कारण होती थी। मन ही मन मैं अपने पिता पर बहुत क्रोध करता। वे अपना कर्म करते और मैं अपना कर्म करता पर अब

सोचता हूँ तो लगता है कि वे ठीक थे मैं गलत। अगर बचपन से ही मलेच्छ रहने की आदत पड़ जाती तो आज भी वैसा ही होता। सत्य का भान देर से होता है। मलेच्छ का तात्पर्य उन लोगों से है जो मल निष्कासित करने से भयभीत होते हैं सारी जिन्दगी सड़े-गले सिद्धांत को दिमाग में बसाकर रखते हैं मल के समान। समयानुसार नहीं बदलते हैं। किसी मूर्ख के द्वारा दिए गये प्रवचन और भयभीत करने वाले उपदेशों से सम्पूर्ण जीवन भयग्रस्त रहकर जीते हैं। जो भय से मुक्त होगा वही सत्य को समझेगा। भय सबसे बड़ा विष और मल है। किसी से मत डरो अगर गुरु भी असत्य के मार्ग पर जाता है तो फिर भी तुम सत्य के मार्ग पर चलो। गुरु भी कायर और असत्यवादी हो सकता है। उससे भी असंख्य गल्लियाँ हो सकती हैं। मैं भी कभी असत्य के मार्ग पर चला, मोहग्रस्त हो जाऊँ तो मुझे भी द्रोण समझते हुए, भीष्म समझते हुए, धृतराष्ट्र समझते हुए मेरा भी सिर काट देना। यह सभी शिष्यों को आज्ञा है। सत्य से ऊपर कोई भी नहीं है। द्रोण, कृपाचार्य और भीष्म तीनों गुरु थे परन्तु परिस्थितिवश दुर्योधन के प्रति क्रियाशील होने के लिए बाध्य हो गये थे इसलिए महाभारत के युद्ध से पूर्व जब कुरुक्षेत्र में पाँचों पाण्डवों इनसे युद्ध की आज्ञा लेने पहुँचे तो तीनों ने एक स्वर में पाण्डवों को आशीर्वाद एवं विजयी होने का वरदान दिया। कम से कम इन तीनों में इतनी चेतना तो थी कि इन्होंने गुरुवाद की लाज रखी। निष्काम भाव से कर्म सम्पादित करने की चेष्टा ने ही इन्हें उत्तम योद्धा बनाया। युद्ध के क्षेत्र से ये भागे नहीं अर्जुन के हाथों मारे गये। शिष्य के हाथ गुरुओं का वध हुआ। सत्य शिष्य और गुरु से भी ऊपर है, सत्य किसी भी सम्बन्ध में नहीं बंधा हुआ है। सम्बन्ध माया का प्रतीक है। सम्बन्ध बनते-बिगड़ते रहते हैं, परम्पराएं टूटती-बनती रहती हैं, मनुष्य हारता जीतता रहता है परन्तु सत्य मात्र विजयी होता है। विजयी ही सत्यलोक में पहुँचते हैं। सत्य लोक भी मौजूद है। सत्य की ही शक्ति सर्वोत्तम है। सत्य ही कालजयी है सत्य का ही सर्वाधिकार है सत्यगामी बनें आप यही मेरा आशीर्वाद है, यही मेरा संदेश है। सत्य के मार्ग पर ही युद्ध करना श्रेयष्कर है।

माँ पारद कालिका पूजन

पारद विज्ञान महाविज्ञान। पारे को स्तंभित कर महाकाली की प्रतिमा में ढालना अपने आप में विकट कार्य है मैंने अपने जीवन में पारद काली के निर्माण का संकल्प लिया। लगभग 18 बार के प्रयत्नों के पश्चात् ही पारद काली का निर्माण सम्भव हो पाया। पारद काली के निर्माण की अंतःप्रेरणा मुझे सूक्ष्म रूप से अपने गुरु के द्वारा ही प्राप्त हुई उन्होंने अपने जीवन में मुश्किल से 8 पारद काली प्रतिमा का निर्माण किया होगा। पारद काली आम साधकों के लिए नहीं है। माँ पारद काली अत्यंत ही तीक्ष्ण स्वेच्छाचारिणी हैं। लाखों करोड़ों में से जिनके ऊपर उनकी अटूट कृपा एवं गुरु आशीर्वाद होता है वही पारद काली का स्थापत्य कर पाते हैं इनके तो दर्शन भी दुर्लभ हैं। यह मेरा सौभाग्य और गुरु कृपा है कि मुझे नवरात्रि में पारद काली प्राप्त हुई। इनकी आवश्यकता भी अत्यधिक थी। अध्यात्म के मार्ग में अनेकों गुप्त शत्रु होते हैं सभी जोर आजमाइश करते हैं। आता जाता कुछ भी नहीं है फिर भी मंत्र फूंकते हैं। पारद काली अपने अंदर दस महाविद्याओं की शक्ति समाहित किए हुए हैं। नवरात्रि में विजय दशमी के दिन साधना सिद्धि विज्ञान पत्रिका ने पारद काली पूजन का आयोजन किया था इस पूजन का उद्देश्य समस्त आंतरिक एवं बाह्य शत्रुओं के सम्पूर्ण नाश का था इसके परिणाम शीघ्र ही देखने को मिले सबके सब शत्रु, तिरछी नजर रखने वाले कालिकास्त्र के अभेद प्रहार पीड़ित, उच्चाटित, मोहित, स्तम्भित और परास्त हुए पड़े हैं।

सर्वप्रथम प्राण प्रतिष्ठित माँ पारद काली की मूर्ति को दक्षिण की तरफ मुख किए हुए स्थापित करें।

संकल्प

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्राह्मणो द्वितीये

पराद्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमंवंतरे अष्टविंशतित मे कलियुगे कलिप्रथम चरणे भार तव षे'.....स्थाने श्रीशालिवाहनशके....संवत्सरेअयने.....ऋतौ.....मासे.....पक्षे..... तिथौ.....वासरे.....गोत्र.....ममात्मनः



श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफल प्राप्त्यर्थं श्रीदक्षिणकालिका देवीप्रीत्यर्थं पूजनमहं करिष्ये।

सर्वप्रथम हाथ में जल, अक्षत एवं पुष्प लेकर उक्त संकल्प करें। संकल्प में रिक्त जगहों पर मास, पक्ष व स्थान इत्यादि नामों का उच्चारण स्थिति के अनुसार करना चाहिए। मंत्रपूर्ण करने के बाद हाथ की समस्त सामग्री गिरा दें।

प्राण-प्रतिष्ठा

माँ कालिका की प्राण-प्रतिष्ठा करने के लिए निम्न मंत्र पढ़ें-

आं ह्रीं क्रीं श्रीं स्वाहा। दक्षिणकाली देवतायाः प्राणा इह प्राणाः आं ह्रीं क्रीं श्रीं स्वाहा। दक्षिण काली देवतायाः जीव इहस्थितः आं ह्रीं क्रीं स्वाहा। दक्षिण काली देवतायाः वांग मनो नयन घ्राण श्रोत्र त्वक् प्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

अब साधक हाथ जोड़कर निम्न श्लोक का पाठ करें-

दक्षिणे कालि! स्वागत ते सुस्वागतमिदं तव।

आसनं चेदमत्र त्वयाऽऽयस्तां परमेश्वरि॥

इसके बाद विशेषार्घ्य देते हुए मूलमंत्र से इष्टदेवी को प्रोक्षित करें। फिर एक रक्तपुष्प लेकर यंत्रराज पर देवता के षडंगों की भावना करते हुए निम्नलिखित मंत्र द्वारा



रचयति सहसा यच्चित्रमेतत्प्रपंचं प्रशमयति च तद्वत्केनचित्कौतुकेन ।
अविदितमपरस्तचंडमुंडादि नानादनुज दलन दक्षं शर्वसर्वस्वमव्यात् ॥

सरलीकरण करें-

ॐ हां हृदयाय नमः।
हैं कवचाय हुम्।
हीं शिरसे स्वाहा।
हैं नेत्रत्रयाय वौषट्।
हूँ शिखायै वषट्।
हं: अस्त्राय फट्।

अब भगवती काली की षोडशोपचार विधि से निम्न प्रकार पूजा करें।

षोडशोपचार पूजन विधि

जिस पूजन में कम से कम सोलह उपचार किए जाते हैं, उसे षोडशोपचार पूजन कहते हैं। इनके अनेक मंत्र बताए गए हैं। विभिन्न साधना कुलों में भिन्न-भिन्न मंत्रों का प्रयोग किया जाता है। यहां साधकों के हितार्थ दक्षिण कालिका सिद्धि का विधान सविस्तार दिया जा रहा है। यदि साधक चाहें तो विभिन्न श्लोकों को न पढ़कर मूलमंत्र से स्वाहा शब्द हटाकर अन्त में निवेदयामि नमः जोड़कर समस्त सामग्री अर्पित कर सकते हैं। षोडशोपचार पूजन इस प्रकार किए जाते हैं-

पाद्यम्

सर्वप्रथम स्थापित किए गए पाद्यपात्र से द्रव्य लेकर निम्नलिखित मंत्र द्वारा देवी के चरणों में समर्पित करें-

हीं श्रीं क्रीं परमेश्वरि स्वाहा।
इदं पाद्यं दक्षिण काल्यै नमः॥

अर्घ्यम्

अब इस मंत्र द्वारा अर्घ्यपात्र से द्रव्य लेकर मस्तक पर निवेदित करें-

हीं श्रीं क्रीं परमेश्वरि स्वाहा।
इदं अर्घ्यं दक्षिण काल्यै स्वाहा॥

आचमनम्

फिर द्रव्यपात्र से द्रव्य लेकर निम्न मंत्र द्वारा देवी को आचमनी प्रदान करें-

हीं श्रीं क्रीं परमेश्वरि स्वाहा।
इदं आचमनीयं दक्षिण काल्यै स्वाहा॥

सर्वांगे स्नानम्

अब निम्न मंत्र द्वारा कालिका को सर्वांग स्नान कराएं-

हीं श्रीं क्रीं परमेश्वरि स्वाहा।
इदं स्नानं दक्षिण काल्यै निवेदयामि॥

वस्त्रम्

सर्वांग स्नान के बाद उन्हें निम्न मंत्र से वस्त्र प्रदान करें-

हीं श्रीं क्रीं परमेश्वरि स्वाहा।
इदं वसनं दक्षिण काल्यै निवेदयामि॥

श्रृंगारम्

वस्त्र निवेदित करके माता को श्रृंगार सामग्री अर्पित करें-

हीं श्रीं क्रीं परमेश्वरि स्वाहा।
इदं आभूषणं दक्षिण काल्यै निवेदयामि॥

गंधम्

फिर निम्न मंत्र का पाठ करते हुए उन्हें सुगंधित द्रव्यादि प्रस्तुत करें-

हीं श्रीं क्रीं परमेश्वरि स्वाहा।
इदं गंधं दक्षिण काल्यै नमः॥

पुष्पम्

नीचे दिए गये मंत्र से माँ देवी को पुष्पांजलि प्रदान करें-

हीं श्रीं क्रीं परमेश्वरि स्वाहा।
इदं पुष्पं दक्षिण काल्यै निवेदयामि॥

धूपम्

अब निम्न मंत्र से धूप जलाकर कालिका को प्रदान करें-

हीं श्रीं क्रीं परमेश्वरि स्वाहा।
इदं धूपं दक्षिण काल्यै निवेदयामि॥

दीपम्

फिर दीप जलाकर निम्न मंत्र द्वारा कालीजी को अर्पण करें-

हीं श्रीं क्रीं परमेश्वरि स्वाहा।
इदं दीपं दक्षिण काल्यै निवेदयामि॥

नैवेद्यम्

धूप-दीप के पश्चात् मां को निम्न मंत्र द्वारा नैवेद्य प्रदान करें-

ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरि स्वाहा।
इदं नैवेद्यं दक्षिण काल्यै निवेदयामि॥

पुनराचमनम्

अब निम्न मंत्र द्वारा कालिका को पुनः आचमनी अर्पण करें-

ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरि स्वाहा।
इदं आचमनीयं दक्षिण काल्यै निवेदयामि॥

शुद्धोदकम्

इस मंत्र द्वारा मां काली को अमृत जल प्रदान करें-

ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरि स्वाहा।
इदं अमृतं दक्षिण काल्यै निवेदयामि॥

ताम्बूलम्

इसके बाद उन्हें ताम्बूल प्रदान करें। मंत्र निम्नवत है-

ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरि स्वाहा।
इदं ताम्बूलं दक्षिण काल्यै निवेदयामि॥

दर्पणम्

निम्न मंत्र द्वारा माता काली को दर्पण प्रस्तुत करें-

ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरि स्वाहा।
इदं दर्पणं दक्षिण काल्यै निवेदयामि॥

इसके अतिरिक्त साधक श्रृंगार प्रसाधन की अन्य सुलभ वस्तुएं यथा-कंघी, बिन्दी, चूड़ी, सिंदूर इत्यादि भी मां को समर्पित कर सकते हैं। इसके लिए निम्नलिखित श्लोक में 'अमुक' की जगह वस्तु का नाम लें। जैसे-

ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरि स्वाहा।
इदं 'अमुकं' दक्षिण काल्यै निवेदयामि॥

अब साधक अपने समक्ष घंटी रखकर निम्नलिखित मंत्र पढ़ें-

जय ध्वनि मंत्र मातः स्वाहा॥

फिर बाएं हाथ से घंटी बजाते हुए निवेदन की गई धूप उठा लें। उसे देवी की नासिका के पास ले जाकर मूलमंत्र से पाठ करके यंत्रराज के सामने एक पात्र

में स्थापित कर दें। तत्पश्चात् घंटी बजाते हुए दीपक उठाकर मूलमंत्र का पाठ करते हुए देवी के नेत्रों के पास दस बार घुमाएं तथा यंत्रराज के सम्मुख स्थापित कर दें। इसी प्रकार पानपात्र तथा अन्य वस्तुएं देवी की पूजा में प्रयुक्त करके उन सभी को यंत्रराज के पास स्थापित कर दें। अब साधक नैवेद्य उठाकर मूलमंत्र पढ़ते हुए यंत्रराज के पास स्थापित कर यह मंत्र पढ़ें।

परमं वारुणी कल्पं कोटि कल्पान्त कारिणी।
गृहाणशुद्धि सहितं देहि मे मोक्षमन्ययम्॥

इसके बाद साधक अपने सम्मुख एक त्रिकोण बनाकर यह पात्र स्थापित कर दें। फिर फट् शब्द से किसी स्वच्छ वस्त्र द्वारा नैवेद्य का प्रोक्षण(पोछें) तथा हूं से अवगुंठन करें। तत्पश्चात् वं से अमृतीकरण करके ऊपर हाथ रखकर मूलमंत्र का सात बार पाठ करें। इसके बाद निम्नलिखित पंक्तियां पढ़कर पञ्च मुद्राएं दिखाएं और देवी को नैवेद्य खिलाएं-

मूलं एतत्तु सिद्धान्नं सर्वोपकरणान्वितम्।
निवेदयामिष्ट देव्यै जुषाणेदं हविः शिवे॥

अब साधक अपने बाएं हाथ से प्रस्फुटित पद्माकृति नैवेद्य मुद्रा प्रदर्शित करते हुए मूलमंत्र का पाठ करें। इसके बाद पूर्ण कलश से जल लेकर देवी को पिलाएं। आचमनपात्र से जल लेकर आचमनी दें तथा श्री पात्र से द्रव्य लेकर तीन बार तर्पण करें। इसके बाद दोनों हाथों में पाँच गुलाब के लाल फूल लेकर निम्नलिखित मंत्र पढ़ते हुए देवी पर चढ़ा दें-

तव आवरण देवान् पूजयामि नमः।

षडंग पूजा

उपरोक्त पूजन विधान के बाद यंत्रराज के अग्रिकोण, नैऋत्यकोण, वायुकोण, ईशानकोण, समक्ष एवं पृष्ठ भाग अर्थात् छः दिशाओं में क्रमशः निम्नलिखित मंत्रों को पढ़ते हुए षडंग पूजा करें-

हां नमः।

हैं नमः।

ह्रीं नमः।

ह्रौं नमः।

हूं नमः।

ह्रूं नमः।

अब साधक गुरुओं का ध्यान करके उन्हें निम्नलिखित मंत्रों से श्रद्धापूर्वक नमस्कार करें-

ॐ गुरवे नमः।

ॐ परम गुरुवे नमः।

ॐ परापर गुरुवे नमः।

ॐ परमेष्ठि गुरुवे नमः।

इसके बाद साधक गुरुपात्र से द्रव्य लेकर निम्नलिखित मंत्रों से गुरुओं का तर्पण करें-

ॐ गुरुं तर्पयामि नमः।

ॐ परम गुरुं तर्पयामि नमः।

ॐ परापर गुरुं तर्पयामि नमः।

ॐ परमेष्ठि गुरुं तर्पयामि नमः।

अब साधक यंत्र में स्थित अष्टकमलों में अष्टमातृकाओं की एक-एक नारियल रखकर निम्नानुसार पूजा करें-

ॐ मंगलायै नमः।

ॐ विजयै नमः।

ॐ भद्रायै नमः।

ॐ अपराजितायै नमः।

ॐ नन्दिन्यै नमः।

ॐ नारसिंहायै नमः।

ॐ वैष्णवायै नमः।

इसके बाद इन्हीं कर्णिकाओं के अग्रभाग में अष्टभैरवों की पूजा करें-

ॐ असितांग भैरवाय नमः।

ॐ रुरुवे भैरवाय नमः।

ॐ चण्डाय भैरवाय नमः।

ॐ क्रोधोन्मत्त भैरवाय नमः।

ॐ भयंकराय भैरवाय नमः।

ॐ कपालिने भैरवाय नमः।

ॐ भीषणाय भैरवाय नमः।

ॐ संहारिणे भैरवाय नमः।

फिर साधक यंत्रराज की भूपुर दसों दिशाओं में क्रमशः दस दिक्पालों का पुष्प रखते हुए पूजन करें-

ॐ इन्द्रं पूजयामि नमः।

तदोपरांत साधक इसके बहिर्भाग में दिक्पालों की पूजा करें। पूजन के पश्चात् निम्नलिखित मंत्र से तर्पण करें-

ॐ इन्द्रं तर्पयामि नमः।

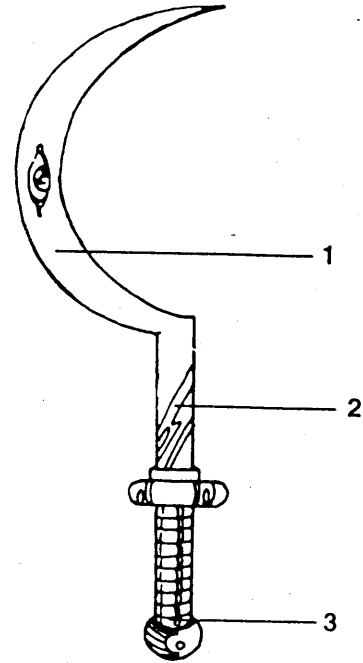
इसके बाद कालिका देवी की अर्चना आदि करें तथा उन्हें प्रसन्न करने के लिए बलि प्रदान करें-

बलि विधान

साधारणतया देवी को नारियल, नीबू इत्यादि की बलि दी जाती है इसके लिए सर्वप्रथम बलि में प्रयुक्त होने वाली सामग्री को देवी के सम्मुख लाकर अर्घ्यपात्र के द्रव्य से उसका प्रोक्षण करें तथा धेनु मुद्रा दिखाएं। इसके बाद निम्नलिखित पशु गायत्री मंत्र से धूप-दीप दिखाकर उसकी पूजा करें-

पशु पाशाय विद्महे विश्व कर्मणे धीमहि तन्नो जीवः प्रचोदयात।

अब देवी का खड्ग यानी चन्द्रहास लेकर उसकी पूजा करें। कालिका को चन्द्रहास खड्ग बहुत ही प्रिय है। इसका चित्र नीचे दिया जा रहा है।



खड्ग में नंबर 1 अंकित स्थान पर निम्नलिखित मंत्र से ब्रह्मा तथा सरस्वती की पूजा करें-

क्रीं वागीश्वरि ब्रह्माभ्यां नमः

फिर नंबर 2 स्थान पर निम्न मंत्र द्वारा लक्ष्मी-नारायण

की पूजा करें-

क्रीं लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः।

तदोपरांत नंबर 3 स्थान पर निम्न मंत्र द्वारा शिवशक्ति की पूजा करें-

क्रीं उमामहेश्वरौभ्यां नमः।

अब निम्न मंत्र उच्चारित करते हुए सामग्री भूमि पर चढ़ा दें।

ब्रह्मा विष्णु शिव शक्तियुताय खड्गाय नमः।

फिर निम्नलिखित मंत्र पढ़ते हुए सामग्री की बलि चढ़ा दें।

यथोक्तेन विधानेन तुभ्यमस्तुसमर्पितम्।

इसका ताजा रस निम्नलिखित मंत्र पढ़ते हुए बटुक भैरव को प्रदान करें-

एष कवोष्ण रुधिर बलिः।

ॐ बटुकेभ्यो नमः।

इसके बाद साधक को हवन करना चाहिए।

हवन विधि

प्रारम्भ में लिखित सामग्री तथा हवन सामग्री को मिलाकर देशी घी और शर्करा के साथ उसे अपने दाईं तरफ रखें। फिर बालू पर चार हाथ लम्बा तथा चार हाथ चौड़ा चतुष्कोण मण्डल बना लें। इस मण्डल को मूलमंत्र पढ़कर अभिमंत्रित तथा फट् से ताटुन करें। अब क्रीं शब्द से अवगुण्ठन करके मंत्र मण्डल की रचना कर पूजा आरम्भ करें-

ॐ स्थण्डिलाय नमः।

अब मण्डल के ऊपर तीन पूर्वाग्र तथा तीन उत्तराग्र रेखाएं बनाकर, पूर्वाग्र रेखाओं पर मुकुन्द, ईश, पुरन्दर और उत्तराग्र रेखाओं पर ब्रह्मा, वैवस्वत एवं इन्द्र की पूजा करें। इसके बाद मण्डल के मध्य में अधोमुखी त्रिकोण बनाकर इसके गर्भ में हसौ लिख दें। त्रिकोण के ऊपर षट्कोण बनाएं। तदोपरांत इसके बाहर वृत्त बनाकर उसके बाह्य भाग में अष्ट कमलदल का निर्माण करें। फिर भूपुर बनाकर पूर्वोक्त चित्रानुसार दक्षिण कालिका यंत्र को अंतिम रूप दें। जब यह यंत्र बन जाए तो मूल मंत्र पढ़कर इसमें पुष्पांजलि अर्पित करें। इसके बाद ॐ कहकर हवन की सामग्री का प्रोक्षण करके निम्न मंत्र से आधारशक्ति की पूजा करें।

ह्रीं आधार शक्त्यादिभ्यो नमः।

अब यंत्र के कोणों में क्रमशः निम्नलिखित देवों की पूजा करें-

अग्रिकोण में धर्म की, नैऋत्यकोण में ज्ञान की, वायुकोण में वैराग्य की तथा ईशानकोण में ऐश्वर्य की पूजा करें। इसी प्रकार सभी दिशाओं- पूर्व में अधर्म की, दक्षिण में अज्ञान की, पश्चिम में अवरोग्य की एवं उत्तर में अनैश्वर्य की पूजा करें।

इसके पश्चात् साधक यंत्र के मध्य अनन्त में, पद्म कला सहित सूर्य तथा सोम मण्डलों की पूजा करें। इनके मंत्र पहले दिए जा चुके हैं। तत्पश्चात् यंत्र की अग्रि जिह्वाओं की पूजा निम्नलिखित मंत्रों से करें-

ॐ रं पीतायै नमः।

ॐ रं श्वेतायै नमः।

ॐ रं कृष्णायै नमः।

ॐ रं धूम्रायै नमः।

ॐ रं तीव्रायै नमः।

ॐ रं स्फुलिङ्गिन्यै नमः।

ॐ रं रुचिरायै नमः।

ॐ रं ज्वालिन्यै नमः।

तदोपरांत निम्नलिखित मंत्र से अग्रि के आसन की पूजा करें-

रं बह्वेरासाय नमः।

अब साधक ऋतु स्नाता-नील नलिनी लोचना वागीश्वरी देवी का ध्यान करें। फिर निम्नलिखित मंत्र से इनकी पूजा करें-

रं वागीश्वरी ब्रह्माणी ह्रीं नमः।

अब साधक वह्नि पीठ की पूजा निम्न मंत्र से करें-

रं वह्नेर्योग पीठाय नमः।

वह्नि पीठ की चारों दिशाओं में क्रमशः निम्नलिखित मंत्रों से पूजा करें-

ॐ वामायै नमः।

ॐ ज्येष्ठायै नमः।

ॐ रौद्रियै नमः।

ॐ अम्बिकायै नमः।

फिर मण्डल की पूजा निम्नलिखित मंत्र से करें-

अमुक्या देवतायाः स्थंडिलाय नमः।

तत्पश्चात् साधक गुरुदेव का ध्यान करते हुए रं कहकर अग्नि उठा लें तथा निम्नलिखित मंत्र पढ़कर थोड़ी भोज्य सामग्री दक्षिण दिशा में डाल दें-

मूलं हूं क्रव्यादेव्यो स्वाहा।

अब फट् से अग्नि का वीक्षण तथा हूं से अवगुण्ठन करें। फिर धेनु मुद्रा दिखाकर अग्नि लिए हुए हवनकुण्ड की परिक्रमा करें तथा अपनी तरफ मुख किए इसे त्रिकोण पर स्थापित कर दें। इसके बाद निम्न मंत्र से वह्नि मूर्ति की पूजा करें-

ह्रीं वह्नि मूर्तये नमः।

तदोपरांत निम्नलिखित वह्नि चेतन की पूजा करें।

रं वह्नि चेतनाय नमः।

अब निम्नलिखित मंत्र से हवनकुण्ड में अग्नि प्रज्वलित करें-

ॐ चित्पिङ्गल हन हन, दह दह, पच पच सर्वज्ञापय स्वाहा।

फिर निम्नलिखित मंत्र से हाथ जोड़कर अग्निदेव की वन्दना करें-

अग्निं प्रज्वलितं वंदे, जातवेदं हुताशनं।

सुवर्ण वर्णं ममलं समृद्धिं सर्वतोमुखम्॥

अब कुशा से मण्डल को आच्छादित करें तथा निम्न मंत्रों से अभ्यर्चना करें-

ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरी स्वाहा।

क्रीं आद्यायै कालिकाय नमः।

रं वह्नि याय नमः।

ॐ वैश्वानर! जातवेद! इहावहावह लोहिताक्ष!

सर्वकर्माणि संसाधय स्वाहा।

इसके बाद निम्नलिखित मंत्रों द्वारा पूजा करें-

ॐ वह्नेर्हिरण्यादि सप्तजिह्वेभ्यो नमः।

अब निम्नलिखित मंत्र से हृदयादि वह्नि षडंग करें-

ॐ सहस्रार्धषे हृदयाय नमः।

फिर नीचे दिए गए मंत्र से वह्नि षडंग की पूजा करें-

ॐ वह्नेः षडंगेभ्यो नमः।

अब वह्नि की अष्ट मूर्तियों की पूजा पूर्वोक्त मंत्रों से करें। इससे पूर्व ब्राह्मी आदि मंत्र आ चुके हैं, उनसे भी पूजा करें। इसके बाद पद्मादि अष्ट निधियों की पूजा कुशापत्र लेकर घृत में स्थापित कर दें। इस घृत में दाईं तरफ इडा, बाईं तरफ पिंगला तथा बीच में सुषुम्ना का ध्यान करें।

अब साधक दाईं तरफ से घी लेकर नीचे दिए गए मंत्र को पढ़कर अग्नि के दाएं नेत्र में डाल दें-

ॐ अग्रये स्वाहा।

फिर बाईं तरफ से घृत लेकर बाएं नेत्र में डाल दें तथा मध्य भाग से लेकर ललाट में आहुति प्रदान करें। मंत्र क्रमशः इस प्रकार है-

ॐ सोमाय स्वाहा। ॐ अग्नि सोमाभ्यां स्वाहा।

अब साधक नमः उच्चारण करते हुए दाएं भाग से पुनः घृत लेकर निम्न मंत्र के पाठ के साथ ही अग्नि के मुख में डालें-

ॐ अग्रये स्विष्टिकृते स्वाहा।

फिर निम्नलिखित मंत्र पढ़कर होम करें-

ॐ भूः स्वाहा।

ॐ भुवः स्वाहा।

ॐ स्वः स्वाहा।

तत्पश्चात् निम्नलिखित मंत्र से तीन आहुतियां दें-

ॐ वैश्वानर जातवेद इहावहावह लोहिताक्ष।

सर्वकर्माणि साधय स्वाहा।

अब मूलमंत्र से इष्ट देवता का ध्यान करके साधक पच्चीस आहुतियां दें-

ह्रीं क्रीं श्रीं परमेश्वरि स्वाहा।

क्रीं आद्य कालिकायै स्वाहा।

फिर निम्नलिखित मंत्र से ग्यारह आहुतियां प्रदान करें-

ॐ अंग देवताभ्यः स्वाहा।

इसके बाद निम्नलिखित मंत्र से कम से कम आठ आहुतियां प्रदान करें-

ॐ आद्यामुकमासस्य अमुक पक्षेऽमुक तिथौ वमुकराशिस्थिते भास्करेऽमुकाभिष्टार्थ सिद्धिकामोऽमुक गौत्रः श्रीमदमुकशर्मा तिलाज्यादिमिश्रितैः पुष्पैर्बिल्वपत्रादि भिर्वासाद्धं वह्नबाहुतिमहं दर्द स्वाहा।

अब मूलमंत्र पढ़कर फल तथा ताम्बूल की आहुति प्रदान करें।

इसके बाद साधक संहार मुद्रा दिखाकर देवी को अपने हृदयमण्डल में स्थापित करें। अब अग्नि का विसर्जन इस प्रकार करें-

अग्रे क्षमस्व।

उपरोक्त सारी क्रियाएं करने के बाद साधक अपने संकल्प एवं इच्छानुसार ध्यानपूर्वक मंत्र जप करें। यह ध्यान रहे, प्रतिदिन निश्चित संख्या में नियत समय पर मंत्र जपादि करके सम्पूर्ण अनुष्ठान पूरा करने का विधान है। मंत्र जप के समय साधक सर्वप्रथम देवता को हृदय में स्थापित कर गुरु तथा मंत्र का एकीकरण करें। मस्तिष्क में गुरु का ध्यान कर हृदय में देवी या इष्ट शक्ति का ध्यान करें। जिह्वा पर माता वाग्देवी का उच्चारण करके मूलमंत्र को प्रणव से संपुटित करके सात बार जपें। तत्पश्चात् वर्णमात्रिका से संपुटित करके मूलमंत्र का सात बार जप करें।

इसी प्रकार अपने शिरो भाग पर ह्रीं का दस जप, मुख में ॐ का दस जप और हृदय कमल में श्रीं का सात बार जप करके प्राणायाम करें। इसके बाद साधक

ॐ श्री गुरवे नमः,

श्री गणेशाय नमः,

के शवाय नमः,

राघवाय नमः,

महादेवाय नमः

कहकर इष्टदेव को प्रणाम करें। फिर ॐ ह्रीं अक्षमालिकायै नमः कहकर माला को मस्तक से लगाएं तथा निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करें-

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।

चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तमन्ये सिद्धिदा भव॥

ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिण करे।

जप काले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्ध्ये॥

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसार्धान साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा।

इसके बाद साधक निम्न मंत्र जप कर अपने इष्ट को समर्पित करें-

ॐ गुह्याति गुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत् प्रसादान्महेश्वरि॥

तत्पश्चात् साधक जो भी कवच, भजन इत्यादि का पाठ चाहें, करें। फिर प्रदक्षिणा करके पूजा का विसर्जन कर दें। विलोम मंत्र का जप कर विशेषार्घ्य से विलोमार्घ्य लेकर प्रदान करें तथा निम्नलिखित आत्मसमर्पण मंत्र पढ़ें-

इतः पूर्वं प्राण बुद्धि देह धर्माधिकारतः जाग्रतस्वप्न सुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यां उदरेण शिश्रया यत् कृतं यत् स्मृतं तत् सर्वब्रह्मार्पणं भवतु। मां मादीयं सकलं आद्या काली पदाम्भोजे अर्पयामि ॐ तत्सत्।

ह्रीं श्रीं आद्ये कालिके! यथाशक्त्या पूजितासि क्षमस्व॥

विसर्जन विधि

पूजन कार्य सम्पन्न हो जाने पर विसर्जन अवश्य करना चाहिए। इसके लिए संहार मुद्रा बनाकर एक पुष्प उठा लें, इसे सूंघें तथा अपने इष्ट को हृदय में बसा लें। फिर ईशानकोण में एक त्रिकोण का निर्माण कर उस पर निम्नलिखित मंत्र से निर्माल्यवासिनी की पूजा करके जल चढ़ा दें-

ह्रीं निर्माल्यवासिन्यै नमः।

इसके बाद ब्रह्मा, विष्णु तथा शिवादि देवों को नैवेद्य प्रदान कर स्वयं भी ग्रहण करें तथा उपस्थित लोगों को भी प्रसाद दें।

११

दुर्लभ यंत्र

यंत्र के अभाव में आपके पूजागृह अधूरे हैं। हमारे सभी प्राच्य मंदिरों के निर्माण से पहले यंत्रों की स्थापना अवश्य की गयी है इन्हीं यंत्रों की चैतन्य ऊर्जा से आज भी हमारे देव स्थान पवित्र बने हुये हैं। पंचभूतों से निर्मित यह शरीर नाना प्रकार की व्याधियों से जब-तब घिरा रहता है, जीवन में तमाम बाधाएँ, कष्ट, परेशानियाँ, तनाव, क्लेश आदि होते ही रहते हैं। यंत्र ही एक ऐसी शक्ति है जो तमाम विपत्तियों का शमन कर विकास का मार्ग प्रशस्त करते हैं तथा मनुष्य का जीवन सुख, ऐश्वर्य, धन, धान्य से परिपूर्ण हो जाता है। ऐसे ही कुछ दुर्लभ यंत्रों को हमने दिव्य मंत्रों से प्राण प्रतिष्ठित व चैतन्य किया है। वैदिक विधि-विधान से ताम्र पत्र पर अंकित इन यंत्रों की शक्ति व प्रभाव आप स्वयं महसूस करेंगे-

✽ मंगल यंत्र	60/-	✽ संतान गोपाल यंत्र	135/-
✽ सरस्वती यंत्र	75/-	✽ हनुमान यंत्र	140/-
✽ वशीकरण यंत्र	75/-	✽ सर्वकार्य सिद्धि यंत्र	140/-
✽ कृष्ण यंत्र	80/-	✽ धनदा यंत्र	140/-
✽ बगलामुखी यंत्र	80/-	✽ महामृत्युञ्जय यंत्र	150/-
✽ महाकाली यंत्र	85/-	✽ व्यापार वृद्धि यंत्र	150/-
✽ हरिद्र गणेश यंत्र	90/-	✽ कनकधारा यंत्र	150/-
✽ रामरक्षा यंत्र	90/-	✽ सुख समृद्धि यंत्र	150/-
✽ श्री दुर्गा यंत्र	90/-	✽ शनि यंत्र	175/-
✽ गुरु यंत्र	90/-	✽ पुत्र प्राप्ति यंत्र	180/-
✽ भैरव यंत्र	90/-	✽ कालसर्प योग यंत्र	190/-
✽ गायत्री यंत्र	100/-	✽ वैभव लक्ष्मी यंत्र	200/-
✽ शिव यंत्र	100/-	✽ महावीर यंत्र	201/-
✽ नवगृह बाधा निवारण यंत्र	125/-	✽ कुबेर यंत्र	201/-
✽ सम्मोहन यंत्र	130/-	✽ वाहन दुर्घटना यंत्र	201/-

नोट: उपरोक्त यंत्र किसी धातु के टुकड़े न होकर पूर्ण वैदिक विधान से चैतन्य किये गये जीवित जागृत शरीर हैं अतः इनकी तुलना अन्य जगहों पर उपलब्ध यंत्रों से न करें।

यंत्र प्राप्त करने के लिए आप ड्राफ्ट/मनीआर्डर के साथ अपना नाम, पिता/पति का नाम, गोत्र एवं पूरा पता अवश्य लिखकर भेजें तत्पश्चात् सात दिनों के बाद आपको यंत्र प्रदान किये जायेंगे।

नोट: उपरोक्त सामग्री मनीआर्डर अथवा ड्राफ्ट द्वारा निर्धारित राशि
(20 रुपये डाक व्यय सहित) भेजने पर ही उपलब्ध हो सकेगी।

सम्पर्क

साधना सिद्धि विज्ञान

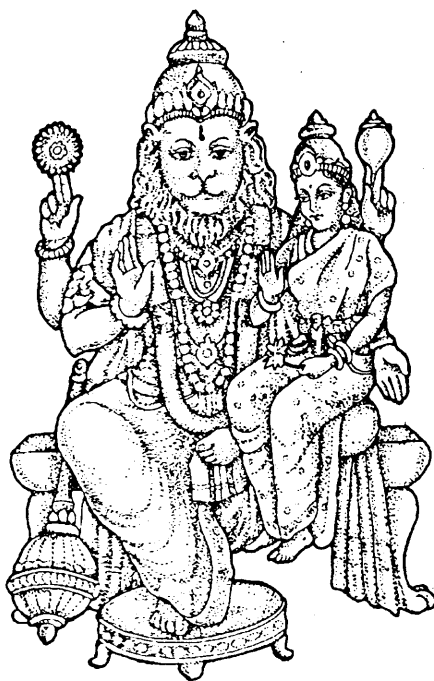
फ्लेट नं. 1,2 मिनाल व्यू-॥ पंजाबी बाग भोपाल दूरभाष : (0755) 576346, 591143

युद्धोपासना

युद्धोपासना अर्थात् युद्ध की उपासना। आज तक किसी भी आध्यात्मिक पत्रिका ने इस पर विशेषांक नहीं निकाला पता नहीं क्यों? शायद कहीं कोई डर होगा। उपासना और वह भी युद्ध की। यही तो ब्रह्माण्डीय कर्म है। इस ब्रह्माण्ड का प्रत्येक कण, प्रत्येक शक्ति, प्रत्येक ग्रह-नक्षत्र युद्ध के कर्म को अपने जीवनकाल में निश्चय ही प्रतिपादित करता है। उपासना अर्थात् साधने की प्रक्रिया, सिद्धहस्त होने का कर्म, सामंजस्यता एवं लयात्मकता स्थापित करने की स्थिति। निपुणता का तात्पर्य ही उपासना है। उपासना के अंतर्गत ज्ञान, रहस्य, पारंगतता एवं उपयोगिता इत्यादि आते हैं। युद्ध का कर्म परम सत्य है। युद्ध मनुष्य को इस सृष्टि द्वारा विरासत में प्राप्त हुआ है। सभी मस्तिष्क, सभी शक्तियाँ, सभी योनियाँ इत्यादि अपने-अपने स्तर पर युद्धात्मक होती हैं। यही एकमात्र ऐसी उपासना है जिसे इस पृथ्वी पर निवास करने वाली सभी जैविक संरचनाएँ समान रूप से सम्पन्न करती हैं। वृक्ष भी युद्ध की कला में निपुण हैं, समस्त पशु एवं सभी मनुष्य युद्धत्व से ओत-प्रोत हैं। आज से कुछ करोड़ वर्ष पहले वृक्षों के तनों में से एक विशेष प्रकार का तरल पदार्थ स्रावित होता था। इस तरल पदार्थ का मुख्य कार्य वृक्ष को उन जीवों से बचाना होता था जो कि उसके जीवन

के लिए घातक होते थे। आज भी खदानों में अनेकों जीवों के जीवाश्म इन्हीं तरल पदार्थों के रत्न स्वरूप में कैद दिखाई पड़ते हैं। एक भी जीव इस पृथ्वी पर ऐसा नहीं है जिसमें कि युद्ध के हथियार या शस्त्र स्वनिर्मित रूप से प्रकट होते

हुए दिखाई नहीं पड़ते। एक कोशीय जीवों में तो युद्धत्व इतना विकसित है कि उनकी प्राण शक्ति उनके शरीर के साथ-साथ अनेकों भागों में विभक्त हो स्वतंत्र स्वरूप धारण कर लेती है। अगर इनके शरीर को दो हिस्सों में बाँटा जाय तो दोनों हिस्से समान रूप से क्रियाशील हो उठते हैं अर्थात् इनकी मृत्यु तो किसी शस्त्र के द्वारा सम्भव ही नहीं है यही है रक्त बीज का सिद्धांत। उसके रक्त की प्रत्येक बूंद से एक नया रक्त बीज तैयार हो जाता था। जीवन जब सूक्ष्म जीवाणु रूप में क्रियाशील होता है तो वह रक्तबीज के सिद्धांत पर ही क्रियाशील होता है। यह अत्यंत ही दुर्लभ जीवन रक्षक विद्या



है। यह विद्या ब्रह्म विद्या के अंतर्गत आती है। शत्रु का नाश अत्यंत ही सरल हो जाता है जब केन्द्र का पता चल जाय। केन्द्र अगर एक है तो फिर शत्रु का अंत निश्चित है परन्तु अगर केन्द्र अर्थात् प्राण में इतनी ताकत है कि वह अनंत भागों में विभाजित हो सकता है एवं प्रत्येक भाग अपने आप में स्वतंत्रता लिए हुए हो तो फिर अंत

करना अत्यंत ही मुश्किल है। यह कार्य तो सिर्फ आद्या शक्ति या देवी कला या फिर महाकाली की शक्ति के द्वारा ही सम्भव हो सकता है इसलिए तो महाकाली का प्राकट्य हुआ है। यही महिषासुर संग्राम का रहस्य है। प्राणों के सम्प्रेषण एवं विभक्त होने की कला ही दीक्षा संस्कार के मूल में है। इसी शक्ति के द्वारा गुरु देखते ही देखते सभी जगह प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य शिष्य खड़े कर सकता है परन्तु यहाँ गुरु को ध्यान रखना होगा कि प्रत्येक शिष्य अपने आप में एक स्वतंत्र चेतना केन्द्र हो। यही शिष्यत्व की परिभाषा है अन्यथा गुरु केन्द्र बन जायेगा और ऐसी स्थिति में केन्द्र के अभाव में पुनः अंधकार छा सकता है। सूर्य इस ब्रह्माण्ड में प्रकाश का केन्द्र है। विशेषकर हमारी आकाश गंगा में सूर्य ही एकमात्र प्रकाश का केन्द्र है फिर भी सूर्य निरंतर अनेकों अन्य प्रकाश के केन्द्रों का निर्माण करता रहता है। अपनी ऊर्जा को प्रतिक्षण अन्य ग्रहों, तारामण्डल एवं पृथ्वी के अनेकों जड़ और चेतन पदार्थों को प्रदान करता है। यही कारण है कि रात्रि में चन्द्र प्रकाश एवं तारागणों का प्रकाश काम चला लेता है। इस पृथ्वी पर मौजूद अनेकों जलधारायें, वनस्पति एवं जीव इत्यादि अप्रत्यक्ष रूप से हमें प्रकाश देते रहते हैं। प्रकाश का भी युद्ध है अंधकार से। यही कारण है कि जिन आकाश गंगाओं में अंधकार की तीव्रता अधिक है वहाँ पर सूर्यों की संख्या भी एक से ज्यादा है। वहाँ के सूर्य भी हमारे सूर्य की अपेक्षा कई गुना ज्यादा शक्तिशाली और बड़े हैं। युद्ध तो सभी जगह है। युद्ध न हो तो पंचेन्द्रिय जीवन सम्भव ही नहीं हो सकता। माँ भगवती को केवड़े के पुष्प चढ़ते हैं। केवड़े के पुष्प तभी खिलते हैं जब बिजली कड़कती है। जैसे ही बिजली कड़केगी वैसे ही केवड़े के पुष्प खिल उठते हैं अर्थात् ये सीधे-सीधे आदि शक्ति द्वारा संचालित हैं। बिजली की चमक ही आदि प्राण शक्ति को उत्पन्न करती है। कालान्तर यही प्राण शक्ति अन्य पदार्थों और तत्वों की सूक्ष्म आवृत्तियों से मिलन कर विभिन्न प्रकार के जीवन का अभ्युदय करती है। बिजली की चमक ही युद्ध का प्रतीक है। चमक अर्थात् धनात्मक और ऋणात्मक शक्तियों का आपस में टकराना। जब जीवन का उदय ही युद्ध से हो रहा है तो फिर युद्ध से कैसे भागा जा सकता है। युद्ध ही हमारा कर्म है। यही तो प्रभु श्रीकृष्ण द्वारा

में अर्जुन को समझा रहे हैं। युद्ध से भागना मनुष्य की सबसे बड़ी कमजोरी है। समस्त असफलताओं, दुर्बलताओं एवं न्यूनताओं के पीछे युद्ध के प्रति नकारात्मक सोच ही निहित है। व्यक्ति असफल इसलिए है क्योंकि उसने पूर्ण हृदय से युद्ध को आत्मसात नहीं किया है। हृदय में कहीं न कहीं कच्चापन रह गया है इसलिए वह असफल है। कृष्ण कह रहे हैं क्या लेकर आया है क्या लेकर जायेगा। आत्मा नहीं मरती है पर शरीर मर जाता है अर्थात् युद्ध से भागने के असंख्य मानवीय तर्कों और तुच्छ प्रवचनों को हे अर्जुन! तू छोड़ दे और पूर्ण तन्मयता के साथ अपने परम वास्तविक लक्ष्य अर्थात् युद्ध की सत्यता को पहचान और निर्विकार होकर इसे सम्पन्न कर। इस पृथ्वी पर उद्यम के बारे में इतना स्पष्ट एवं सरल अख्यान कृष्ण के अलावा किसी ने नहीं दिया। यही कारण है कि गीता इस पृथ्वी पर आज तक हुए सभी आख्यानों में सर्वश्रेष्ठ है। अगर युद्धत्व न हो तो फिर किसी जीव के सिर पर सींग, पादपों में नख, विष ग्रंथियाँ, दाँत, बाल, त्वचा, गंध इत्यादि का प्रादुर्भाव ही नहीं होगा। यह सब युद्धत्व का प्रतीक है। आँखों के ऊपर पलक ही नहीं होगी। पलक तो कवच है आँखों की। कवच की जरूरत तो तभी पड़ेगी जब युद्ध का खतरा हो अर्थात् जीवन के ऊपर संकट हो। कोई भी जीव आकृति ही नहीं धारण कर सकता युद्धत्व के अभाव में। अनेकों जीव ऐसे होते हैं जिनमें कि जीवन अण्डे के रूप में विकसित होता है। इन अण्डों को वे सुरक्षित जगह पर नौ महीने तक हिफाजत के साथ रख देते हैं। तत्पश्चात् नवीन जीवन का अंकुरण होता है। अब आप ही बताइये कि इनमें प्रजनन तंत्र मनुष्य से कितना ज्यादा विकसित है! मनुष्य की संतान तो माता नौ महीने तक पेट में ढोती है परन्तु अनेक जीव ऐसा नहीं करते हैं। इन जीवों को अपना जीवन सम्पूर्ण करने के लिए अत्यधिक युद्ध करना पड़ता है इसलिए प्रतिक्षण युद्ध के कारण ये संतानोत्पत्ति अत्यंत ही परिष्कृत तरीके से करते हैं। जीव के सारे गुण अण्डे के भी भीतर पल रहे नव जीवन में अद्वैत रूप से सम्प्रेषित होता रहता है। सम्प्रेषण के लिए द्वैत माध्यम ही अनिवार्य नहीं है। दो बातें स्पष्ट हैं। युद्ध तो सामने होता ही है। युद्ध से कोई बच नहीं सकता वह किसी न किसी प्रकार आपके सामने उपस्थित हो ही जायेगा। दूसरी बात

जीवन को पूर्ण करना है, जीवन की रक्षा करना है तो फिर युद्ध कला में निपुण होना ही पड़ेगा। प्रत्येक चुनौती, प्रत्येक नई स्थिति एवं प्रत्येक नये संकट काल में जीने के लिए नई परिभाषाओं, नये अस्त्रों एवं नई शक्ति से अपने आपको युक्त करना होगा। यही जीवन का रहस्य है। जो जीव जब तक इसके अनुकूल चलता रहेगा वह उतने ही लम्बे समय तक इस पृथ्वी पर अपने स्वरूप को स्थिर रख पायेगा अन्यथा भूतकाल की गर्त में समा जायेगा। मनुष्य अभी इस पृथ्वी पर राज कर रहा है अन्य जीवों की अपेक्षा वह ज्यादा युद्धप्रिय है, उसके शस्त्रागार में अनेकों शस्त्र हैं। उसके मस्तिष्क की प्रत्येक कोशिका प्रतिक्षण नवीन शस्त्र प्रणाली, नवीन शस्त्रों, नवीन युद्ध नीतियों एवं नवीन कवचों का निर्माण करती रहती हैं। यह इसलिए सम्भव हुआ है कि उसकी चेतना शक्ति अर्थात् प्रज्ञा शक्ति अत्यधिक ही बलवान है। चेतना शक्ति का बलशाली होना युद्ध की लालसा के अंतर्गत ही आता है। पुरातन शस्त्रों का त्याग एवं नवीन शस्त्रों का निर्माण यही मानव इतिहास के सफलता की कहानी है। युद्ध मनुष्य का केवल जीवों से ही नहीं है, उसका युद्ध तो शक्तियों से भी है, प्रकृति से भी है, स्वयं से भी है। स्वयं से युद्ध ही तो अध्यात्म का मनुष्य में प्रादुर्भाव कराता है। शास्त्रों में ठीक ही कहा है युद्ध क्षेत्र, प्रेम क्षेत्र और धर्म क्षेत्र में सब कुछ जायज है। युद्धत्व न हो तो एकीकरण सम्भव ही नहीं हो सकता। एकीकरण से पहले एकत्रीकरण होता है। एकत्रीकरण का तात्पर्य है एक जगह समान लक्ष्य वाले व्यक्तियों का इकट्ठा होना तत्पश्चात् इन एकात्मिक व्यक्तित्वों द्वारा एक लक्ष्य के लिए समस्त मतभेदों, मनभेदों इत्यादि को भुलाकर एक इकाई के रूप में कार्य सम्पन्न करना है। बस यहीं से परिवार, वंश, जाति, नस्ल, देश, धर्म समूहों, व्यापार समूहों इत्यादि का प्रादुर्भाव होता है। दो मस्तिष्क अपने आपमें स्वतंत्र अस्तित्व हैं। इनमें दो ही स्थिति निर्मित होगी प्रथम ये आपस में युद्ध करेंगे या फिर दोनों एक साथ मिलकर किसी अन्य से युद्ध करेंगे ऐसा ही अनंतकाल से होता आया है और होता रहेगा। युद्धत्व आदि तत्व हैं एवं युद्ध प्रत्येक पदार्थ और शक्ति का आदि कर्म है कालान्तर यही आदि कर्म द्वंद, प्रतिस्पर्धा, खेल, तर्क, आलोचना, अहम्, गर्व, तेज इत्यादि रूपों में प्रकट

होता है। शक्ति को आत्मसात करने की प्रक्रिया ही युद्ध की तैयारी का भाग है और फिर शक्ति का विसर्जन युद्ध क्षेत्र का निर्माण करता है इसे कहते हैं आत्मोसर्ग की प्रक्रिया। आत्मोसर्ग ही बाद में समर्पण, निष्ठा, विश्वास इत्यादि के रूप में प्रकट होता है। युद्ध क्षेत्र क्या है? युद्ध क्षेत्र सार्वभौमिक है। युद्धक्षेत्र केवल पृथ्वी का विषय नहीं है। युद्धक्षेत्र जल, थल, नभ और अंतरिक्ष सभी जगह निर्मित हो सकता है। इसे ध्यान से समझिए कृष्ण ने महाभारत का युद्ध प्रारम्भ होने से पहले पाँच जन्य शंख पर बस यही आह्वान किया था। उन्होंने ब्रह्माण्ड के सभी युद्ध क्षेत्रों को चैतन्य कर दिया था। लीलाधारी की लीला विचित्र है। अगर आप गीता पढ़ेंगे तो पायेंगे कि उनका आह्वान इतना अद्भुत था कि जल, थल, नभ और अंतरिक्ष में उपस्थित सभी सूक्ष्म दिव्य लोक और उनमें रहने वाली सभी योनियाँ, देव शक्तियाँ इत्यादि उनके आह्वान पर युद्ध के लिए लालायित हो गयी थीं। सभी नक्षत्र, सभी ग्रह एवं सभी साधनारत तपस्वी, पितृ गण के साथ-साथ मणि द्वीप में निवास करने वाली अनंत देवी शक्तियाँ सबकी सब युद्धभाव से तन्म हो चुकी थीं। मनुष्य तो सबसे घटिया जीव है। अर्जुन ने तो पूर्ण रूप से युद्धभाव बड़ी मुश्किल से आत्मसात किये थे परन्तु अन्य शक्तियों ने तो बस कृष्ण के इशारे पर युद्ध के भाव पूर्ण श्रद्धा के साथ आत्मसात कर लिये थे। युद्ध हो तो ऐसा। आधे अधूरे मन से, अनमने और घिसे पिटे शस्त्रों और कवचों से युद्ध में उतरने का कोई फायदा नहीं है। यही कारण है कि कुछ घटिया पत्रिकाओं को पढ़कर साधकगण बगलामुखी, धूमावती एवं छिन्नमस्ता जैसी तीक्ष्ण ब्रह्म विद्या की साधना करने लगते हैं और बाद में सिर पीटते हैं। उनके गुरु घंटालों को भी युद्ध करना नहीं आता, कायरता उनमें फूट-फूटकर भरी होती है तो फिर वे क्या अपने शिष्यों को युद्ध करना सिखायेंगे। अधिकांशतः शिष्यगण लोटे में भरे पानी के समान हैं हर पल डगमगाते रहते हैं। संकल्प शक्ति शून्य होती है, जब संकल्प शक्ति ही नहीं है तो क्या खाक साधना होगी। तत्त्व ज्ञान गुरु घंटालों को ही नहीं है तो फिर वे क्या ब्रह्माण्डीय साधना करवायेंगे इसीलिए गुरु स्वयंभू होना चाहिए अर्थात् वे ही गुरु बनने योग्य हैं, वे ही नेतृत्व प्रदान करने योग्य हैं जो कि जीवन में स्वयं ही सभी विपरीत

परिस्थितियों से युद्ध करते हुए स्वयं के सहारे से खड़े होने की क्षमता रखते हों। यही प्रमाण है युद्धकला में निपुण होने का। जो निपुण होगा वही स्वयंभू होगा। स्व ही प्रमाण पत्र है नेतृत्व करने का, दिशा प्रदान करने का इसलिए तो कहा गया है कि गुरु को सर्वप्रथम कहना पड़ता है कि अहम् ब्रह्माऽस्मि अर्थात् में ही ब्रह्म हूँ। जब तक यह आत्मसात नहीं होगा न कोई भारद्वाज ऋषि बन पायेगा, न गौतम, न कपिल, न विश्वामित्र इत्यादि-इत्यादि सभी आर्यऋषि युद्धकला में निपुण थे। युद्ध उनके लिए जीवन का आवश्यक अंग था। कृष्ण हों या राम या पैगम्बर या महावीर या क्राइस्ट ये सबके सब स्वयंभू हैं। सबने अपने युग में विपरीत परिस्थितियों से युद्ध किया, परम्परायें उखाड़ फेंकी, शत्रुओं का दमन किया, स्वयं के अंदर बैठी कमजोरियों का डटकर मुकाबला किया एवं परिष्कृत हुए। अथाह संकल्प शक्ति एवं जुनून ही इनके अस्तित्व की कहानी है। जो अपने आप को असुरक्षित महसूस करेंगे वे बस एक बोरा नोट फिर सौ बोरे नोट भरने की प्रक्रिया निरंतर करते रहेंगे। वे तो निश्चित ही पराजित होंगे। नोट से कोई वीर नहीं हो जाता। लूट-पाट, चोरी धोखा इत्यादि तो मूषक प्रवृत्ति हैं। चूहे कभी युद्ध नहीं करते। वे चोरी करते हैं। वास्तव में इस ब्रह्माण्ड में वही शक्तियाँ परम तेजस्वी, पूजनीय एवं सर्वश्रेष्ठ हैं जो कि युद्ध की उपासना करती हैं। युद्ध की उपासना सत्य को स्वीकारना है। छाती ठोंककर सामने खड़ा होना है परिणाम चाहे जो कुछ भी हो। सर्वश्रेष्ठ मनुष्य वही है जो युद्ध की उपासना करते हैं। कृष्ण ने गीता में सिंह को सर्वश्रेष्ठ पशु बताया क्योंकि वह सामने से वार करता है। श्रेष्ठ योद्धा है वह। शक्ति का अटूट भण्डार है उसमें। उसका प्रत्येक अंग एवं कर्म युद्ध की उपासना करता है। उसकी दहाड़ से ही शत्रु हिल उठते हैं इसलिए माँ भगवती सिंह पर विराजमान हैं। सत्य पर ही सत्य विराजमान होगा। माँ भगवती का वाहन सिंह ही होगा चूहा नहीं। सिंह के ऊपर नियंत्रण ही चण्डिका का तेज प्रकट करता है। यही चण्डिकास्त्र का रहस्य है। भगवती उसे ही सिद्ध होंगी, उसे ही अपनी शक्ति से सम्पुट करेंगी जो कि सिंह के समान वीर होगा। चण्डी आराधना करनी है तो फिर सिंह तो बनना ही होगा। आगे कृष्ण सर्पों में वासुकी को सर्वश्रेष्ठ कह रहे हैं। वह सर्वश्रेष्ठ है

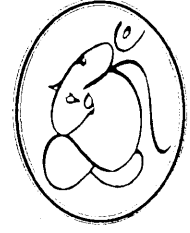
तभी तो विष्णु उनकी शैय्या बनाकर लेटे हुए हैं। ऋषियों में वह कपिल को सर्वश्रेष्ठ कह रहे हैं। वे एक अद्वितीय योद्धा रहे हैं। आगे बढ़ते हुए कृष्ण पुनः नारद को भी सर्वश्रेष्ठ कह रहे हैं। नारद शक्ति क्या है? वास्तव में नारायण नारायण जपने वाले नारद युद्धत्व का प्रतीक ही हैं। जब-जब देव, असुर, मनुष्य या आदि शक्तियाँ शिथिलीकरण की ओर बढ़ती हैं नारद युद्ध का प्रादुर्भाव कर देते हैं। युद्ध का उत्पत्तिकरण ही नारद क्रिया है। श्री हरि ने नारद के रूप में अनेकों बार युद्ध का प्रादुर्भाव कराया है। लक्ष्मी को पार्वती से लड़वाया है, विष्णु को शिव से लड़वाया है, देवताओं को असुरों से लड़वाया है, गणेश को शिव से लड़वाया है और यहाँ तक कि स्वयं नारद और विष्णु भी लड़ पड़े हैं, स्वयं श्री हरि नारद के द्वारा श्राप ग्रस्त भी हुए हैं। माया को समझना बड़ा मुश्किल है। श्री हरि तो योगमाया के प्रवर्तक हैं। स्वयं नारद भी उन्हें नहीं समझ सकते कि वे चाहते क्या हैं? इसीलिए थकहारकर बस नारायण-नारायण जपते हैं। युद्ध सभी जगह फल-फूल रहा है। सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर अब तक हर जगह युद्ध क्षेत्र निर्मित होता ही रहता है। युद्ध फलता-फूलता रहता है यह अच्छी बात है। युद्ध के बिना जीवन बदरंग हो जायेगा, रसविहीन हो जायेगा। जीवन की गति बाधित हो जायेगी, कुछ मजा ही नहीं रह जायेगा। क्या फायदा ऐसे जीवन से? अतः सम्यक भाव से सारा जीवन युद्ध की उपासना करनी चाहिए। माध्यम बदलते रहेंगे, आवृत्तियाँ आती जाती रहेंगी, पक्ष-विपक्ष बदलता रहेगा, नित नई चुनौतियाँ खड़ी होती रहेंगी परन्तु युद्ध जारी रहेगा। मस्तिष्क में कितनी ऊर्जा है आप इसका अंदाजा भी नहीं लगा सकते। दुनिया भर के काम कर लीजिए इसके लिए अलग ऊर्जा है। ज्ञान अर्जन के लिए अलग ऊर्जा है। संतानोत्पत्ति के लिए अलग ऊर्जा है, काम के लिए अलग ऊर्जा है इसके बाद भी ऊर्जा का अथाह भण्डार बचता है। क्या करोगे इस ऊर्जा का? ऊर्जा का अचार तो नहीं डाला जा सकता। यह है युद्ध की ऊर्जा। अगर यह निष्कासित नहीं होगी तो फिर दिमाग प्रेशर कुकर बन जायेगा। फट जायेगा। अतः युद्ध रूपी आदि ऊर्जा को निष्कासित करने के लिए ही युद्ध क्षेत्र का निर्माण तो करना ही पड़ेगा और वह भी निष्काम भाव से। समझदार राष्ट्र इस ऊर्जा को निष्कासित करने के

लिए अपने नागरिकों को अनंत प्रकार के क्रीड़ा स्थल प्रदान करते हैं। खेल के माध्यम से युद्ध की ऊर्जा आसानी से निष्कासित हो जाती है। अगर बचती है तो फिर इसे युद्ध के मैदान में निष्कासित करवा देते हैं। आप देखिए यूरोपीय देश या अन्य सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र किसी न किसी बहाने अपने देश की सेना को हर वर्ष युद्ध में कहीं न कहीं भेजते रहते हैं। इससे समाज परिष्कृत होता है अन्यथा सच्चाई तो यह है कि बची हुई ऊर्जा राष्ट्र को नष्ट कर देगी। शत्रु से लड़ें तो ज्यादा बेहतर है। सबके सब कृष्ण की नीति पर चलते हैं, उसका वास्तव में पालन करते हैं इसलिए राज करते हैं। हम तो बस तोता रटंत के समान गीता पढ़ते हैं अमल कभी भी नहीं करते तभी हमारी सीमाएं सिकुड़ रही हैं। हमारा नेतृत्व वास्तव में कायर है। यह सबसे खतरनाक बात है। जब नेतृत्व कायर हो जायेगा तो फिर जनता का क्या होगा। वे भी कायरों की भांति बस दुष्टों से अपने प्राणों की भीख मांगेंगे। इस देश की यही बिडम्बना है। दो हथियार-बंद के सामने सौ लोग गिड़गिड़ाते लगते हैं। एक कहावत है कि गीदड़ों की सेना हो और सेनापति सिंह हो तो फिर विजय निश्चित है परन्तु शेरों की सेना हो और सेनापति गीदड़ हो तो फिर हार भी निश्चित है। आज आप जितने भी देवी देवताओं की पूजा करते हैं चाहे वह हनुमान हों, कृष्ण हों, राम हों, दुर्गा हों, काली हों इत्यादि-इत्यादि सबके सबने अपने प्रादुर्भाव में घोर संग्राम किए हैं। विजय भी प्राप्त की है इसलिए तो आराध्य हैं। हारे हुए को कौन पूजता है? कहने का तात्पर्य यह है कि आप अपरोक्ष रूप से युद्धोपासना ही कर रहे हैं। युद्धरत शक्तियों की आराधना का मतलब है कि उनसे दिव्य, परा एवं दैवीय युद्ध क्षमता को हासिल करना। इन्हीं क्षमताओं के बल पर आप शक्तिमान कहलायेंगे। लक्ष्मी का वरण विष्णु ही करेंगे। लक्ष्मी उसी के पास होगी जो कि विष्णु के समान सदैव युद्धरत रहने के लिए तैयार होगा। शिव भक्त वही है जो कि विषैले शत्रुओं के बीच घिरा रहने पर भी विष को निष्प्रभावी बनाने में सक्षम होता है। भूत भावन धूर-जटी शिव अत्यंत ही युद्ध प्रिय हैं। युद्ध की शक्ति ही सात्विक रूप में आशीर्वाद की स्थिति प्रकट करेगी। राजसिक रूप में यही शक्ति दीक्षा और वरदान में बदल जायेगी एवं तामसिक रूप में शाप

का प्रादुर्भाव होगा। त्रिनेत्र खुलेंगे प्रलय की उत्पत्ति होगी इत्यादि-इत्यादि। जब-जब असुरों को दिव्य अस्त्रों की जरूरत पड़ी है उन्होंने शिव के तामस स्वरूप को प्रसन्न किया है और वरदान में जो पाया है वह सर्वविदित है। युद्ध क्यों आवश्यक है? अनेकों जीव, असुर, देव शक्तियाँ इत्यादि समय-समय पर इस भ्रांति से ग्रसित हो जाते हैं कि अब हम सर्वश्रेष्ठ हैं, हम परम सत्ता हैं, हम अजेय और अमर हैं। बस उसी क्षण युद्ध की उत्पत्ति हो जाती है। हिरण्यकश्यप ने वरदान मांगा न मैं दिन में मरूँ न रात में, न पशु से न मनुष्य से, न अस्त्र से न शस्त्र से, न जमीन पर, न आकाश में, न पाताल में इत्यादि-इत्यादि। बस उसका दिमाग पगला गया तुरंत ही श्री हरि खम्बा फाड़कर प्रकट हो गये न पशु थे, न मनुष्य, न अस्त्र थे, न शस्त्र, न दिन था न रात, बस गोधूलि की बेला थी। न भूमि थी न वायु और न जल हिरण्यकश्यप को अपनी जाँघ पर लिटा अपने नखों से फाड़ डाला। तोड़ उपलब्ध हो गया। यही इस पत्रिका का मुख्य पृष्ठ आपको बता रहा है। तोड़ हर चीज का उपलब्ध है। इन्द्र के साथ भी ऐसा ही हुआ जब-जब वह मद में चूर हुआ उसे स्वर्ग लोक से पराजित होकर भागना पड़ा। युद्ध एकाधिकार को नष्ट करता है। युद्ध समस्त अवरोधों को तोड़ पुनः नवीन संरचना में सदैव मदद करता है। इस ब्रह्माण्ड में निरंतर युद्ध होते आये हैं और होते रहेंगे यह एक आदि क्रिया है। हम सभी के अंदर युद्ध की शक्ति विद्यमान है यह भी सच्चाई है। हमें निरंतर अनुसंधान करते रहना पड़ेगा अपनी युद्ध क्षमता को सकारात्मक रूप में परिवर्तित करते रहना पड़ेगा। हमारे मूलभूत कर्मों में से युद्ध भी एक कर्म है। इस कर्म का सम्पादन हम सत्यता के साथ कैसे सम्पन्न करते हैं यही हमारी गति और भाग्य का निर्धारण करेगा। सत्य के मार्ग पर युद्ध करना श्रेष्ठकर और हितकर है। यही प्रभु श्री राम, प्रभु श्रीकृष्ण एवं विष्णु के समस्त अवतार हमें शिक्षा दे रहे हैं। सनातन धर्म एवं आर्य सभ्यता ने युद्ध के महत्व को स्वीकार किया है हमें भी स्वीकार करना होगा। एक कहावत है कभी किसी का बुरा न करो विश्वास नहीं है तो करके देखो नहीं तो जिन्होंने बुरा किया है उनके जाकर घर देख लो।

प्रकृति का दुर्लभ उपहार, आश्चर्यजनक, लक्ष्मीप्रदायक
और प्रबल सिद्धिदायक साक्षात् गणपति विग्रह स्वरूप

श्वेताक्षर गणपति



मूल्य 301 रुपये मात्र

जिसके माध्यम से आप प्रचुर धन लाभ, लक्ष्मी वशीकरण और इष्ट प्रत्यक्षीकरण जैसी क्रियाओं को सम्पन्न कर पूर्ण रूप से जीवन को निश्चिन्त बना सकते हैं। प्रकृति निर्मित यह अपने आप में एक ऐसा विग्रह है जो गणेश जी के साथ तीक्ष्ण शक्ति तत्व को भी अपने में समेटे हुए है। इसका स्थापन मात्र जीवन को पूर्णता प्रदान करता है और निश्चय ही आप अपने जीवन को पूर्णता देना चाहते ही हैं। आप जरूर पाना चाहेंगे इस विग्रह को जो पूर्ण सिद्धिदायक, चैतन्य और तांत्रोक्त विधि से प्राण प्रतिष्ठित किया हुआ है।

ग्रहण काल व अन्य विशेष शुभ मुहूर्तों में दुर्लभ साधनाओं के मध्य दिव्यतम मंत्रों द्वारा

कुंकुम, केसर, व अष्टगंध की स्याही से मोरपंख, स्वर्ण व रजत सलाका द्वारा पवित्र भोजपत्र पर अंकित

दुर्लभ यंत्र

मूल्य 301 रुपये मात्र

विशेष : इन यंत्रों का निर्माण आवश्यकतानुसार साधकों/शिष्यों के अनुरोध पर साधना सिद्धि विज्ञान द्वारा किया जाता है तथा उन्हें व्यक्ति विशेष या प्रयोजन के अनुसार दिव्यतम वैदिक मंत्रों द्वारा चैतन्य किया जाता है।

(आपको क्या करना है?)

आप अपना प्रयोजन या यंत्र का नाम (मूल्य के ड्राफ्ट/मनीआर्डर सहित) अपना पूरा नाम गोत्र, पिता का नाम, जन्म समय, स्थान आदि लिखकर भेज दें। एक सप्ताह के अंदर यंत्र आपके पास पहुँच जाएगा। इन दुर्लभ यंत्रों का प्रभाव आप स्वयं महसूस करेंगे।

सम्पर्क

साधना सिद्धि विज्ञान

फ्लेट नं. 1,2 मिनाल व्यू-11 पंजाबी बाग भोपाल

दूरभाष : (0755) 576346, 591143

काली कवच

कनु भाई काका (बड़ोदा)

भगवती महाकाली अपने नाम के अनुरूप आसुरी वृत्तियों तथा दुष्टों के लिए साक्षात् काल हैं उनकी कृपा यदि साधक को प्राप्त हो जाय तो समस्त विपत्तियों से न सिर्फ उसकी रक्षा होती है बल्कि उसके शत्रुओं का नाश हो जाता है। यह ऐसा दुर्लभ कवच है जिसे भोजपत्र पर लिखकर धारण करने से साधक सर्वत्र निर्भय होकर विचरण कर सकता है तथा उसे सभी प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं। यह कवच शत्रुनाश, आत्मरक्षा एवं ऐश्वर्य प्रदान करने वाला है

पाठ विधि-

साधक को चाहिए कि वह स्नानादि नित्य क्रियाओं से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण कर पूजा स्थल में उत्तर या पूर्व की ओर मुँह करके बैठे। पूजन के लिए आवश्यक समस्त सामग्री अपने पास रख लें? सर्वप्रथम गुरु पूजन व गणेश पूजन सम्पन्न करें अपने सम्मुख चौकी पर भगवती काली की प्रतिमा या यंत्र लाल आसन पर स्थापित कर यथा सम्भव पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन करें तत्पश्चात् निम्नानुसार न्यास व विनियोग कर कवच का पाठ आरम्भ करें।



ऋष्यादिन्यास

ब्रह्मा-ब्रह्मर्षिभ्यः

ऋषिभ्यो

नमः

ध्यायेत् कालीं महामायां त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम्।

चतुर्भुजां ललज्जिह्वां पूर्णचन्द्र निभाननाम्॥

(शिरसि), गायत्र्यादिच्छन्दोभ्यो

नमः (मुखे),

श्रीआद्याकालीदेवतायै नमः

(हृदये), क्रीं बीजाय नमः

(गुह्ये), ह्रीं शक्तये

नमः (पादयोः), श्रीं

कीलकाय नमः (नाभौ), विनियोगाय नमः

(सर्वाङ्गो), ।

कर-षडङ्ग-न्यासः-

“हां, ह्रीं, हूं, हैं, हौं, हः”।

इन छः मन्त्रबीजों में से एक-एक बीज का उच्चारण कर उनसे पहले करन्यास और दूसरी बार अंगन्यास करना चाहिए।

विनियोग-

अस्य श्रीकालीकवचस्य श्रीभैरवऋषिर्गायत्रीच्छंदः श्रीकालिका देवता ममाभीष्टसिद्धये पाठे विनियोगः।

“क्रां, क्रीं, कूं, क्रैं, क्रौं, क्रः” इन

छह बीजों से कर और हृदयादि न्यास

करें और उसके पश्चात् ध्यान करें।

पड़ोदा)



नमः

क-एक
पहले
गन्यास

चस्य
लिका
योगः।

" इन
न्यास

मीम्।
म् ॥



सद्यश्छिन्नशिरः कृपाणामभयं हस्तैर्वरं विभ्रतीं,
घोरास्यां शिरसां स्रजा सुरुचिरामुन्मुक्त केशावलिम्।
सृक्कासृक्प्रवहां श्मशाननिलयां श्रुत्योः शवालंकृतिं
श्यामांगीं कृतमेखलां शवकरैर्देवीं भजे कालिकाम्

नीलोत्पलदलप्रख्यां शत्रुसंघविदारिणीम् ॥
नरमुण्डं तथा खड्गं कमलं च वरं तथा ।
बिभ्राणां रक्तवसनां दंष्ट्रया घोररूपिणीम् ॥
अट्टाट्टहास-निरतां सर्वदा च दिगम्बराम् ।
शवासनस्थितां देवीं मुण्डमाला-विभूषिताम् ॥

मूल कवच-पाठः

इति ध्वात्वा महादेवीं पुनस्तु कवचं पठेत् ।
ॐ कालिका घोररूपाद्या सर्वकामप्रदा शुभा ॥
सर्वदेव-स्तुतां देवी शत्रुनाशं करोतु मे ।
ह्रीं ह्रीं स्वरूपिणीं चैव ह्रीं ह्रीं हूं रूपिणीं तथा ॥
ह्रीं ह्रीं क्षं क्षं स्वरूपा सा सदा शत्रून्विदारयेत् ।
श्रीं ह्रीं ऐं रूपिणी देवी भवबन्धविमोचिनी ॥
हसकल ह्रीं ह्रीं रिपून् सा हरतु देवी सर्वदा ।
यथा शुम्भो हतो दैत्यो निशुम्भश्च महासुरः ॥
वैरिनाशाय वन्दे तां कालिकां शंकरप्रियाम् ।
ब्राह्मी शैवी वैष्णवी च वाराही नारसिंहिका ॥
कौमार्यैन्द्री च चामुण्डा खादयन्तु मम द्विषः ।
सुरेश्वरी घोररूपा चण्ड-मुण्ड-विनाशिनी ॥

मुण्डमालावृतांगी च सर्वतः पातु माम् सदा । ह्रीं
ह्रीं कालिके घोरदष्टे रुधिर प्रिये रुधिर पूर्ण वक्त्रे
रुधिरावृत्तस्तनि मम शत्रून् खादय खादय हिंसय
हिंसय मारय मारय भिन्दि भिन्दि छिन्धि छिन्धि
उच्चाटय उच्चाटय द्रावय द्रावय शोषय शोषय
स्वाहा स्वाहा । ह्रीं ह्रीं कालिकायै मदीय शत्रून्
समर्पयामि स्वाहा । ॐ जय जय किरि किरि किटि
किटि कुट कुट कट्ट कट्ट मर्दय मर्दय मोहय
मोहय हर हर मम रिपून् ध्वंसय ध्वंसय भक्षय भक्षय
त्रोटय त्रोटय यातुधानि चामुण्डे सर्व जनात्राज्ञो

राजपुरुषान् योषा रिपून् मम वश्यान् कुरु कुरु तनु
तनु धान्यं धनमश्नान् गजान् रत्नानि दिव्यकामिनीः
पुत्र-पौत्रान् राजश्रियं देहि देहि भक्ष भक्ष क्षां क्षीं
क्षूं क्षें क्षौं क्षः स्वाहा ।

फलश्रुति

इत्येतत्कवचं दिव्यं कथितं शुम्भुना पुरा ।
ये पठन्ति सदा तेषां ध्रुवं नश्यन्ति शत्रवः ॥
प्रलयः सर्व-व्याधीनां भवतीह न संशय ।
धनहीनाः पुत्रहीनाः शत्रवस्तस्य सर्वदा ॥
सहस्र-पाठनात्सिद्धिः कवचस्य भवेत्तथा ।
ततः कार्याणि सिद्ध्यन्ति यथा शङ्करभाषितम् ॥
श्मशानाङ्गारमादाय चूर्णीकृत्य प्रयत्नतः ।
पादोदकेन स्पृष्ट्वा च लिखेल्लौह-शलाकया ॥
भूमौ शत्रून् हीनरूपान् उत्तराशिरसस्तथा ।
हस्तं दत्त्वा तद्दहदये कवचं तु स्वयं पठेत् ॥
शत्रोः प्राणप्रतिष्ठान्तु कुर्यान्मंत्रेण मंत्रवित् ।
हन्यादस्त्र-प्रहारेण शत्रुर्गच्छेद् यमालयम् ॥
ज्वलदंगार-तापेन भवन्ति ज्वरिणोऽरयः ।
प्रोक्षणैर्वा मपादेन दरिद्रो भवति ध्रुवम् ॥
वैरिनाशकरं प्रोक्तं कवचं वश्यकारकम् ।
परमैश्वर्यदं चैव पुत्रपौत्रादिवृद्धिदम् ॥
प्रभात-समये चैव पूजाकाले प्रयत्नतः ।
सायंकाले तथा पाठात् सर्वसिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् ॥
शत्रुरुच्चाटनं याति देशाच्च विच्युतो भवेत् ।
पश्चात्तिकरमाप्नोति सत्यं सत्यं न संशयः ॥
शत्रुनाशकरं देवि सर्व-सम्पत्प्रदे शुभे ।
सर्वदेवस्तुते देवि कालिके त्वां नमाम्यहम् ॥

✽

युद्ध वृद्धि

मनुष्यों द्वारा पृथ्वी का ज्ञात इतिहास आज की तारीख में 6 अरब वर्ष प्राचीन है। ऊपर वर्णित 6 अरब वर्षों में से प्रत्येक वर्ष, प्रत्येक पल, युद्ध की प्रक्रिया निरंतर गतिशील रही है। एक से एक जीव इस पृथ्वी पर उदित हुए हैं। अन्य बृह्माण्डों और नक्षत्रिकाओं से जीवन के बीज इस पृथ्वी पर आकर अंकुरित हुए हैं। यह पृथ्वी जब से पंचभूतीय जीवन का उद्घान बनी है तबसे आज तक जीवन के विभिन्न प्रकार जो कि अनेक रूपों और आयामों में इस बृह्माण्ड में स्थित रहे हैं उन सबकी दृष्टि में पृथ्वी एक आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है। इस पृथ्वी पर जीवन भिन्न-भिन्न स्वरूपों में दिखलाई पड़ता है। एक स्वरूप दूसरे

स्वरूप से पूर्णतः भिन्न है। एक मस्तिष्क दूसरे मस्तिष्क से कुछ अलग हटकर है। सबके सब प्रतिनिधित्व कर रहे हैं जीवन के विभिन्न ब्रह्माण्डीय आयामों का। यह एक वैज्ञानिक सत्य है। जीवन के बीज प्रतिक्षण इस पृथ्वी पर अंकुरित हो रहे हैं। समय एवं काल के अनुसार परिवर्तित एवं परिष्कृत हो रहे हैं। इतने प्रकार से जीवन इस पृथ्वी पर मौजूद हैं कि गणना ही नहीं की जा सकती। यही कारण है प्रतिस्पर्धा का। एक दूसरे को भक्षण करने का। सबके सब अपने अस्तित्व की रक्षा में अनंत काल से लगे

हुए हैं। सबको अपना वंश चलाना है। सबको शस्त्रों की जरूरत है। सबको कवच चाहिए एवं दुर्लभ दैवीय परादैवीय एवं अलौकिक शास्त्र प्रणाली से युक्त होना पड़ता है तब कहीं जाकर एक निश्चित प्रकार का जीवन इस पृथ्वी पर गतिशील हो पाता है। पंचभूतीय शरीर तो मात्र माध्यम है एक खोल है एक वाहन है जीवन की यात्रा संपन्न करने

का। यह अत्यंत ही कटु सत्य है। युद्ध से ही मनुष्य की जाति बची हुई है। जिस दिन जाति विशेष की युद्ध प्रणाली पुरातन एवं जीर्ण-शीर्ण हो जायेगी उस दिन उस जाति का अंत निश्चित है। अनेकों जातियां और प्रजातियां विलुप्त भी हो गई हैं। कुछ सुप्त हो गई हैं। अनेकों प्राणी लुप्तता



यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवती भारत ।
अप्युत्थानमर्थस्य तदाऽऽप्तमनः सुजायमहम् ॥

के कगार पर हैं। सीधा सा कारण है प्रत्येक मनुष्य को प्रतिक्षण परोक्ष, अपरोक्ष, दृश्य, अदृश्य एवं अद्वैत शत्रुओं से निरंतर संघर्षशील रहना पड़ेगा, सजग रहना पड़ेगा एवं युद्ध के लिए सदैव तत्पर रहना पड़ेगा। परोक्ष युद्ध ही सब कुछ नहीं है। अपरोक्ष युद्ध ही मुख्य महत्व रखता है। परोक्ष युद्ध तो जीवन में गिने चुने बार होगा परन्तु गुप्त अदृश्य शत्रुओं से प्रतिक्षण सजग रहना पड़ेगा। इस पृथ्वी पर अहिंसा ढोंग है। समग्र अहिंसा का अनुसंधान पूरी तरह विफल हो गया है। कायर एवं भागने वाले जीवन के लिए

अहिंसा एक पर्याय बन गया है अगर एक क्षण के लिए पृथ्वी अहिंसक हो जाय तो दूसरे ही क्षण सूर्य की किरणें सब कुछ झुलसाकर रख देंगी अर्थात् अगर पृथ्वी अपना कवच हटा दे तो सूर्य की प्रचण्ड किरणें कोमल शरीर और वनस्पति तो क्या बड़े-बड़े शिलाओं से युक्त पहाड़ों को भी पिघला देंगी। क्षण भर में समुद्र सूख जायेंगे और जीवन की वर्तमान प्रणाली शून्य हो जायेगी। जब पृथ्वी अहिंसक नहीं है तो फिर आप कहां से अहिंसक होंगे। पृथ्वी कवचित है इसलिए आपको भी कवचित होना पड़ेगा। वैसे भी आप कवचित हैं। आप का मस्तिष्क हड्डी के मजबूत खोल में सुरक्षित हैं। इस खोल के ऊपर बाल हैं, त्वचा है, मांस है इसके पश्चात् भी अनेकों कवच हैं। सम्पूर्ण मस्तिष्क एक विशेष प्रकार के तरल पदार्थ के अंदर व्यवस्थित है। मस्तिष्क की प्रत्येक कोशिका प्रतिक्षण सुरक्षात्मक आदेश प्रसारित कर रही है, प्रत्येक कोशिका स्वयं की रक्षा के लिए इन्द्रियों को निर्देशित कर रही है और भी न जाने क्या-क्या अज्ञात रसों का स्त्राव भी प्रतिक्षण हो रहा है। पूरा का पूरा शरीर प्रतिक्षण समग्र रक्षा प्रणाली से युक्त है आप सो रहे हैं फिर भी आपकी रक्षा प्रणाली क्रियाशील है वह आपके आस-पास मौजूद सूक्ष्म से सूक्ष्म कीटाणुओं से संघर्ष कर रही है ऐसी स्थिति में आप कहां से अहिंसक हुए। रक्त अगर जमना छोड़ दे तो फिर आप जी चुके। यह सब युद्ध नीति के अंतर्गत ही आता है। युद्ध की कोई नीति नहीं होती। युद्ध नीतियों पर नहीं लड़ा जाता। युद्ध का तात्पर्य ही आपात काल है अर्थात् मरोगे या मारोगे। दो में से एक ही होगा। शरीर अस्तित्व का प्रतीक है। अस्तित्व ही नहीं रहेगा तो फिर बड़ी-बड़ी बातें बकवास हैं। यह पृथ्वी जीवन के आयामों से पटी पड़ी है। चलोगे तो जीव मरेंगे। खुद मरोगे तो भी जीवों के ही काम आओगे। मल-मूत्र विसर्जन करोगे तो वह भी जीव ही खावेंगे। पंचभूतीय जीवन बड़ा ही विचित्र है। यही शक्ति आराधना का रहस्य है। शक्ति की आराधना प्रत्येक जीव करता है। आसमान में बिजली कड़केगी तो विद्युत उत्पन्न होगी। वर्षा के जल के साथ यही विद्युत नदियों की धाराओं में आ जायेगी। नदी की धाराओं से मनुष्य पुनः बिजली प्रकट कर लेगा फिर बैठ कर इसी विद्युत को खायेगा। पंखों की हवा के रूप में, प्रकाश के रूप में एवं कल-कारखानों में उत्पादित वस्तुओं के रूप में इत्यादि-इत्यादि।

खाना तो बिजली ही है। यही शक्ति आराधना है। मनुष्य कुल मिला जुलाकर बिजली, पानी, हवा, प्रकाश और भूमि तत्व ही संचित करता है। चाहे तरीका कोई भी हो। जब तक उसमें संचय करने की प्रवृत्ति विद्यमान रहती है वह क्रियाशील रहता है परन्तु जैसे ही वह इन का संचय करने में निष्पत्त होता जाता है आत्मा या प्राण उसके शरीर को छोड़ दूसरा शरीर धारण कर लेती है। सारा युद्ध शक्ति संचय की प्रवृत्ति के पीछे है। किसी का भी मन शक्ति संचय से नहीं भरता। हर प्राणी शक्ति को लेकर असुरक्षित है। प्रत्येक जीव शक्ति को लम्बे से लम्बे समय तक आबद्ध करके रखना चाहता है परन्तु शक्ति आबद्ध ज्यादा समय तक नहीं होती है। शक्ति क्षेत्र ही समस्त युद्ध का कारण है। कौरवों ने पाण्डवों को 5 गाँव देने से मना कर दिया स्वयं भोग करना चाहते थे राज्य और प्रशासन रूपी शक्ति का। यही धर्म और अधर्म की व्याख्या है। यही शोषण की परिभाषा है। स्वयं भोग करने की क्षमता न होना परन्तु बलात् शक्ति के भोग से दूसरों को रोकना। कितनी विहंगम स्थिति है। अगर जीव का बस चले तो दूसरे जीव को श्वास लेने से भी रोक दे। श्वास लेने की भी दुकान लगा ले। श्वास ही एक ऐसी प्रक्रिया बची है जिसे जीव अभी अपनी दुकान में नहीं सजा पाया है। पानी पीने से तो रोकता है, भोजन से तो अमृत काल से रोक रहा है। भूमि तो पूरी तरह से बाधित कर दी है। बस बची है तो सिर्फ श्वास लेने की प्रक्रिया। ईश्वर करे भोगियों को ये शक्ति कभी भी प्राप्त न हो। युद्ध क्षेत्र को कृष्ण ने महायज्ञ के उच्चारण से विभूषित किया है। युद्ध क्षेत्र में उन्होंने कर्म की आहुतियां डालने के लिए अर्जुन से आह्वान किया है। प्रत्येक मनुष्य योद्धा है। युद्ध उसका सर्वश्रेष्ठ कर्म है उसे युद्ध क्षेत्र निरंतर प्राप्त होते रहना चाहिए और प्राप्त न हो तो उसे युद्ध क्षेत्र की तरफ गमन करना चाहिए। युद्ध क्षेत्र चाहे परोक्ष हो, अपरोक्ष हो इस बात का कोई महत्व नहीं है। जीवन के जितने भी क्षण आप युद्ध क्षेत्र में व्यतीत करेंगे वहीं पर सम्पन्न शक्ति आराधना आपकी आत्मा को गति प्रदान करेगी ऊर्ध्वगामी होने में। मनुष्य के पास एकमात्र अस्त्र है कर्म का एवं इसी के द्वारा विभिन्न शस्त्रों का प्रादुर्भाव होगा। स्थूल शस्त्रों से कुछ नहीं होता है। स्थूल शस्त्र विजय नहीं दिला सकते। ऐसा होता तो सभी असुर विजयी हो गये होते। दुर्योधन

के पास कृष्ण की सेना थी। अनेकों राजाओं से उसकी संधि थी गुरु भी उसी की तरफ थे। गुरु पुत्र भी उन्हीं की तरफ थे फिर भी पाण्डव विजयी हुए। कारण सीधा सा है पाण्डवों के पास युद्धनीति थी कृष्ण के रूप में। कृष्ण दैव दुर्लभ युद्ध नीति का प्रतीक हैं जितनी अच्छी व्याख्या कृष्ण ने युद्ध नीति की की है उतनी न तो हुई है और न ही होगी। कृष्ण की युद्ध नीति कहती है संस्थान, व्यवस्था, तंत्र, शक्ति, बुद्धि, युक्ति से भी ऊपर नारायण हैं। नारायण जिस तरफ होंगे, सत्य जिस तरफ होगा विजय उसी की होगी। एक अकेला व्यक्ति असंख्य अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित सेना को परास्त करने में सफल हो गया। अकेले कृष्ण ने सभी को परास्त कर दिया। तभी तो वे जगदीश्वर कहलाये। जगत के ईश्वर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के ईश्वर। यह प्रमाण-पत्र हर किसी को नहीं मिल जाता। नारायण की महिमा दिखाने के लिए ही उन्होंने महाभारत का मेला लगाया। कुरुक्षेत्र में खुलेआम सभी को निमंत्रण पत्र भेजा, सभी को अपनी शक्ति साधना अजमाने का पूरा मौका दिया। समस्त ब्रह्माण्ड में पाञ्चजन्य शंख को गुंजित किया। सभी दैव शक्तियों को भाग लेने का आमंत्रण दिया। जितने भी ऋषि मुनि थे सबने अपनी दृष्टि कुरुक्षेत्र की तरफ केन्द्रित कर दी और फिर शुरू हुआ 18 दिन का दम साधके देखने वाला तमाशा। अंत क्या हुआ ? सारी युद्ध नीतियाँ, सारे ताम-झाम, सारे शस्त्र-अस्त्र, संधियाँ इत्यादि सबके सब धरे रह गये। अर्जुन से स्वयं कह दिया कोई किसी का नहीं होता सारे संबंध घटिया हैं। माया मोह में मत उलझ, आँखों में आँसू मत ला। हार जीत से ऊपर उठ, धर्म और ज्ञान की बातें एक कोने में रख दे। स्वयं के लिए युद्ध मत कर फल को भूल जा। हिंसा, अहिंसा, पाप, पुण्य दो कौड़ी की बातें हैं। तेरी औकात कुछ भी नहीं है। न तू कुछ लाया है न कुछ ले जायेगा। निष्काम ब्रत, कायरता छोड़। जीवन के प्रपञ्चों में प्रतिक्षण क्षीण हो रही शक्ति को रोक और पूर्ण तन्मयता के साथ युद्ध कर। वह भी सिर्फ मेरे लिए। यही विधान है युद्ध क्षेत्र में उतरने का। अब तक जो कुछ भी पढ़ा है, सीखा है वह सब युद्ध क्षेत्र में काम नहीं आयेगा। युद्ध क्षेत्र में सिर्फ अनिश्चितता ही अनिश्चितता है। प्रतिक्षण सम्भावनायें बदलती हैं। युद्ध क्षेत्र सोचने का विषय नहीं है। वह कर्म सम्पादित करने का स्थान है यहां पर ही पता चलता है

कि कौन वास्तविक मित्र है, कौन पीठ में छुरा घोपने वाला। युद्ध क्षेत्र में प्रतिबद्धताएँ बदलती हैं हर क्षण। क्षदम क्षेप युद्ध क्षेत्र में नहीं चलते। खोटे सिक्के भी युद्ध क्षेत्र में विशेष मूल्य रखते हैं। शिखण्डी भीष्म की मृत्यु का कारण बना। धृष्टद्युम्न ने द्रोण का सर काट डाला। कुन्ती ने माता होते हुए भी कर्ण से कवच और कुण्डल माँग लिए। कृष्ण ने भी शपथ तोड़ दी। रथ का पहिया उठाकर भीष्म को मारने दौड़े। अश्वस्थामा ने गुरु पुत्र होते हुए भी जघन्य पाप किया। उत्तरा के गर्भस्थ शिशु पर ब्रह्मास्त्र का प्रहार कर दिया। युद्ध क्षेत्र ही वह क्षेत्र है जहां पर साक्षात् देव दर्शन होते हैं। महाकाली साक्षात् नृत्य करती हैं, कृष्ण विराट स्वरूप दिखाते हैं। चण्डी चण्डिकास्त्र उत्पन्न करती हैं, सभी सूक्ष्म शक्तियाँ द्वैत रूप धारण करती हैं केवल युद्ध क्षेत्र में। जहाँ सभी एकत्रित हो जायें वहां कैसी नीति। जिसका अनुमोदन ऋषि-मुनि भी करें यह क्षेत्र तो नीति से परे ही होता है। नीतियाँ युद्ध क्षेत्र में नहीं चली हैं। नैतिकता युद्ध क्षेत्र का विषय नहीं है। समझाना बुझाना, गिड़गिड़ाना युद्ध क्षेत्र में नहीं चलता। समझाने-बुझाने से दुनियाँ सुधर जाये तो फिर युद्ध हो ही नहीं। कृष्ण भी गये थे संधि करने कौरवों से। क्या वे माने? समझाने से बात बन जाती तो फिर महाभारत होता ही नहीं। दिन को भी रात में बदल दिया था कृष्ण ने जयद्रथ के वध के समय। कपटी कर्ण को कपट से ही मारा गया। युद्ध योग क्षेत्र है। योग क्षेत्र में योगेश्वर योगीराज श्रीकृष्ण हैं यही गीता का संदेश है। आप सुरक्षित क्यों हैं? क्योंकि प्रतिक्षण योद्धाओं की फौज अपने विभिन्न प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों से आपकी सुरक्षा के लिए तत्पर है। माता नौ महीने आपको गर्भ में सुरक्षित रखे हुए हैं इसीलिए वह प्रथम पूजनीय है। कृष्ण ने भी अर्जुन से सर्वप्रथम मातृ उपासना के लिए ही कहा है। प्रथम रक्षक माता ही है जब तक आप स्वयं की रक्षा के लिए समर्थ नहीं हो जाते आपका भरण-पोषण आपके माता-पिता करते हैं नहीं तो आप भूखे मर जाओगे। वे आपके लिए युद्ध करते हैं। ऐसा ही आपको भी करना होगा। श्री कृष्ण जगदीश्वर कहलाए तो उन्होंने गोपों की इन्द्र से रक्षा की। असुरों को मारा। पिता की रक्षा की। मथुरा को कंस से मुक्त कराया, पाण्डवों को शोषण से बचाया। द्रोपदी की लाज बचाई। जरासंध को मारा इत्यादि-इत्यादि न जाने कितने युद्ध किए। काशी

जलाकर राख कर दी। उनके हाँथ घुटने तक लम्बे थे हर प्रकार से शक्ति साधना सम्पन्न थे। शरीर कसा हुआ था हाँथी की पूँछ पकड़कर खींचते थे तो हाँथी चिंघाड़ उठता था मीलों तक शत्रु के पीछे शस्त्र लेकर दौड़ते थे। 72 दिन तक लगातार अकेले युद्ध करते रहते थे। सदैव युद्धरत रहे सत्य के लिए। युद्ध क्षेत्र ही उनका वास्तविक धर्म क्षेत्र है। परशुराम ने क्षत्रियों से अनेकों बार युद्ध किया। ब्राह्मण होते हुए भी फरसा लेकर निकल पड़े। क्षत्रियों के दूषित रक्त से अनेकों कुण्ड बना डाले। अनेकों बार पृथ्वी को क्षत्रिय विहीन कर दिया। क्षत्रिय से तात्पर्य किसी जात विशेष से न होकर राज्य करने वाली शक्ति से है और राज्य करने वाली शक्ति ही भ्रष्ट और शोषण करने वाली हो जायेगी तो फिर परशुराम को तो आना ही पड़ेगा शोषितों को मुक्त कराना ही धर्म है इसलिए वे विष्णु अवतार माने गये। असुर शक्तियाँ सदैव कोशिश करती हैं कि वे किसी न किसी प्रकार नियंत्रण व्यवस्था में प्रविष्ट हो जायें और इसके बाद शोषण करने के सभी दरवाजे खुल जाते हैं। समस्त शक्ति भण्डारों पर उनका कब्जा हो जाता है। बस यहीं से युद्ध शुरू होता है सुर और असुर के बीच। क्षत्रियत्व नियंत्रण व्यवस्था का प्रतीक है इसमें दुष्ट शक्तियाँ घुस ही जाती हैं। चारों तरफ हाहाकार मच ही जाता है। फ्रांस में क्या हुआ? एक वर्ग विशेष ने पूरे राष्ट्र पर कब्जा जमा लिया। जनता शोषित हो गई। अंत में रक्त रंजित क्रांति हुई जितने भी शासक वर्ग में लोग थे उन सबको गिलोटिन पर चढ़ा दिया गया। सोवियत गणराज्य वहाँ के शासक वर्ग से प्रताड़ित हो गया। वहाँ भी रक्त रंजित क्रांति हुई। जार के वंशजों को खड़ा करके गोली मार दी गई। यही हाल द्वितीय विश्वयुद्ध के समय हुआ। यहूदियों ने समस्त यूरोप विशेषकर जर्मनी की आर्थिक व्यवस्था पर नियंत्रण कर लिया। जर्मनी का आम नागरिक शोषित हो गया रोटी के लिये भी भूखे मरने लगा। अचानक हिटलर का उदय हो गया। उसने यहूदियों के साथ जो किया उसे सारी दुनियाँ जानती है किसी भी युद्ध में कोई नीति नहीं होती है। अत्याचार किस सीमा तक होंगे बयान नहीं किया जा सकता। मृत्यु कैसे प्राप्त होगी इसका निर्धारण भी मुश्किल

है, कौन किस हद तक गिरेगा कहना मुश्किल है। चंगेज खाँ ने दिल्ली पर आक्रमण किया पैसा तो लूटा ही साथ में लाखों स्त्रियों, पुरुषों, बच्चों और बूढ़ों का भी रक्त बहाया। न जाने कितनी स्त्रियाँ अपने साथ ले गया। मुगलों ने सिक्खों को भरे बाजार आरियों से काटा। शरीर को बीच से चीर दिया। आज जो अहिंसा की बातें करते हैं जो मुनि दिगम्बर स्वरूप में भारत वर्ष में घूमते हैं पूर्ण स्वतंत्रता के साथ विचरित होते हैं वे एक दिन के लिए भी क्या किसी इस्लामी मुल्क में जाकर प्रवचन दे सकते हैं। दूसरे ही क्षण उन्हें फांसी पर लटका दिया जायेगा। इस पृथ्वी पर एक से एक हत्यारे मानव यंत्र हुए हैं। किसी भी देश का इतिहास उठाकर देख लें उसमें युद्धों का ही महिमा मण्डन है। सभी नायक युद्ध भूमि से ही उपजे होंगे। राष्ट्रों का निर्माण ही युद्धों से होता है। सभी धर्म, ग्रंथ, पुराण इत्यादि युद्ध आधारित ही हैं। युद्ध ब्रह्माण्डीय कर्म है। हमारी पृथ्वी भी ब्रह्माण्ड का एक हिस्सा है। उसके पास भी अपनी युद्ध प्रणाली है। इसी युद्ध प्रणाली में चन्द्रमा भी लगा हुआ है। चन्द्रमा आज पृथ्वी की रक्षा प्रणाली से अलग हो जाय तो दूसरे ही क्षण टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा। इसे कहते हैं आस्था। पृथ्वी और चन्द्रमा के बीच कोई रस्सी तो बंधी हुई नहीं है फिर भी आस्था है। प्रतिदिन चन्द्रमा के दर्शन होते हैं। यह मालूम होते हुए भी कि उस पर गड्ढे हैं, ऊबड़-खाबड़ है पृथ्वी रूपी जीवन शून्य है फिर भी वह हमें सुंदर लगता है, शीतलता देता है। वह आस्था का केन्द्र है। आस्था नहीं टूटनी चाहिए सत्य कुछ और होता है। आस्था के लिए कुछ दूरी जरूरी है। कृष्ण भी सामान्य मनुष्यों की तरह नित्य कर्म, सामान्य कर्म सम्पन्न करते थे। इन सबसे हमें क्या? वास्तविक कर्म ही मुख्य है। वह कर्म है उनका सत्य बोलने का, एक दिशा प्रदान करने का। छोटी-मोटी नीतियों से क्या होगा सत्य के लिए लड़ें। विजय श्री दिलवाई, शोषितों को मुक्त करवाया। धर्म की स्थापना की बस यही युद्ध नीति है। बांकी सब नीति विचारणीय भी नहीं है। युद्ध तो युद्ध है युद्ध स्वयं नीति बनाता है। नीतियों पर युद्ध नहीं चलता।

✽

तांत्रिक क्रियाओं, अभीष्ट सिद्धि, वशीकरण तथा औषधीय प्रयोजनों में प्रयुक्त होने वाली परम चैतन्य शिव क्षेत्र पचमढ़ी के पवित्र वनों से प्राप्त दुर्लभ जड़ी-

हाशाजीड़ी

मूल्य 201 रुपये

यह जड़ी अगणित विशेषताओं से युक्त होने के कारण आध्यात्मिक व गृहस्थ साधकों के लिये अत्यधिक उपयोगी है। इस जड़ी में साक्षात् चामुण्डा देवी का वास है। यदि यह जड़ी आपके पास है तो कोई भी प्राणी आपके खिलाफ जा ही नहीं सकता साथ ही भूत-प्रेतादि से भी रक्षा होती है।

विशेष : इस दुर्लभ जड़ी को प्राप्त कर किसी भी शुभ मुहूर्त में पूजा स्थल में स्थापित कर नियमित रूप से धूप-दीप आदि दिखाते रहें जब आवश्यकता हो अपने जेब में रखकर जायें।

सम्पर्क

साधना सिद्धि विज्ञान

फ्लेट नं. 1,2 मिनाल व्यू-॥ पंजाबी बाग भोपाल

दूरभाष : (0755) 576346, 591143

यश, समृद्धि तथा महालक्ष्मी की निकटता

प्राप्त करने का अमोघ साधन

घावन रामेश्वरम् के तट पर प्राप्त दुर्लभ

दक्षिणवर्ती शंख

मूल्य 501 रुपये

सम्पर्क

साधना सिद्धि विज्ञान

फ्लेट नं. 1,2 मिनाल व्यू-॥ पंजाबी बाग भोपाल

दूरभाष : (0755) 576346, 591143

विजय प्राप्त का अमोघ साधन चण्डी कवच

जीवन एक युद्ध क्षेत्र है। द्वंद, प्रतिस्पर्धा, मान, सम्मान आदि विभिन्न क्षेत्रों में विजय प्राप्त करना ही मानव जीवन का ध्येय है और इन सभी क्षेत्रों में विजय प्राप्त करना तभी संभव है जब आप विभिन्न आयुधों से सुसज्जित हों, आपको किसी तरह के आघात का भय न हो अर्थात् आप कवचित हों

अध्यात्म का पथ बहुत विचित्र है। जीवन के किसी भी मोड़ पर जहाँ तमाम भौतिक संसाधन बौने हो जाते हैं वहीं से अध्यात्म का क्षेत्र आरम्भ होता है। मनुष्य स्वभावतः स्वार्थी तथा अहम् की भावना से ग्रसित होता है। जब तक उसके सभी कार्य सामान्य ढंग से चलते रहते हैं तब तक न तो उसे दैवीय शक्तियों की याद आती है और न ही गुरु की जरूरत महसूस होती है किन्तु जब वह चारों तरफ से विपत्तियों से घिर जाता है और स्वयं को असहाय महसूस करता है तब उसके ज्ञान चक्षु खुलते हैं और वह सार्वभौमिक परमसत्ता के समक्ष नतमस्तक होता है। किसी ने ठीक ही कहा है कि-

दुःख में सुमिरन सब करै सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करै तो दुःख काहे होय॥

कहने का आशय यह है कि जब एक न एक दिन

हमें ईश्वर की शरण में जाना ही है तो फिर क्यों हम अपने जीवन के बहुमूल्य क्षण तथाकथित आधुनिकता के नाम पर नष्ट करें। क्यों न हम समस्त आयुधों व दिव्य अस्त्रों तथा शक्तियों को प्रदान करने वाली आदि शक्ति



महामाया चण्डी की कृपा प्राप्त करने का जतन करें। क्यों न हम भगवती से अभेद्य रक्षा कवच प्राप्त करें?

मनुष्य ही नहीं देवता और दानव भी विभिन्न आदि शक्तियों की कृपा से ही अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सफल होते हैं। स्वयं भगवान राम ने लंका विजय से पूर्व रामेश्वरम् में शिवलिंग का निर्माण कर पूजन किया और भगवान भोलेनाथ से विजय प्राप्ति का आशीर्वाद प्राप्त किया दिव्य शक्तियों से सुसज्जित होने के उपरान्त ही उन्होंने लंका पर चढ़ाई की महाभारत युद्ध के पूर्व गाण्डीयधारी अर्जुन को भी योगी योगेश्वर श्रीकृष्ण के परामर्श से पशुपतास्त्र व अन्य दिव्यास्त्रों की प्राप्ति के लिये भगवान शंकर की शरण में जाना पड़ा एवं उनसे

युद्ध भी करना पड़ा। भगवान् भोलेनाथ ने पहले तो भील का वेष धारण कर अर्जुन की शक्ति परीक्षा ली उसके अहंकार को नष्ट किया तब कहीं जाकर अर्जुन को दिव्य अस्त्र प्रदान किये जिसके सहारे महाभारत युद्ध में उसे विजय श्री हासिल हुई।

अपनी तपस्या व वरदान के बल पर जब-जब आसुरी शक्तियों ने स्वर्ग लोक पर आक्रमण किया या पृथ्वी लोक पर अत्याचार आरम्भ किया तब-तब देवताओं व निरीह प्राणियों की आर्त पुकार सुनकर आदिशक्ति भगवती दुर्गा ने ही भिन्न-भिन्न स्वरूपों में अवतार लेकर असुरों का वध किया। ऐसी आदि शक्ति माँ भगवती जिनकी आराधना स्वयं त्रिदेव भी करते हैं उनके कवच से कवचित् मनुष्य निर्भयता पूर्वक कहीं भी विचरण कर सकता है इसमें संदेह नहीं है।

यह ऐसा दुर्लभ कवच है जिसे धारण करने अथवा पूर्ण श्रद्धा भक्ति के साथ इसका पाठ करने मात्र से न सिर्फ मनुष्य जीवन के हर क्षेत्र में विजय प्राप्त करता है बल्कि मरणोपरान्त दुर्लभ परमधाम को प्राप्त करता है शास्त्रों में इस दुर्लभ कवच की महिमा का बखान करते हुये कहा गया है कि-

यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसंध्यं श्रद्धयान्वितः ।

दैवीकलाभवेत्स्य त्रैलोक्ये पराजितः ॥

अर्थात् जो तीनों संध्याओं के समय इस कवच का पाठ करता है उसे दैवीकला की प्राप्ति होती है तथा उसे तीनों



लोकों में कोई पराजित नहीं कर सकता।

साधकों को हर बार ऐसे दुर्लभ व दिव्य प्रभावकारी स्तोत्र, मंत्र आदि उपलब्ध कराना ही इस पत्रिका का ध्येय रहा है इसी क्रम में यह दुर्लभ कवच मूलतः वर्णित है जिसका पूर्ण मनोयोग से नियम पूर्वक पाठ करने से साधक की समस्त मनोकामनायें पूर्ण हो जाती हैं।

पाठ विधि-

साधक को चाहिए की वह स्नानादि नित्य क्रियाओं से निवृत्त होकर स्वच्छ आसन पर बैठे। पूजा स्थल पहले से ही पवित्र होना चाहिए। पूजन के लिए आवश्यक समस्त सामग्री अपने पास रख लें। अपने सम्मुख किसी चौकी पर भगवती दुर्गा की प्रतिमा अथवा प्राण प्रतिष्ठित यंत्र

स्थापित कर लें तत्पश्चात् आचमन व पवित्रीकरण के बाद भगवती को आसन दें व स्नान कराकर यथा संभव पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन करें तत्पश्चात् निम्नानुसार विनियोग मंत्र पढ़कर कवच का पाठ आरम्भ करें-

विनियोग-

ॐ अस्य श्री चण्डीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिः
अनुष्टुप् छन्दः चामुण्डा देवता, अङ्गन्यासोक्तमातरो
बीजम्, दिग्बन्धदेवतास्तत्त्वम्, श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थं
सत्तत्त्वतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः।

॥ॐ नमश्चण्डिकायै॥

ॐ यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम्।
यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह॥
अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम्।
देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने॥
प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्॥
पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम्॥
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना॥
अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे।
विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गताः॥
न तेषां जायते किञ्चिदशुभं रणसंकटे।
नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं न हि॥
येस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते।
ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः॥
प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना।
ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी गरुडासना॥

माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखिवाहना।
लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया॥
श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृषवाहना।
ब्राह्मी हंससमारूढा सर्वाभरणभूषिता॥
इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः।
नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः॥
दृश्यन्ते रथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः।
शङ्खं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम्॥
खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च।
कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम्॥
दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च।
धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय वै॥
नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे।
महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि॥
त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनि।
प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता॥
दक्षिणेऽवतु वाराही नैऋत्यां खड्गधारिणी।
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी॥
उदीच्यां पातु कौमारी ऐशान्यां शूलधारिणी।
ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेदधस्ताद् वैष्णवी तथा॥
एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना।
जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः॥
अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता।
शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता॥
मालाधरी ललाटे च भुवौ रक्षेद् यशस्विनी।
त्रिनेत्रा च भुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके॥
शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोद्गारवासिनी।

कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शांकरी ॥
 नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका ।
 अधरे चामृतकला जिह्वायां च सरस्वती ॥
 दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे तु चण्डिका ।
 घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके ॥
 कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाचं मे सर्वमङ्गला ।
 ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी ॥
 नीलग्रीवा बहिःकण्ठे नलिकां नलकूबरी ।
 स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी ॥
 हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च ।
 नखाञ्जलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी ॥
 स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनः शोकविनाशिनी ।
 हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी ॥
 नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा ।
 पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिषवाहिनी ॥
 कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी ।
 जङ्घे महाबला रक्षेत्सर्वकामप्रदायिनी ॥
 गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी ।
 पादाङ्गुलीषु श्री रक्षेत्पादाधस्तलवासिनी ॥
 नखान् दंष्ट्राकराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी ।
 रोमकूपेषु कौबेरी त्वचं वागीश्वरी तथा ॥
 रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती ।
 अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी ॥
 पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा ।
 ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्वसंधिषु ॥
 शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा ।
 अहंकारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मधारिणी ॥

प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम् ।
 वज्रहस्ता च मे रक्षेत्राणं कल्याणशोभना ॥
 रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी ।
 सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेत्रारायणी सदा ॥
 आयू रक्षतु वाराही धर्म रक्षतु वैष्णवी ।
 यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनं विद्यां च चक्रिणी ॥
 गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके ।
 पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्या रक्षतु भैरवी ॥
 पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा ।
 राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता ॥
 रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु ।
 तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी ॥
 पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः ।
 कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति ॥
 तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः ।
 यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ।
 परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान् ॥
 निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः ।
 त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान् ॥
 इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम् ।
 यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः ॥
 दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः ।
 जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः ॥
 नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूताविस्फोटकादयः ।
 स्थावरं जङ्गमं चैव कृत्रिमं चापि यद्विषम् ॥
 अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि भूतले ।
 भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः ॥

सहजा कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा।
 अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः॥
 ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः।
 ब्रह्मराक्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः॥
 नश्यन्ति दर्शनान्तस्य कवचे हृदि संस्थिते।
 मानोन्नतिर्भवेद् राजस्तेजोवृद्धिकरं परम्॥
 यशसा वर्धते सोऽपि कीर्तिमण्डितभूतले।
 जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा॥
 यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम्।
 तावत्तिष्ठति मेदिन्यां संततिः पुत्रपौत्रिकी॥
 देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम्।
 प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः॥
 लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते॥ ॐ॥

विभिन्न वैदिक ग्रंथों में कवच पाठ के साथ अर्गला स्तोत्र और कीलक स्तोत्र के पाठ का विधान है किन्तु इनके क्रम के सम्बन्ध में मतभेद है चिदम्बर संहिता में पहले अर्गला फिर कीलक तथा अंत में कवच पाठ का विधान है जबकि योग रत्नावली के अनुसार-

कवचं बीजमादिष्टमर्गला शक्तिरुच्यते
 कीलकं कीलकं पाहु सप्त सत्या महामनो

अर्थात् पहले कवच रूपी बीज का फिर अर्गला रूपा शक्ति का तथा अंत में कीलक का पाठ करना चाहिए। यह क्रम सम्पूर्ण दुर्गासप्तशती का पाठ करने वालों के लिए है किन्तु सम्पूर्ण वैदिक विधि विधान से प्रतिदिन पाठ कर पाना आम गृहस्थ साधकों के लिए सम्भव नहीं है अतः कवच पाठ के उपरांत सिद्धि कुञ्जिका स्तोत्र का पाठ कर लेने से सम्पूर्ण पाठ का फल प्राप्त हो जाता है। कुञ्जिका पाठ के उपरांत क्षमा प्रार्थना कर भगवती को साष्टांग दण्डवत करें।

कुञ्जिका स्तोत्र

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्।
 येन मंत्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत्॥
 न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्।
 न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम्॥
 कुञ्जिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत्।
 अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम्॥
 गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति।
 मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम्।
 पाठमात्रेण संसिद्धयेत् कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्॥

अथ मन्त्रः

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे॥

ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल
 ज्वल प्रज्वल प्रज्वल

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं
 फट् स्वाहा

॥ इति मन्त्रः॥

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि।
 नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि॥
 नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनि॥
 जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे।
 ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका॥
 क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते।
 चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी॥
 विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि॥
 धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी।
 क्रां क्रीं कूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु॥

हुं हुं हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी।
 भ्रां भ्रीं भूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः॥
 अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं,
 धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा।
 पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा॥
 सां सीं सूं सप्तशती देव्या मंत्रसिद्धिं कुरुष्व मे,
 इदं तु कुञ्जिकास्तोत्रं मंत्रजागर्तिहे तवे।
 अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति॥
 यस्तु कुञ्जिकया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत्।
 न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा॥

॥ कुञ्जिकास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

क्षमा प्रार्थना

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
 दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि॥
 आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
 पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि॥
 मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
 यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे॥
 अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत्।
 यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः॥
 सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके।
 इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु॥
 अज्ञानाद्विस्मृतेभ्रान्त्या यत्नूनमधिकं कृतम्।
 तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि॥
 कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे।

गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि॥

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।

सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि॥

परमेश्वरि! मेरे द्वारा रात-दिन सहस्रों अपराध होते रहते हैं। यह मेरा दास है- यों समझकर मेरे उन अपराधों को तुम कृपापूर्वक क्षमा करो।

परमेश्वरि! मैं आवाहन नहीं जानता, विसर्जन करना नहीं जानता तथा पूजा करने का ढंग भी नहीं जानता। क्षमा करो।

देवि! सुरेश्वरि! मैंने जो मंत्रहीन, क्रियाहीन और भक्तिहीन पूजन किया है, वह सब आपकी कृपा से पूर्ण हो।

सैकड़ों अपराध करके भी जो तुम्हारी शरण में जा जगदम्ब कहकर पुकारता है, उसे वह गति प्राप्त होती है, जो ब्रह्मादि देवताओं के लिए भी सुलभ नहीं है।

जगदम्बिके! मैं अपराधी हूँ, किन्तु तुम्हारी शरण में आया हूँ। इस समय दया का पात्र हूँ। तुम जैसा चाहो, करो।

देवि! परमेश्वरि! अज्ञान से भूल से अथवा बुद्धि भ्रान्त होने के कारण मैंने जो न्यूनता या अधिकता कर दी हो, वह सब क्षमा करो और प्रसन्न होओ।

सच्चिदानन्द स्वरूपा परमेश्वरि! जगन्माता कामेश्वरि! तुम प्रेम पूर्वक मेरी यह पूजा स्वीकार करो और मुझ पर प्रसन्न रही।

देवि! सुरेश्वरि! तुम गोपनीय से भी गोपनीय वस्तु की रक्षा करनेवाली हो। मेरे निवेदन किये हुए इस जप को ग्रहण करो। तुम्हारी कृपा से मुझे सिद्धि प्राप्त हो।

✽

साधना में सफलता, अभीष्ट सिद्धि तथा लौकिक व
परलौकिक सुखों की प्राप्ति हेतु अवश्य प्राप्त करें
समस्त पाप, ताप, शाप और गुप्त पापों के निवारण तथा
देवाधिदेव महादेव की कृपा प्राप्ति का अमोघ साधन
शुभ मुहूर्त में दिव्यतम वैदिक मंत्रों व दुर्लभ रसेश्वरी
विद्या द्वारा निर्मित

पारव शिवलिंग



मूल्य 1100/-

सम्पर्क

साधना सिद्धि विज्ञान

फ्लेट नं. 1,2 मिनाल व्यू-॥ पंजाबी बाग भोपाल

दूरभाष : (0755) 576346, 591143

नोट: उपरोक्त सामग्री मनीआर्डर अथवा ड्राफ्ट द्वारा निर्धारित राशि
(20 रुपये डाक व्यय सहित) भेजने पर ही उपलब्ध हो सकेगी।

युद्ध कला

प्राचीन भारत की आर्य संस्कृति में युद्ध को अत्यधिक महत्व दिया गया है जितने भी आर्य ऋषि हुए हैं वे सबके सब अपने जमाने में अद्वितीय योद्धा रहे हैं या इसे ऐसे भी कह सकते हैं कि योद्धा से वे ऋषि के रूप में परिवर्तित हुए। आर्यों में वे ही महामानव पूजित एवं प्रतिष्ठित हुए हैं जिन्होंने अपने जीवन में युद्ध को सम्पूर्ण निष्ठा के साथ सम्पन्न किया है। जितने भी आर्य कुल निर्मित हुए हैं उनके प्रथम वंशज ने सदैव विजय श्री पायी है। युद्ध करना एक बात है एवं विजय प्राप्त करना दूसरी बात। मूर्खता पूर्वक किया गया युद्ध, अधर्म के लिए किया गया युद्ध, हारने के लिए किया गया युद्ध केवल हाहाकार कलंक और वंश नाश का परिचायक बनकर रह जाता है। इस प्रकार के युद्ध से सर्वस्व ही मिट जाता है। युद्ध में क्रोध, अहंकार इत्यादि हार के कारण बनते हैं। गर्म दिमाग से युद्ध नहीं किया जाता। युद्ध लम्बे चलते हैं। युद्ध संकल्प शक्ति पर चलते हैं। युद्ध तो 20 हजार वर्ष तक चलते हैं। युद्ध के लिए संकल्प ऐसे ही लिए जाते हैं यही आर्य पद्धति है। आर्य पद्धति में युद्ध शत्रु की इच्छा अनुसार नहीं लड़ा जाता। आर्य पद्धति में युद्ध का क्षेत्र, युद्ध का समय एवं युद्ध का परिणाम भी निर्धारित करने की क्षमता है। आर्य पद्धति में युद्ध अपनी शर्तों पर लड़ा जाता है शत्रु की शर्तों पर नहीं। इस प्रकार का युद्ध कौन लड़ सकते



हैं? वही जो कि ब्रह्म ज्ञानी हो, जिन्हें शक्ति उपासना के सूक्ष्म से सूक्ष्म रहस्य भी मालुम हों, जो साधनात्मक हों, जिन्होंने सभी देव शक्तियों की साधनायें सम्पन्न की हों, जो सभी तत्वों को साधने की क्षमता रखते हों, जिनके

यहां नित नये अनुसंधान होते हो एवं शत्रु की प्रत्येक गतिविधि पर सूक्ष्मता से नजर रखी जाती हो बगुलामुखी साधना का क्या मतलब है? इस साधना का तात्पर्य है कि शत्रु आपस में लड़ मरें। उनमें फूट पड़ जाये। आपके पास आने से पहले ही क्षीण हो जायें। स्वयं विकार ग्रस्त हो जायें। अगर शत्रु विकार ग्रस्त नहीं हुआ तो फिर वह ज्यादा शक्ति से सम्पुट हो जायेगा। शत्रु यदि रोग ग्रस्त हो जाता है, दरिद्र हो जाता है, मति भ्रम से ग्रसित हो जाता है तो फिर आपकी जीत तो वैसे ही हो गयी। योगी कौन है? साधक कौन है? यह सर्वप्रथम अच्छे से समझ लिया जाय। जो नित्य नूतन है वही योगी है, वही साधक है। जिस प्रकार योगी प्रातः काल में सम्पूर्ण मल का विसर्जन कर देता है उसके उदर में नवीन भोजन लेने से पहले किसी भी प्रकार का मल नहीं होता है। उसी के लिए वर्तमान भोजन अमृत के समान है। यही शक्ति साधना का मूल बिन्दु है, तत्त्व चिंतन है। मल केवल उदर का विषय नहीं है। मल योगी को हटाना होता है अपने मानस पर से। पुराने विचार, सड़े-गले सिद्धान्त इत्यादि भी मल हैं। इनके कारण नवीन विचार, नवीन सोच इत्यादि प्रदूषित हो जाते हैं। घिसी पिटी सोच, तुरंत नकारात्मक निर्णय लेने की क्षमता यह सब मल अवरोधित विषय का प्रतीक है। सारा जीवन एक ही प्रकार के विचार चलना, कुछ नया न सोच पाना, न पढ़ पाना, न ग्रहण कर पाना हार का प्रतीक है। यह तो वही बात हुई कि राष्ट्र की रक्षा प्रणाली में घिसे-पिटे शस्त्रों का ही उपयोग करते रहें। परिवर्तन अवश्यम्भावी है। मल का निष्कासन प्रति क्षण मनुष्य के प्रत्येक कोष से होते रहना चाहिए तभी व्यक्ति श्रेष्ठ योद्धा बन सकता है। कल क्या था वह आज नहीं चलना चाहिए। जैसे-जैसे मल न्यूनतम बनता जायेगा आप साधकों या उपासकों में गिने जाने लगेंगे। देव शक्तियों में मल का उत्पादन अत्यन्त ही अल्प होता है। अर्जुन महाभारत के युद्ध से पहले मुँह लटकाकर, दुःखी एवं माया मोह में ग्रसित होकर बैठा हुआ है। यह सब उसके मानस से उत्पादित होने वाला कचरा ही है। अधिकांशतः व्यक्ति अपने जीवन में दो कारणों से असफल होते हैं पहला कारण मल का उत्पादन और दूसरा कारण मल का उचित तरीके से निष्कासन न होना। पहले कारण पर आते हैं। मल खाओगे, कचरा ग्रहण करोगे एवं बुद्धि, मानस और सोच इत्यादि को कचराघर बनाओगे तो लोग उसमें कचरा

ही भरेंगे। धीरे-धीरे कचरा खाने की आदत पड़ जायेगी। जब कचरा खाओगे तो कचरा ही निकलेगा। सर्वप्रथम मल का भक्षण छोड़ना होगा। घटिया लोगों, कुसंगति, पथभ्रष्टों को त्यागना होगा। इसके पश्चात् उन स्त्रोतों को दूढ़ना होगा जहां से अमृत वाणी, अमृत वचन प्रस्फुटित हो रहे हों। उन्हें ग्रहण करने की आदत डालनी होगी। यही साधक की पहचान है। कृष्ण की वाणी को अमृत वाणी कहा गया है। उन वाणियों को सुनने से क्या फायदा जो कि मस्तिष्क के अंदर भटकाव, काम, क्रोध और लिप्तता इत्यादि का उत्पादन करें। उन व्यक्तियों के बीच उठने बैठने से क्या फायदा जो मस्तिष्क को मल प्रदान करते हैं। अगर आप किसी जेल में या अपराधियों के बीच जाओगे तो वह कुछ दिनों में आपको भी अपराधी बना देंगे। उनके दिमाग में अपराधों का ही उत्पादन होता है। वेश्या किसी को प्रेम नहीं कर सकती वह सिर्फ भ्रष्ट करेगी। कम से कम इतनी प्रारम्भिक समझ एवं संस्कार तो होनी ही चाहिए एक साधक में सफल होने के लिए। इस तरह से मल का उत्पादन न्यून होगा। दूसरी स्थिति में साधक को देव शक्तियों की आराधना करनी होगी। देव शक्तियां क्या हैं? देव शक्तियां वही हैं जिनमें कि मल का उत्पादन शून्य होता है, जिनके सानिध्य में अमृत की प्राप्ति साधक को होती है। अमृतत्व की प्राप्ति तभी संभव है जब क्लेश, द्वंद और अराजकता से मुक्ति प्राप्त हो। हम माँ भगवती की उपासना करते हैं इससे साधक को यह नहीं समझ लेना चाहिए कि सवा लाख मंत्र जप लेने से माता साक्षात् प्रकट हो जायेंगी। यह स्थिति तो बाद में आती है। जब आयेगी तब आयेगी। इसके लिए अत्यधिक मानसिक, शारीरिक एवं आध्यात्मिक विशुद्धता होनी चाहिए। अधिकांशतः अनुभूतियाँ अशुद्धता के कारण साधक को जल्दी नहीं हो पाती हैं। मल युक्त मस्तिष्क देव शक्तियों को आसानी से अनुभूत नहीं कर सकता है। जैसे ही व्यक्ति ध्यान करता है उसे अभूलील विचार, क्रोध, कुण्ठा, भूत-प्रेत इत्यादि अनुभूत होने लगते हैं। ध्यान की तीव्रता उसके अंदर पड़े कचरे को निकालने लगती है। नाना प्रकार के भय विभिन्न स्वरूपों में अनुभूत होने लगते हैं। सर्वप्रथम इन सबका निष्कासन होता है फिर साधना का बल साधक के शरीर में सूक्ष्म तत्त्व रूप में प्रकट होता है। शक्ति के आराधक के अंदर रोगों से लड़ने की क्षमता अत्यधिक बढ़ जाती है। यह है प्रारम्भिक मंत्र जापों का प्रतिफल। फिर धीरे-

धीरे उसके आस-पास का नकरात्मक वातावरण सुधरने लगता है कल तक जो लोग उसके विरोधी होते हैं वे भी उसके साधना बल से आकर्षित होने लगते हैं। इस प्रकार समय उपरांत वह साधना विशेष में सिद्धता हासिल करता है। विजयी वही होता है जो कि अंतिम योद्धा हो। अंतिम योद्धा बनने के लिए संघर्ष लम्बा होता है। देव शक्तियों की आराधना आर्य पद्धति में विजय श्री दिलाने में निर्णयात्मक भूमिका निभाती है। जीवन का प्रत्येक क्षेत्र प्रतिस्पर्धा से भरा हुआ है। आप साधना करें या न करें, आप साधनात्मक गुरु से जुड़े हों या न जुड़े हुए हों इसका कोई विशेष महत्व नहीं है यह आपका विषय है परन्तु आपका प्रतिस्पर्धी हो सकता है इन दिव्य शक्तियों से युक्त हो बस यही पर फर्क पड़ जाता है। यहीं पर हार-जीत निश्चित हो जाती है। आप प्रत्यक्ष योद्धा हैं परन्तु अप्रत्यक्ष रूप से अनेकों शक्तियां हर युद्ध में प्रत्यक्ष योद्धा की मदद करती हैं। युद्ध शक्ति सन्तुलन का खेल है। जमीन पर युद्ध कर रहे सिपाही की मदद वायु सेना भी करती है। उसे सामग्री प्रदान करने वाले दूसरे सैनिक होते हैं। उसके घर की देखभाल कोई अन्य कर रहा होता है। उसकी चिकित्सा भी कोई अन्य करेगा। उसे मार्ग निर्देशन कहीं और से प्राप्त होते हैं। यही योद्धा की पहचान है जो इन कलाओं में निपुण होगा वही वास्तविक योद्धा कहलायेगा। द्रोणाचार्य ने एक बार देखा कि अर्जुन रात्रि के अंधेरों में भी धनुष से लक्ष्य साध रहा है वे अत्यंत ही प्रसन्न हो गये और उन्होंने उसे इस पृथ्वी का सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर होने का आशीर्वाद दिया। लक्ष्य साधने के लिए प्रकाश ही आवश्यक नहीं है यह अर्जुन ने समझ लिया था। लक्ष्य को निशाना तो शब्द भेदी बाणों से भी बनाया जा सकता है। न्यूनतम प्रकाश में भी प्राणी अपना शिकार निपुणता से कर लेते हैं। इस पृथ्वी पर चीता सबसे तेज दौड़ने वाला प्राणी है वह कुछ ही सेकण्ड तेज गति से दौड़ सकता है। इन्हीं क्षणों के बीच में उसे शिकार की गर्दन दबोचनी होती है। उसके दाँत इस प्रकार से विकसित होते हैं कि वह शिकार की गर्दन में स्थित रीढ़ की हड्डी के एक विशेष भाग को ही क्षतिग्रस्त करते हैं और दूसरे ही क्षण शिकार निष्प्राण हो जाता है। द्रोणाचार्य ने अर्जुन की योग्यता से प्रभावित हो उसे ब्रह्मशीर नामक अस्त्र का रहस्य बतलाया और इस अस्त्र का रहस्य बतलाते समय उससे यह गुरु दक्षिणा ली कि अगर युद्ध के समय में भी तुम्हारे समक्ष खड़ा हूँ तो

तुम इस अस्त्र का प्रयोग करने से न चूकना। प्रत्येक शस्त्र की अपनी एक गरिमा है, अपना एक रहस्य है। विशेषकर आध्यात्मिक शस्त्रों में तो यह बात अत्यंत ही कठोरता के साथ लागू होती है। यही कारण है कि अयोग्य एवं कलंकित साधक चाहे कितनी भी साधनायें सम्पन्न कर लें उन्हें आध्यात्मिक शस्त्र सिद्ध ही नहीं होते हैं।

आध्यात्मिक शस्त्रों में तो इतनी ताकत है कि अगर भारत वर्ष के समस्त लोग मात्र एक बार सामूहिक रूप से, पूर्ण तन्मयता के साथ एक समय में गायत्री मंत्र का उच्चारण कर लें तो फिर दूसरे ही क्षण भारत वर्ष के समस्त शत्रु नष्ट हो जायेंगे। लाखों करोड़ों शत्रुओं से घिरे रहने के पश्चात भी भारत वर्ष आज केवल सुरक्षित है तो वह सिर्फ आध्यात्मिक शस्त्रों की बदौलत। विशेषकाल और विशेषकर विजयकाल में अगर योग्य गुरु ब्रह्म विद्या की उपासना कर लेता है तो देखते ही देखते अनगिनत शत्रुओं का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से नाश हो जाता है इसीलिए भारत भूमि को चमत्कृत भूमि कहा गया है। यहां पर साधक अपनी साधनात्मक शक्ति से किसी भी पाश्चात्य धर्म, संस्कृति एवं कुप्रचार को नष्ट करते चले आ रहे हैं। हमने अपने गुरु के साथ अनेकों साधनात्मक स्थितियाँ सम्पन्न की हैं। गुरु वही है जो कि शिष्यों को पीटे। भौतिक और अभौतिक तल पर। बिना पिटाई के योग्य शिष्य बन ही नहीं सकता। प्रत्येक शिविर में सबसे पहले मानसिक पिटाई होती थी। किसी की हिम्मत नहीं थी कि गुरु के सामने मुँह चला दे। बड़े से बड़ा शिष्य भी उनकी नजर से डरता था। कोई उनके सामने खड़ा नहीं होता था। 20-20 घण्टे के आध्यात्मिक शिविर चलते थे। खाना-पीना एवं सोना तो दूर की बात है। जब कहीं तप कर निकले हैं। 18-18 घण्टे गाड़ी चलाकर जोधपुर जाना पड़ता था और वो भी मई जून की तपती दोपहरी में। साधकों को 20-20 घण्टे शिविर स्थल पर बैठना पड़ता था। 8-8 घण्टे लगातार पूजन चलते थे। दिन में केवल एक बार भोजन करने की छूट थी परन्तु यह सब पढ़कर अब वहां मत चले जाना वहां पर अब कुछ भी नहीं है केवल कुछ ठग और उचकें बैठे हुए हैं। समय-समय की बात है। आध्यात्मिक कार्यक्रमों को सम्पन्न करने के लिए जब में कुछ हजार होते थे और खर्चा डेढ़ लाख रुपये का। किस तरह से सम्पन्न किए जाते थे कार्यक्रम यही शिष्य की परीक्षा होती थी। गुरुदेव का कहना था सफल शिष्य, सफल योद्धा वही

हैं जो एक रुपये खर्च करके 100 रुपये का परिणाम दे इसके विपरीत मूर्ख शिष्य वह है जो 100 रुपये खर्च करके भी एक रुपये के बराबर परिणाम उपस्थित न कर सके। गुरु सानिध्य, कठोर श्रम, कठिन परीक्षाएँ एवं सत्य को पहचानने वाला ही जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफल योद्धा बन सकता है। वे सच्चे गुरु थे। उन्हें मंच प्रदान करना, उनकी सेवा करना, उनकी आज्ञा का पालन करना हम सब के लिए हितकर हुआ। तभी तो ढेर सारी साधनात्मक स्थितियाँ, अनेकों आशीर्वाद एवं वरदान, सत्य को पहचानने की शक्ति एवं निरंतर युद्धरत रहने की प्रज्ञा शक्ति हम सबको प्राप्त हुई। एक बात याद रखो चोर उचक्कों और ठगों को कभी भी मंच प्रदान मत करो। जिनकी नजरें तुम्हारी जेबों पर हों उन कलंकित लोगों के साथ मत जुड़ो। दुर्योधन और शकुनि के साथ जितने भी लोग खड़े हुए सबके सब पतनोन्मुखी हुए। जीवन में सफल योद्धा बनने के लिए शरीर को साधना होगा। एक हद तक भूख-प्यास, नींद, वासना, लालच, थकान, समय, दिन-रात, से ऊपर उठना होगा। इन सब पर ज्यादा ध्यान नहीं देना चाहिए। दिव्य लोकों के दर्शन कैसे करोगे? दिव्य लोक हैं यह सच्चाई है। दिव्य लोक शरीर का विषय नहीं है। उनके द्वार हृदय के आस-पास स्थित हैं। प्राणायाम के द्वारा श्वास को नियंत्रित करने की कला सीखनी होगी। विशुद्धानंद जी बहुत ही बड़े एवं उच्च कोटि के योगी रहे हैं। उनके प्राणायाम की क्रिया इतनी परिष्कृत थी कि वे नित्य प्रतिदिन गे-के दर्शन करने में समर्थ थे। हमारे पुराणों में वर्णित देवी लोक, मणिद्वीप, सिद्धाश्रम, गोलोक, कृष्णधाम यह सब एक वैज्ञानिक सत्य हैं। ऊपर वर्णित दिव्य लोक वायु रहित हैं। इन लोकों ने वायु, अग्नि, भूमि और जल इत्यादि को धारण नहीं कर रखा है। ऐसे भी लोक होते हैं, ऐसी भी संरचनाएँ हैं। इसे पाश्चात्य वैज्ञानिक अब स्वीकार करने लगे हैं। इन पर विचरण शरीर के द्वारा संभव नहीं है अतः प्राण शक्ति को प्राणायाम के द्वारा इस प्रकार संचालित किया जाता है कि शरीर को न्यूनतम मात्रा में भोजन, पानी, और वायु इत्यादि की जरूरत महसूस हो। यह समाधिस्थ होने की कला के अंतर्गत आता है फिर कहीं जाकर ईश्वरी कृपा से हमारी आत्मा इस दिव्य चेतन जगत् से जुड़ती है। फिर कहीं जाकर हमें दिव्य आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त होती है। ध्यान रहे युद्ध में सफलता केवल भौतिक शक्ति के माध्यम से प्राप्त नहीं हो सकती उसके लिए प्रखर आत्मिक शक्ति, प्रचण्ड

मानस शक्ति और दिव्य आध्यात्मिक शक्ति के साथ-साथ आशीर्वाद और वरदानों की भी जरूरत पड़ती है।

कृष्ण ने अर्जुन से दिव्यास्त्र प्राप्त करने के लिए घोर तपस्या करने को कहा। अर्जुन ने शिव से भी युद्ध किया। इसका विस्तार पूर्वक वर्णन आगे करूँगा। शिव ने प्रसन्न हो अर्जुन को पाशुपतास्त्र प्रदान किया। अर्जुन ने तपोबल के द्वारा इन्द्र से भी दिव्य अस्त्र-शस्त्र प्राप्त किया। माँ भगवती की भी घोर उपासना की। वर्षों पत्ते खाकर, अन्न जल त्याग कर एक पाँव के अँगूठे पर खड़े होकर अर्जुन ने उपासना की है तब वह धनन्जय कहलाया। विश्व का श्रेष्ठतम धनुर्धर बना। इन्द्र के द्वारा देवदत्त नामक विशाल एवं विलक्षण शंख को प्राप्त किया। महाभारत के युद्ध में कृष्ण ने जब अपना पाञ्चजन्य और अर्जुन ने अपना देवदत्त नामक शंख एक साथ बजाया तो सारी पृथ्वी ही कांप उठी थी। कृष्ण के साथ युद्ध क्षेत्र में खड़े होने के लिए अर्जुन ने घोर तपस्या की है। शरीर को साधा, मन को साधा, इन्द्रियों को साधा, देवताओं को साधा, शिव को प्राप्त किया भगवती की उपासना की एवं स्वयं को सुसज्जित किया सभी युद्ध विद्याओं में। कृष्ण के मुख से समझा ज्ञान और विज्ञान को। विराट स्वरूप भी अनुभूत किए उसने कृष्ण के। धर्म के पथ पर चला, सत्य की राह पकड़ी, राजा से भिक्षुक बना, एक वर्ष तक अज्ञातवास में वृहन्नला के रूप में रहा। स्त्री वेश में नृत्य भी किया। नृत्य कला एवं वाद्य विद्या में भी अपने आपको पांगत किया। सरस्वती की भी उपासना की। तब कहीं जाकर इतना सब होते हुए भी कृष्ण की छत्र छाया में दिग्विजयी कहलाया है। उसके पिता ने उसे राजगद्दी प्रदान नहीं की थी। स्वयं अपने कर्मों से, अपनी शक्ति से उसने अपने आपको स्थापित किया है। आप अगर स्वयं के पिता के द्वारा सब कुछ प्राप्त करना चाहते हैं पिता की कमाई और पुण्याई खाना चाहते हैं तो फिर ऊपर वर्णित स्थिति आपके लिए बेकार है, मूल्य रहित है। आप आराम से बैठकर फिल्मी पत्रिकाएँ पढ़ें और फिर कोई ऐसा नकारा निकम्मा गुरु ढूँढ़ लीजिये जो कि दुर्योधन के समान अपने धृतराष्ट्र रूपी बाप द्वारा पुत्र मोह में ग्रसित होकर, असत्य के मार्ग पर चलते हुए गद्दी पर आरूढ़ हुआ हो। ऐसे लोगों से युद्ध कला की बात निरर्थक और बेमानी है। यह तो संसार का सत्य है। यहां पर धृतराष्ट्र भी होंगे, गांधारी भी होगी, दुर्योधन और शकुनि भी होंगे। साथ ही युद्धरत पाण्डव श्रेष्ठ एवं प्रभु श्रीकृष्ण भी होंगे।

✽

लघु प्रयोग

किसी घर में कन्या या स्त्री अगर किसी गलत पुरुष के चक्कर में पड़ गई है एवं उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई हो तो नीचे लिखे मंत्र से 108 बार कमल के फूल के द्वारा पानी को अभिमंत्रित कर लें एवं अभिमंत्रित जल से लगातार 21 दिन तक कन्या के वस्त्र इत्यादि को सिंचित करते रहें और अभिमंत्रित जल भी कन्या को पिलाते रहें।

मंत्र

ॐ भगमालिनी भगवते ह्रीं कामेश्वरी स्वाहा।

उपरोक्त मंत्र से जल को अभिमंत्रित करने का कार्य गुरुवार या शनिवार को गोधूली की बेला से प्रारम्भ करना चाहिए। यह 21 दिन अखण्ड रूप से चलने वाला तीव्र प्रभावकारी लघु प्रयोग है। 21 वें दिन 108 कमलगट्टों को हवन सामग्री में मिला लें एवं 108 आहुतियों से हवन कर लें हवन से पूर्व संकल्प अवश्य कर लें।

सर्व कार्य सिद्धि के लिए

ॐ आँ ह्राँ क्ष्वीं ॐ ह्रीं।

इस मंत्र को चंद्रग्रहण, सूर्यग्रहण, दीपावली या फिर रवि पुष्य नक्षत्र के दिन प्रारम्भ करें लगातार तीन महीने तक ब्रह्मचर्य पूर्वक प्रतिदिन 1000 बार जाप करने से वशीकरण की सिद्धि प्राप्त होती है। इस मंत्र को रुद्राक्ष की माला से जपना चाहिए।

दुश्मन तथा भूत निवारण के लिए

ॐ ह्रीं अ-सि- ॥ उ-सा सर्व दुष्टान् स्तम्भय-
स्तम्भय मोहय-मोहय अन्धय-अन्धय मूकवत्कारय
कुरु कुरु ह्रीं दुष्टान् ठः ठः ठः।

इस मंत्र की दो क्रियाएं हैं-

यदि किसी के ऊपर दुश्मन हमला करने आये तो तुरंत उसके मुकाबले को जायें। यह मंत्र 108 बार मुट्ठी बाँधकर जप करते जायें, दुश्मन भाग जायेगा।

यदि किसी बालक या स्त्री को कोई भूत-पिशाच, चुडैल, डायन सताये तो यह मंत्र 108 बार मुट्ठी बाँधकर पढ़कर उसे झाड़ें। सुबह-शाम दोनों समय झाड़ा करें तो भूतादिक भाग जाते हैं, बालक-स्त्री अच्छे हो जाते हैं।

वशीकरण के लिए

ॐ ह्रीं क्रीं ह्रीं हूं फट् स्वाहा।

इस मंत्र से 108 बार सुपारी को अभिमंत्रित करके अगर गुरुवार या शनिवार के दिन शत्रु को खिला दिया जाता है तो वह वश में हो जाता है।

उच्चाटन मंत्र

ॐ चिली चिली स्वाहा।

अगर घर में किसी व्यक्ति का गलत व्यक्तियों से सम्बन्ध हो गया हो तो उच्चाटन क्रिया सम्पन्न करने के लिए शनिवार के दिन कालीजी की प्रतिमा के सामने नई रुद्राक्ष माला से 21 दिन तक लगातार संकल्प के साथ ऊपर वर्णित मंत्र का प्रतिदिन 1008 बार जाप करें। 21 दिन तक ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक है। 21 वें दिन इस मंत्र को भोज पत्र पर अष्ट गंध की स्याही से लिखें और उसे अपने संकल्प का स्मरण करते हुए नदी की धारा में बहा दें। सफलता निश्चित है घर के व्यक्ति का गलत लोगों से स्वतः ही उच्चाटन हो जायेगा।

बिच्छू का विष उतारने के लिए

ॐ भूधर भूधर स्वाहा। (खजूरा मंत्र)

रवि पुष्य नक्षत्र में या फिर नवरात्रि या शिव रात्रि के दिन गुरु मुख से इस मंत्र को ग्रहण करें एवं सवा लाख बार इस मंत्र का बैजन्ती माला से जप करें इसके पश्चात पुनः गुरु से आशीर्वाद प्राप्त कर किसी भी बिच्छू से डसे गये व्यक्ति को नीम की डाली से झाड़ते हुए यह मंत्र पढ़ते जायें इससे बिच्छू का जहर नष्ट हो जायेगा।

शत्रु नाश के लिए

ॐ नमो भगवते क्रोध रुद्राय हन-हन दह-दह पच-पच हूं हः स्वत्रकेण अमुकस्य गृहं नाशय स्वाहा।

यह मंत्र अत्यंत ही तीक्ष्ण शत्रु नाशक मंत्र है। शनिवार के दिन या गुरुवार के दिन सर्वप्रथम इस मंत्र का काली या दुर्गा मंदिर में 108 बार स्फटिक माला से जप करना है। माला नवीन होनी चाहिए। ऊपर लिखित मंत्र में (अमुकस्य) के स्थान पर शत्रु का नाम लें। इसके बाद प्रतिदिन 21 दिन तक 1008 मंत्रों का पूर्ण श्रद्धा के साथ जप करें। इस मंत्र के प्रभाव से शत्रु के घर में उपद्रव शुरू हो जायेंगे। वे आपस में ही लड़ने-मरने लगेंगे।

मुकदमे में विजय के लिए

ॐ काली रौद्री कपाल पिंडिनी मोरा दुरित निवारिणी राजा बंधु शक्तिका बंधु नील कंठ कंठेहि बंधु जिह्वा देवी सरस्वती बंधु चक्षुर्भ्यां पार्वती बांधु सिद्धिर्मम गुरु प्रसादेन।

यह मेरे द्वारा स्वयं सिद्ध किया गया दुर्लभ महामंत्र है इस मंत्र को सदैव स्मरण करते रहना चाहिए। प्रति शनिवार को इस मंत्र की एक माला अवश्य जपनी चाहिए। इस मंत्र के प्रभाव से कोर्ट-कचहरी, पुलिस थाना, सभा मण्डप इत्यादि स्थानों पर शत्रु की शक्ति, मुख इत्यादि पूर्ण रूप से प्रतिबंधित हो जायेंगे। यह विजय प्राप्ति का अचूक मंत्र है। इस मंत्र का जाप गुरु द्वारा प्रदत्त उच्च कोटि की रुद्राक्ष माला से ही करना चाहिए। ध्यान रहे जिस माला से इसका जप किया जाय उससे किसी भी अन्य प्रकार का जप वर्जित है।

शत्रु को निस्तेज करने के लिए

ॐ ह्रीं प्रत्यंगिरे ममस्वस्ति शांति कुरु कुरु स्वाहा।

यह मंत्र महाकाली का अत्यंत ही तीक्ष्ण मंत्र है इस मंत्र के मात्र 21 बार जप से ही घर में कितना भी उपद्रव हो रहा हो तुरंत ही शांति की स्थिति निर्मित हो जाती है। शनिवार के दिन रात्रि में महाकाली यंत्र के षोडशोपचार पूजन के पश्चात अगर इस मंत्र की 11 मालाएँ रुद्राक्ष माला से जप की जाती हैं तो कितना भी अशांत मन हो या फिर आंतरिक या बाह्य अंतर्द्वंद्व हो सब कुछ समाप्त हो जाता है। शत्रुओं को निस्तेज करने के लिए यह मंत्र अत्यधिक उपयोगी है।

काल सर्प निवारण प्रयोग

ऐं क्लीं ह्रूं कुडलिनीं नमः।

व्यक्ति अगर अपने कुभाग्य से ग्रसित है तो फिर प्रतिदिन संध्या के समय पारद शिवलिङ्ग के सामने मात्र 108 बार रुद्राक्ष की माला से इस मंत्र का जप करें। 21 दिन में ही भाग्य का उदय होने लगेगा। पारदेश्वर उत्तर की तरफ मुख करके स्थापित करना चाहिए। मंत्र जाप के साथ 108 बिल्व पत्रों को पारदेश्वर के ऊपर अर्पित करने से 21 दिन के अंदर काल सर्पयोग निवारण एवं अकाल मृत्यु भी टल जाती है। अपने आपमें यह दुर्लभ प्रयोग है।

सिद्धि प्राप्ति प्रयोग

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लीं कलिकुण्ड स्वामिन् सिद्धिं श्रियं जगद्गश मानय स्वाहा।

यह मंत्र चिंतामणि है सिद्धि प्राप्ति के लिए इसका उपयोग किया जाता है। विशेषकर पूर्णिमा या रवि पुष्य नक्षत्र में इस मंत्र को अष्टगंध की स्याही से भोजपत्र के ऊपर लिख लें फिर वैजन्ती माला के द्वारा प्रतिदिन संध्या के समय 11 माला लगातार 21 दिन तक जप करने पर अभीष्ट सिद्धि की प्राप्ति होती है।

रोग नाशक प्रयोग

ॐ नमो भगवते पिशाच रुद्राय कुरु ३ यः भंज भंज हर हर दह दह पच पच गृहन् गृहन् माचिरं कुरु कुरु रुद्रो आज्ञापयाति स्वाहा।

उपरोक्त मंत्र से गुगुल एवं पीली सरसों और लाल मिर्च को 108 बार अभिमंत्रित कर लें तत्पश्चात् गम्भीर रोग से ग्रसित या फिर दुष्टात्मा इत्यादि से प्रभावित व्यक्ति के सामने इनकी धूनी दें। दूसरे ही क्षण रोगी ठीक होने लगेगा।

सर्प स्तम्भन प्रयोग

ॐ ह्रीं गरुड़ ह्रीं हंस सर्व सर्प जातीनां मुख वंधं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मंत्र को आप रवि पुष्य नक्षत्र या फिर अमावस्या की रात्रि में मात्र 108 बार रुद्राक्ष की माला से जप करें। एक वर्ष तक आपको सर्प कदापि नहीं काट सकता।

सौभाग्य प्राप्ति प्रयोग

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लौं कलिकुंड दंड स्वामिन् सिद्धिं जगद्विशं आनय आनय स्वाहा।

इस मंत्र को प्रातः अवश्यमेव 21 या 108 बार स्मरण करके भोजन करें तो इस मंत्र के प्रभाव से सौभाग्य की प्राप्ति, आपदा का नाश, राजा से पूजित लक्ष्मी का लाभ, दीर्घायु, शाकिनी रक्षा, सुगति की प्राप्ति होती है। यदि जाप करते हुए छूट जाय तो उसके प्रायश्चित्त में एक उपवास करना चाहिए। अगर उपवास करने की शक्ति न हो तो जैसी शक्ति हो उस मुताबिक प्रायश्चित्त अवश्य करना चाहिए और फिर जपना प्रारम्भ करें। जीवन भर इस मंत्र का स्मरण करें और गोप्य रखें किसी को बतावे नहीं तो देव गुरु के प्रसाद से सर्व कार्य स्वयं सफल हो जायेंगे और सुगति की प्राप्ति होगी।

सुखमय प्रसूति प्रयोग

हिमवंत उत्तरे पार्श्वे पर्वतो गंध मादने सरसा नाम यक्षिणी तस्याने उर सहेण विशल्या भवति गुर्विणी।

इस मंत्र से तेल 21 बार अभिमंत्रित कर शरीर पर तथा मल स्थान पर लगाने से गर्भिणी सुख से प्रसूति करती है।

प्रेतात्मा निवारण प्रयोग

ॐ क्रां क्रीं क्रीं क्षः हः रः फट् स्वाहा।

इस मंत्र को गुरु मुख से ग्रहण करें साथ ही गुरु के द्वारा उच्च कोटि की महामृत्युंजय मंत्र से अभिमंत्रित माला धारण करें। तत्पश्चात् अमावस्या की रात्रि में 11 माला

संक्षिप्त गुरु पूजन के बाद महाकाली यंत्र के सामने इसे जपें। इसके पश्चात् हाथ में पीली सरसों लेकर इस मंत्र को पढ़ते हुए किसी भी भूत-प्रेत इत्यादि से ग्रसित व्यक्ति के ऊपर डालते जायें कुछ ही क्षणों में व्यक्ति दुष्ट शक्तियों से मुक्त हो जायेगा। ध्यान रहे आपका कवचित्त होना अत्यधिक आवश्यक है।

शत्रु मोहन प्रयोग

ॐ चामुंडे कुर्यम दंडे अमुक हृदय मम हृदयं मध्ये प्रवेशाय ३ स्वाहा।

इस मंत्र को निरंतर पढ़ते जायें एवं जिस दिशा में आप पर क्रोध करने वाला मनुष्य रहता हो उस दिशा में फेंकते जायें तो कुछ ही मिनटों में सामने वाले व्यक्ति का क्रोध स्वतः ही नष्ट हो जायेगा। (अमुक) के स्थान पर व्यक्ति का नाम लें। कम से कम एक माला या 108 बार इस मंत्र को जपें।

वशीकरण प्रयोग

ॐ ह्रीं स सूर्याय असत्यं सत्यं वद वद स्वाहा।

यह सम्पूर्ण वशीकरण का मंत्र है यह मंत्र कृष्ण तंत्र के अंतर्गत आता है। इसे माया मंत्र भी कहते हैं इस मंत्र के सिद्ध हो जाने पर आप स्वयं माया फैला सकते हैं। आप जो बोलेंगे, जैसा चाहेंगे वैसा ही सामने वाले को दिखाई देगा। असत्य भी सत्य दिखाई पड़ने लगेगा। इस मंत्र को सिद्ध करने के लिए मोहिनी दीक्षा प्रथम आवश्यकता है इसके पश्चात् होलिका दहन के दिन रात्रि में एक बजे से तीन बजे तक गुरु से आज्ञा प्राप्त करने के बाद बंद कमरे में सर्वथा नग्न होकर दक्षिण की तरफ मुख करके इसका निरंतर जाप किया जाता है। मंत्र का जाप होलिका दहन के दिन ही प्रारम्भ किया जाता है। यह 21 दिन की साधना है। इसकी आवश्यक सामग्री भी गोपनीय है। उचित व्यक्ति को ही देनी चाहिए। इस मंत्र की सिद्धि का प्रमाण यह है कि आप जैसा सोचेंगे सामने वाला उसका अनुमोदन करेगा।

४१

अंतर्द्वंद्व

आध्यात्मिक साधकों और सामान्यजनों में अधिकांशतः सभी अपने जीवन के किसी न किसी काल में अध्यात्म के प्रति सशंकित रहते हैं। मानव मस्तिष्क ही कुछ ऐसा है आत्मा की आवाज कहती है कि अध्यात्म ही सत्य का मार्ग है परन्तु मस्तिष्क माया संसार की तरफ मनुष्य को खींचता है। बड़े-बड़े साधक डिग जाते हैं। अब तो कलयुग है प्रत्येक का मानस अंतर्द्वंद्व से ग्रसित है।

हजारों महाभारत को एक तरफ रख लीजिए और अंतर्द्वंद्व को एक तरफ निश्चित ही अंतर्द्वंद्व भारी पड़ेगा। अंतर्द्वंद्व के निराकरण के पश्चात ही महाभारत का अभ्युदय हुआ। सर्वप्रथम अर्जुन अंतर्द्वंद्व से ग्रसित हुआ उसके अंदर विचारों और तर्कों का तूफान उठा सब कुछ उलझ गया, संकल्प शक्ति क्षीण पड़ गई। पथ भ्रष्ट होने ही वाला था तभी श्रीकृष्ण ने गीता का प्रकाश आलोकित कर दिया। अंतर्द्वंद्व मिट गया। अर्जुन पुनः कर्मशील बन पाया। जोधपुर से निकलने वाली कुछ

आध्यात्मिक पत्रिकाओं ने इस देश के साधकों को पथ भ्रष्ट कर दिया है सबके मन अंतर्द्वंद्व से ग्रसित हो गये हैं सारे अध्यात्म का फार्मूलाकरण कर दिया गया है उनके लिए अध्यात्म सिर्फ होम्योपैथी या ऐलोपैथी के समान फार्मूलाबद्ध हो चुका है। उनके यहाँ से माला खरीद लो, उनके यहाँ से गुटिका खरीद लो तो आप

आध्यात्मिक हो जाओगे। सनातन धर्म का सत्यानाश करके रख दिया है पता नहीं कब तक भोगेंगे अपने पाप कर्म को। नीचे एक कथा वर्णित कर रहा हूँ यह बताने के लिए कि आचार्य विद्यारण्यस्वामी जी भी अंतर्द्वंद्व से ग्रसित हो एक बार नास्तिक हो बैठे थे। यह कहानी फार्मूला पद्धति पर चल रहे साधकों के लिए एक प्रकाश पुंज का कार्य करेगी।



आचार्य विद्यारण्यस्वामी जी ने अपने गुरु के निर्देशानुसार ग्यारह अनुष्ठान किये पर कोई परिणाम नहीं निकला। कुछ भी चमत्कार नहीं हुआ। तब उन्होंने स्थण्डिल पर अग्नि प्रज्वलित कर झोली, माला, आसन, पुस्तक आदि सबको अग्निसात् कर दिया। बस, केवल एक श्री यंत्रमय शिवलिङ्ग ही हाथ में बचा था। उसे भी वे अग्नि में डाल ही रहे थे कि एक स्त्री वहाँ आ गयी और बोली-महाराज! आप यह क्या कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि

पूजा-पाठ, उपासना सब पाखण्ड है, इसलिये मैं इन सबों को जलाकर लोगों को सचेत करूँगा कि वे उपासना छोड़कर अन्य पुरुषार्थ एवं परिश्रमों का आश्रय लें। इस पर वह स्त्री बोली कि यह सब तो ठीक है, पर जरा आप अपने पीछे देखिए कि वहाँ क्या हो रहा है, विद्यारण्य ने जब पीछे देखा तो वह स्थण्डिलाग्नि उनके पीछे ही दिखायी दी और उसमें ऊपर से बड़े-बड़े पत्थर

गिरकर फूटने लगे। वे घबराकर खड़े हो गये और धीरे-धीरे अग्रि से दूर हटने लगे। तब तक लगातार ग्यारह पत्थर आकाश से गिरकर भयंकर ध्वनि करते हुए अग्रि में नष्ट हो गये। उन्होंने सोचा कि यह स्त्री इस विषय में कुछ अवश्य जानती होगी, क्योंकि उसी ने ही पीछे देखने को कहा है पर जब वे स्त्री को खोजने लगे तो वह कहीं न दिखी। पार्श्ववर्ती उपवन की झाड़ियों में भी उसे चिल्लाकर पुकारा पर वह नहीं आयी। अंत में आकाश से एक ध्वनि आयी कि तुम घोर नास्तिक हो। मैं तो ठीक समय पर आ गयी थी। पर तुम्हारी गुरु और शास्त्रों में श्रद्धा नहीं थी। अतः तुमने सबको जला दिया, गुरु का अपमान किया और नास्तिकता का प्रचार करने को उद्यत हो गये थे। अब भला बताओ तुम्हें किस देवता का दर्शन होगा और कौन-सी सिद्धि प्राप्त होनी चाहिए। तुम्हारे ग्यारह जन्मों के पाप थे जो ग्यारह पहाड़ के रूप में गिरकर अग्रि में नष्ट हुए। अब पुनः गुरु के चरणों का आश्रय ग्रहण करो। विद्यारण्य ने रोते हुए अपने गुरु के चरणों में गिरकर यह सारी घटना सुनाई। उनके गुरु अत्यंत कृपालु थे उन्होंने उन्हें पुनः दूसरी माला, झोली और पुस्तकें आदि दे दीं और कहा कि तुम्हें एक ही अनुष्ठान से भगवती का सम्यक् दर्शन एवं ज्ञान प्राप्त हो जायेगा। फिर सब कुछ वैसा ही हुआ। शंकराचार्य के सम्प्रदाय में वे ही सबसे बड़े विद्वान् हुए। फिर उन्होंने श्रीविद्यार्णव, नृसिंहोत्तरतापिनी उपनिषद्-भाष्य आदि विशाल मंत्रोपासना-ग्रंथ, जीवन्मुक्ति-विवेक, उपनिषद्-भाष्य, वेद, आरण्यक-भाष्य और पंचदशी आदि प्रायः शताधिक छोटे-बड़े ग्रंथ लिखे तथा देवी से यह भी प्रार्थना की कि जो शुद्ध हृदय से गुरु न मिलने पर मुझे ही गुरु मानकर इस ग्रंथ की विधिपूर्वक उपासना करे तो उसे आप शीघ्र दर्शन दें, अन्यथा कलियुग में सभी नास्तिक हो जायेंगे। ये ही विद्यारण्य भगवान् शंकर की कृपा से शृंगेरी मठ के आचार्य हुए और प्रायः सौ वर्षों से अधिक दिनों तक जीवित रहे। उन्होंने काश्मीर तथा विजयनगर दो विशाल साम्राज्यों की स्थापना की थी, जिनकी राजधानियाँ श्री यंत्र पर स्थित होने के कारण श्री नगर तथा विद्यानगर (विजय नगर) के नाम से प्रसिद्ध हुई। दोनों के शासक नरेश इनके अत्यन्त अनुगत शिष्य थे और साम्राज्यों का सीधा संचालन इनके

ही हाथों में था। यों देव्यपराधक्षमापनस्तोत्र में 'मया पञ्चशीतेरधिकमपनीते तु वयसि' इसमें पचासी वर्ष से अधिक जीने की जो बात कही गयी है, वह इन्हीं की रचना सिद्ध होती है, क्योंकि शंकराचार्य जी 32 वर्ष तक ही जीवित थे।

देवता का ध्यान प्रायः हृदय में होता है, यदि हृदय शुद्ध नहीं है, काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह आदि से तनिक भी दूषित है तो वहाँ देवता कैसे आयेंगे। जिस गंदे तालाब में सुअर, गदहे, कुत्ते, गीध, कौए, बगुले आदि लोट-लोटकर स्नान आदि कर दूषित करेंगे, वहाँ राजहंस कैसे आ सकते हैं? गोस्वामी जी ने भी कहा है-

जेहि सर काक कंक बक सूकर, क्यों मराल तहँ आवत ॥

शैवागमों में शिव-ज्ञान की बहुत चर्चा है। तदनुसार अभ्यास, ज्ञान, वैराग्य ही शिव की प्रसन्नता के लिये मूल स्रोत बतलाये गये हैं। शिवगीता एवं भगवद्गीता में प्रायः यही बात कही गयी है। रामचरित मानस के प्रारम्भ में गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है कि शिवरूप परमात्मा तो सभी प्राणियों के हृदय में स्थित ही हैं। पर विनम्रता और श्रद्धारूपी भवानी तथा त्याग, वैराग्य, दैन्य और विश्वासरूपी शिव के अभाव में वह प्रत्यक्ष नहीं होता-
**भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तः स्थमीश्वरम् ॥**

देवो भूत्वा यजेद्देवम्, शिवो भूत्वा शिवं यजेत् के अनुसार विष्णु बनकर विष्णु की आराधना होती है अतः शिव की प्राप्ति के लिये अपने को निरन्तर ऊपर उठाते हुए शिव के समान ही त्यागी, परोपकारी, सहिष्णु और काम, क्रोध, लोभ आदि से शून्य होकर केवल विज्ञानमय, साधनामय एवं उपासनामय ही बनना पड़ेगा। गीता के नासतो विद्यतो भावो नाभावो विद्यते सतः के आधार पर मानसिक योग्यता न होने तथा अर्थ, काम-लिप्सा के कारण ही अन्तर-बाह्य व्याप्त शिव नहीं दिखते। शुद्ध उपासना का आश्रय लेने पर सभी दोष धीरे-धीरे दूर होकर एकमात्र शांत शिव ही सर्वत्र उद्भासित होते दिखेंगे।

❖

मेरे द्वारा अनुभूत प्रयोग

रक्षा तंत्र विधान अध्यात्म जगत का अति महत्वपूर्ण अंग है। विश्व के सभी धर्मों में आपको अदृश्य और सद्दृश्य शक्तियों से रक्षा हेतु अनेकों विधान देखने को मिल जायेंगे। अध्यात्म वही है जो कि रक्षा कर सके। रक्षा हमारा मुख्य दायित्व है तर्क और बुद्धि से जीवन नहीं चलता। अनेकों बार अकारण ही मित्र शत्रु बन जाते हैं। हम चाहें न चाहें हम पर प्रहार हो ही जाते हैं। हमारे चाहने से कुछ भी नहीं होता है। रक्षा प्रणाली के दो मुख्य अंग हैं प्रथम सुरक्षा जिसके अंतर्गत कवच आता है। दूसरा महत्वपूर्ण अंग है शस्त्र जिसके द्वारा हममें प्रहार करने की क्षमता विकसित होती है। दोनों ही अंग एक-दूसरे के पर्यायवाची हैं। कवच है पर शस्त्र नहीं है तो भी हम दिक्रत में आ जायेंगे और शस्त्र है पर कवच नहीं है तो भी हमारी हार सुनिश्चित है। एक बात ध्यान से समझ लें। शस्त्रों के अभाव में आप विजयी नहीं हो सकते परन्तु यह भी जरूरी नहीं है कि शस्त्रों के होने पर भी आप विजयी हो जायें।

उपरोक्त कथन को आप ध्यान से पढ़ें। विजय प्राप्ति अपने आपमें एक अलग विषय है। युद्ध क्षेत्र में अनिश्चितता की अनंतता है। हमारा सारा प्रयत्न, हमारी समग्र शक्ति, हमारी समग्र बुद्धि एवं चेतना का एकमात्र लक्ष्य है युद्ध की अनिश्चितता को निश्चित विजय में परिवर्तित करना यहीं पर अनेकों साधनों, गुरु कृपा, सत्य का मार्ग एवं हमारी साधनात्मक शक्ति का समिश्रण ही परिणाम को निश्चितता प्रदान करेगा।

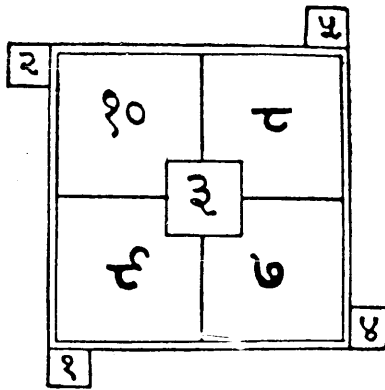
मूर्खों को यह बात समझ में नहीं आती। युद्ध क्षेत्र में दोनों तरफ शस्त्र होते हैं। सभी के पास कवच होते हैं। सभी के पास सुरक्षात्मक प्रणाली होती है। सभी गुप्त से गुप्त अस्त्रों का अनुसंधान करते रहते हैं। नीचे मैं कुछ दुर्लभ, तीव्र प्रभावशाली एवं आसानी से निर्मित किए जाने वाले यंत्रों का वर्णन कर रही हूँ। ये यंत्र आपकी साधनात्मक शक्ति को शस्त्र के रूप में परिवर्तित कर देंगे। आपके जीवन में मौजूद युद्ध क्षेत्र में आपके लिए उपयोगी अस्त्रों का कार्य सम्पादित

करेंगे। अगर आप सत्य के मार्ग पर होंगे तो आपकी विजय सुनिश्चित है। यह मेरा कथन है कभी खाली नहीं जायेगा।

युद्ध प्रणाली को समझने के लिए दिमाग का शांत होना अत्यधिक आवश्यक है। इस ब्रह्माण्ड में मौजूद प्रत्येक शक्ति में युद्ध की अद्भुत क्षमता है। आपको तो बस अपनी संकल्प शक्ति के द्वारा एवं उचित साधनों के माध्यम से उन्हें विध्वंसात्मक अस्त्रों में परिवर्तित करने की जरूरत है। नीचे वर्णित सभी यंत्र मेरे द्वारा अनुभूत हैं, अनुसंधानित हैं। गुरुओं को तो प्रत्येक क्षण युद्ध करना पड़ता है अदृश्य शक्तियों से, अपने और अपने शिष्य रूपी परिवार के शत्रुओं से। उनका तो प्रत्येक क्षण परीक्षा का क्षण होता है। युद्ध विद्या में श्रेष्ठता हासिल किए बिना कोई गुरु बन ही नहीं सकता। गुरु तो बहुत दूर की बात है आप साधक भी नहीं बन सकते। जैसे ही आप पूजा करने जायेंगे, साधनाएँ करने जायेंगे अदृश्य शक्तियाँ आपके परिवारजनों के सिर पर सवार हो जायेंगी वे आपको पूजा करने से रोकेंगी। ऐसा भी होता है। आप ध्यान करने बैठेंगे तो आपके मन में अंतर्द्वंद्व उठने लगेगा, कामुक विचार आयेंगे, मन भटकने लगेगा। यह सब इसलिए होता है कि आपके आस-पास एवं आपके अंदर क्रियाशील नकारात्मक आसुरी शक्तियाँ आपके शुभ कर्मों से विचलित हो उठती हैं और पूरी क्षमता के साथ युद्धरत हो जाती हैं आपके शुभ कर्मों को रोकने के लिए। यहीं पर आपके धैर्य एवं युद्ध कौशल की परीक्षा होती है। गुरु के द्वारा प्राप्त शस्त्रों से नकारात्मक आसुरी शक्तियों से मुकाबला कीजिए एवं शुभ कर्मों की तरफ प्रवृत्त होइये।



आपत्ति निवारण बीसा यंत्र



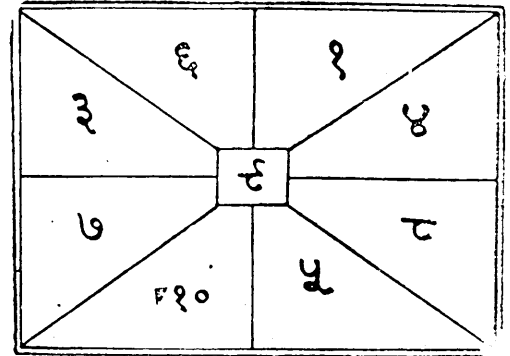
मनुष्य के लिए आपत्ति तो सामने खड़ी होती है। संसार आधि-व्याधि उपाधि की खान है। जब जब कष्ट आते हैं तब मित्र भी बैरी बन जाते हैं। ऐसे समय में इस यंत्र द्वारा शांति मिलती है। आपत्ति को आपत्ति मानते रहे और हताश होते रहे तो अस्थिरता बढ़ती है। अतः इस यंत्र को सोमवार के दिन पंच गंध से चमेली की कलम से भोजपत्र या कागज पर लिख कर पास में रखें और जिस मनुष्य के लिये यंत्र बनाया हो उसका नाम यंत्र में लिखें अमुक की आपत्ति निवारणार्थ ऐसा लिखकर समेट कर चॉवल, सुपारी, पुष्प और यंत्र हाथ में दे देवें। लेने वाला यंत्र को पास में रखे और चॉवल सुपारी आदि जल में प्रवेश करा देवे। आपत्ति से बचाव होगा और आपत्ति को नष्ट करने की हिम्मत पैदा होगी। दिमाग में स्थिरता आवेगी साथ ही अपने इष्ट देव के स्मरण को भी करते रहें। ईष्ट की आराधना ऐसे समय में बहुत सहायक होती है और दान, पुण्य करने से आपत्ति का निवारण होता है। इस बात का ध्यान रखें। ईष्ट सिद्धि होगी।

मृत्यु कष्ट हर पंद्रहिया यंत्र

८	१	६
३	५	७
४	९	२

यह यंत्र उन लोगों के काम का है जो जीवन में जोखिम का काम करते हैं। जल में, स्थल में, व्योम में या बराल यंत्र से आजीविका चलाते हों या ऐसा कठिन काम हो कि जिसके करते समय आपत्ति आने का अनुमान किया जाता है। इस यंत्र को रवि पुष्प नक्षत्र में अनार की कलम से भोज पत्र पर लिखकर अपने पास रखें तो अच्छा है।

गृहक्लेश निवारण बीसा यंत्र



ग्रह क्लेश गृहस्थ के यहाँ अनायास छोटी बड़ी बातों में हुआ करता है और सामान्य क्लेश हुआ हो तो जल्दी नष्ट हो जाता है परन्तु किसी समय ऐसा हो जाता है कि उसे दूर करने में कई तरह की कठिनाइयाँ आ जाती हैं और क्लेश, दिन-दिन बढ़ता रहता है। ऐसे समय में यह बीसा यंत्र बहुत काम देता है। इस यंत्र को भोज पत्र पर अनार की कलम से लिखना चाहिए और लिखने के बाद इस यंत्र को ऐसी जगह लगा देना चाहिए कि जिस पर सारे कुटुम्ब की दृष्टि पड़ती रहे और एक यंत्र घर का मुखिया पुरुष अपने पास में रखें और पहला यंत्र जिस जगह लगाया हो वह शरीर भाग से ऊँची जगह पर लगावे और नित्य धूप-दीप इत्यादि दिखाकर मंगल प्रार्थना करें तो क्लेश नष्ट हो जाएगा। प्रत्येक कार्य में श्रद्धा रखनी चाहिए। इष्ट देव के स्मरण को कभी नहीं भूलना चाहिए जिससे कार्य की सिद्धि होगी।

नजर दृष्टि चौबीसा यंत्र

७	६	११
१२	८	४
५	१०	९

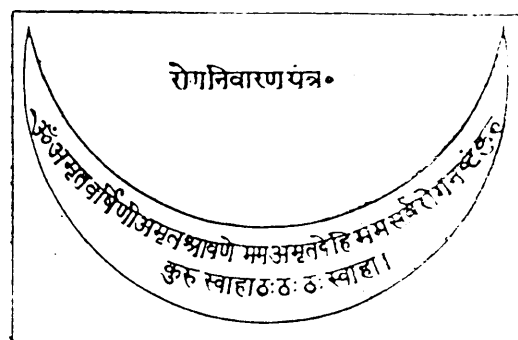
जब बालक को दृष्टि दोष हो जाता है तब वह दूध पीने या कुछ खाते समय अरुचि हो जाने से वमन करने लगता है। पाचन शक्ति कम हो जाने से मुखकृति रक्त रहित दिखने लगती है। इस तरह की हालत हो जाने से घर में सबको चिंता हो जाती है। इस तरह की परिस्थिति में यह चौबीसा यंत्र भोजपत्र पर अष्ट गंध की स्याही से अनार की कलम के द्वारा लिखना चाहिए और ताबीज में रखकर गले में या हाथ पर बाँधना चाहिए। जब दृष्टि दोष निवारणार्थ यंत्र तैयार हो जाय तब समेट कर कच्चे रेशमी धागे में आंटे देकर यंत्र के पास में रखे या गले पर या हाथ पर बांधे तो दृष्टि दोष दूर हो जाता है।

जय पताका यंत्र

७१	८	५३	६४	१	८६	६८	६	५१
२६	४४	६२	१६	३७	५५	२४	४२	६०
३५	८०	१७	२८	७३	१०	३३	७८	१५
६६	३	४८	६८	५	५०	७०	७	५२
२१	३६	५७	२३	४१	५६	२५	४३	६१
३०	७५	१८	३२	७७	१४	३४	७६	१६
६७	४	४६	७२	६	५४	६५	२	४७
२२	४०	५८	२७	४५	६३	२०	३८	५६
३१	७६	१३	३६	८१	१८	२६	७४	११

यह जयपताका यंत्र है जिस व्यक्ति को महात्माओं की कृपा प्राप्त हो जाती है उसी को इस यंत्र की सिद्धि मिलती है। सामान्य से इस यंत्र के लिए कहा है कि इस यंत्र को पंच गंध, अष्ट गंध से लिखे और किसी खास काम पर विजय पाने के लिये बनाना हो तो यक्ष कर्दम से लिखें। लिखते समय इक्यासी कोठे में पाँच का अंक बनाकर चढ़ते अंक से लिखने को शुरू करें जैसे प्रथम पंक्ति के पाँचवें कोठे में एक का अंक लिखें। सातवीं लाइन के आठवें कोठे में दो का अंक लिखें। चौथी लाइन के आठवें कोठे में सात का अंक लिखें। प्रथम लाइन के दूसरे कोठे में आठ का अंक लिखें। सातवीं लाइन के पाँचवें कोठे में नौ का अंक लिखें और तीसरी लाइन के छठे कोठे में दस का अंक लिखें। इस तरह से सम्पूर्ण अंक को चढ़ते अंक से लिखकर पूर्ण करें और तैयार हो जाने पर जिस मनुष्य के लिये बनाया हो उसके नाम व कार्य का संक्षेप नाम यंत्र के नीचे लिखें। इस तरह से तैयार कर लेने के बाद यंत्र को पूजा स्थान पर स्थापित कर धूप, दीप दिखाकर कुछ भेंट सामग्री यंत्र को अर्पित करें इसके पश्चात् ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः की एक माला प्रतिदिन फेरना चाहिए इससे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विजय की प्राप्ति होती है।

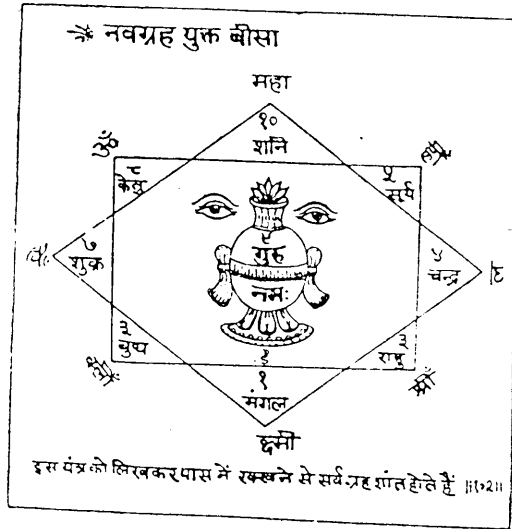
रोग निवारण यंत्र



इस यंत्र को पूर्णिमा या फिर चंद्रग्रहण के दिन भोज पत्र पर अष्टगंध के द्वारा अनार की कलम से लिखना चाहिए। यंत्र लिखते समय पूर्व की तरफ मुख करके बैठे एवं अपने ईष्ट देव या गुरु मंत्र का निरंतर जाप करते रहें। यंत्र का निर्माण रोगी व्यक्ति के नाम से ही करवाना चाहिए। दूसरा कोई व्यक्ति इसका उपयोग न करे एवं प्रतिदिन इस यंत्र को गंगाजल के द्वारा धोकर दिन में तीन बार रोगी

को पिलाना चाहिए। 21 दिन के भीतर वर्षों से बीमार व्यक्ति चमत्कारिक रूप से पुनः स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर लेता है।

नवग्रह बाधा निवारण यंत्र



इस यंत्र का निर्माण स्वयं नहीं करना चाहिए इस यंत्र को गुरु के द्वारा निर्मित करवाकर ही पूजा स्थान पर रखना चाहिए। यह अद्भुत यंत्र है इसके स्थापन से तीव्र भाग्योदय प्रारम्भ हो जाता है। इस यंत्र का निर्माण भोजपत्र या ताम्रपत्र के ऊपर किया जाता है। इसका मंत्र भी गुरु के द्वारा प्राप्त करना चाहिए। यह यंत्र सर्वजन उपयोगी यंत्र है प्रत्येक व्यक्ति को अपने पूजा स्थान में स्थापित करना चाहिए।

शत्रु नाश यंत्र

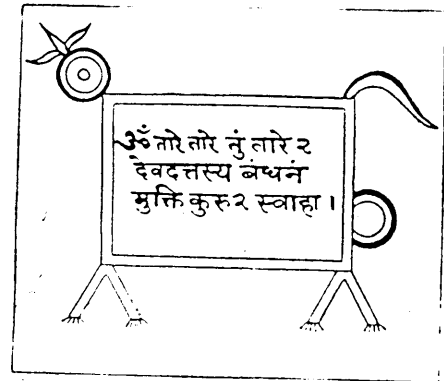
शत्रू नामधुनः



यह यंत्र अत्यंत ही तीव्र प्रभावकारी है शत्रु अगर हमारे जीवन को समाप्त करना ही चाहता है तभी इसका निर्माण करना चाहिए। अमावस्या के दिन श्मशान के कोयले से इसे भोजपत्र पर लिखा जाता है एवं इसका निर्माण एक शत्रु विशेष के लिए ही होता है। यंत्र के पीछे शत्रु के पिता और गोत्र को भी अंकित किया जाता है तत्पश्चात् रात्रि को तीन बजे इस यंत्र को पुनः जलती हुई चिता में डाल दिया जाता है यंत्र को चिता में समर्पित करते समय 21 बार निम्न मंत्र का जाप किया जाता है। इस यंत्र के प्रभाव से शत्रु के वंश में मृत्यु ताण्डव करने लगती है यह अकाद्य प्रयोग है।

ॐ कुरु कुल्ले ह्रीं ठः ठः स्वाहा।

बंदी मोक्ष यंत्र



इस यंत्र को रवि पुष्य नक्षत्र या फिर पूर्णिमा की रात्रि को 12 बजे के आसपास बनाया जाता है यह यंत्र भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध के द्वारा मोर पंख से लिखा जाता है। यंत्र लिखते समय गुरु मंत्र का जाप करना चाहिए इस यंत्र को सोमवार के दिन शिव मंदिर में धारण करना चाहिए इस यंत्र के धारण से व्यक्ति को समस्त बंधनों से मुक्ति मिलती है।

✽

नोट- उपरोक्त सभी यंत्र साधना सिद्धि विज्ञान द्वारा शुभ मुहूर्त में वैदिक विधि विधान से निर्मित किये जाते हैं जो साधकों, शिष्यों के अनुरोध पर उचित शुल्क लेकर प्रदान किये जायेंगे।

दीक्षा संस्कार कार्यक्रम

आप भोजन और पानी लेते हैं, उसका 90 प्रतिशत हिस्सा कुछ ही घण्टों में मल मूत्र के रूप में निष्कासित होने लगता है। यह अन्नमय कोष का विधान है। एक क्षण में जितनी वायु ग्रहण करते हैं उसका 90 प्रतिशत हिस्सा दूसरे ही क्षण जहरीली वायु के रूप में आपके शरीर से निष्कासित हो जाता है। यह सब स्थूल खेल है। औषधि खाते हैं कुछ दिन तक उसका असर रहता है। वह भी अल्पायु है। कुछ लोगों को रोज औषधि खाने की आदत पड़ जाती है। शरीर की क्रियायें ऐसे ही चलती हैं। जिन लोगों में संकल्प शक्ति जितनी क्षीण और न्यून होती है उन्हें हर घण्टे भोजन पानी और औषधि की जरूरत पड़ती है। इसके ऊपर बुद्धि और ज्ञान के कोष आते हैं, मनोरंजन का कोष भी आता है। यह सब कोष संस्कारित होते हैं पुस्तकों, प्रवचनों, दूरदर्शन एवं आपस में बैठकर मुँह चलाते की क्रियाओं से। इन बेचारे कोषों को भी रोज कुछ न कुछ चाहिए। ये सब भी मलमूत्र निष्कासित करते हैं। जब ये सब खामोश हो जाते हैं तब जिज्ञासा आती है। जिज्ञासा से अंतःप्रेरणा विकसित होती है। अंतःप्रेरणा प्राणों की आवाज है फिर आपके पैर मुड़ते हैं ऐसे व्यक्ति की तरफ जो आपकी प्राण शक्ति को ऊर्जा प्रदान कर सके। यहीं पर शक्तिपात रूपी दीक्षा का उदय होता है। दीक्षा प्राणों से प्राणों को मिलाने का खेल है। प्राणों को शक्तिकृत करने की विद्या है। यह समय और काल से कदापि आबद्ध नहीं है। दीक्षा देते समय जो कह दिया सो कह दिया।

वह होकर ही रहेगा। यह ब्रह्म विद्या है। दीक्षा की आयु मनुष्य निर्धारित नहीं कर सकता। महालक्ष्मी दीक्षा दे दी तो दे दी। वह आयेगी जरूर पाँच घण्टे में आये या पाँच सौ वर्षों में तुम्हारे जीते जी आये या तुम्हारी तीसरी पीढ़ी में। यह तो विधि का विधान है। दीक्षा अकाट्य होती है कभी नहीं कटती। दुनिया गोल है आपको भी मेहनत करनी होगी। औषधि के सिद्धांत पर और चिकित्सा के सिद्धांत पर दीक्षा नहीं दी जाती। दीक्षा पैसे लेकर नहीं दी जाती। चिकित्सा पैसे लेकर की जाती है इसमें बाध्यता है। दीक्षा बीजारोपण है कल्पवृक्ष का। दीक्षा देने वाले की संकल्प शक्ति इतनी विकट होती है कि वह उसे पूर्ण कराने के लिए कल्पांत तक प्रयत्न करता है और पूर्ण करके ही रहता है। संकल्प शक्ति जीवन की सबसे दुर्लभ और प्रचण्ड शक्ति है। द्रोपदी ने केश खोल दिए कहा जब तक दुःशासन की छाती फाड़कर रक्त नहीं लाया जायेगा मैं अपने केश नहीं बांधूंगी। चौदह वर्ष लग गये भीम को दुःशासन की छाती फाड़ने में। चौदह वर्ष तक द्रोपदी ने अपने केश नहीं बाँधे। चाणक्य ने अपनी चोटी में गाँठ बाँध ली मगध नरेश को पराजित करने के लिए। बीस वर्ष बाद चंद्रगुप्त मौर्य ने मगध नरेश को पराजित किया तब जाकर हिसाब-किताब बराबर हुआ। द्रोणाचार्य ने द्रुपद से अपने अपमान का बदला लेने के लिए पाण्डवों के बड़े होने तक प्रतीक्षा की और गुरु दक्षिणा में द्रुपद को पकड़ लाने के लिए कहा। 3112 में संकल्प पूरा हुआ। संकल्प कमजोर है,

लड़ने की क्षमता नहीं है तो दीक्षा मत लो। जाकर दवाई खाओ। ज्योतिषियों से कुण्डली बँचवाओ। किसी ठग तांत्रिक के पास जाकर अनुष्ठान करवाओ कुछ नहीं होगा। संकल्प शक्ति को मजबूत करने के लिए ही गुरु दीक्षा ली जाती है। मैं तो 5000 वर्ष तक युद्ध करने की बात करता हूँ। अब 5000 वर्ष तक शरीर तो रहेगा नहीं इसीलिए कुछ दुर्लभ क्रियायें करनी पड़ेगी। शंकराचार्य जी के समान परकाया प्रवेश भी अपनाया होगा। अपनी बात, अपनी प्रचण्डता, अपनी हठ, अपना ज्ञान, अपने कार्य किसी और में प्रतिष्ठित करने होंगे इसलिए गुरुओं की मृत्यु नहीं होती। शरीर आते जाते रहते हैं। बस काम होते रहने चाहिए। प्रचण्ड संकल्प शक्ति के माध्यम से ही गुरु अतिशीघ्र पहचान लेता है कि आज जो सामने दीक्षा लेने के लिए व्यक्ति खड़ा है उसका पूर्व जन्म क्या है? इससे पहले श्रृंखला कब टूटी थी और उसे कहाँ से जोड़ना है। यह निर्णय कर लिया जाता है। शिष्य में क्या-क्या कार्यानुसार अशुद्धियाँ आ गई हैं, कौन-कौन से कर्म बाधित हो गये हैं या प्रदूषित हो गये हैं यह सब कुछ सोचना पड़ता है। शिष्य के वर्तमान भाव क्या चल रहे हैं यह भी देखना पड़ता है, इस जीवन में कितने क्षण वह साथ बितायेगा यह भी सोचना पड़ेगा। शिष्य का बार-बार आ पाना भी सम्भव नहीं है फिर भी किसी न माध्यम से उसके पास गुरु की शक्ति पहुँचती रहे इसका भी जतन करना पड़ेगा। गुरु कभी नहीं सोते। वे न शिष्य की गाली से परेशान होते हैं न ही शिष्य की प्रशंसा से। मायातीत विषयों में उनकी कोई रुचि नहीं होती। उनका कार्य निरंतर शिष्य को परिष्कृत करना होता है। अर्जुन के जीवन में वनवास भी आया, अज्ञात वास भी आया लाक्षागृह भी आया उसके सामने भीष्म भी आये, कर्ण के तक्षक बाण ने भी उस पर प्रहार किया। कुरुक्षेत्र में अनेकों बार वह गम्भीर रूप

से घायल भी हुआ, धनुष भी कट गया, रथ भी टूटा, पुत्र भी मारे गये फिर भी ले देकर कृष्ण ने उसे विजयी बना ही दिया। वह रुआंसा भी हुआ, युद्ध क्षेत्र से भागकर संन्यासी बनने की बात भी उसने कही तो तुरंत ही कृष्ण ने गीता का उद्भव कर दिया। ऐसा ही प्रत्येक शिष्य के साथ होता है। शिष्य तो बर्तन में रखे पानी के समान हिलते-डुलते रहते हैं। विश्वास और अविश्वास उनके साथ लगा ही होता है फिर भी उनकी नैया निश्चित ही पार हो जाती है। भव सागर से तारने वाले बल का नाम ही तारा शक्ति है। जो तारे वही तारा महाविद्या। तारा महाविद्या में दक्ष होकर ही श्रीकृष्ण ने सभी को भव सागर से तार दिया। युद्धोपासना का यह अंक तारा महाविद्या को समर्पित है।

॥ दीक्षया तत्पदम् आप्नुयात् ॥
दीक्षा से ही ईश्वर तक पहुँचा जा सकता है।

दीक्षाएं

- ✿ सर्वबाधा निवारण दीक्षा
- ✿ ऋण मुक्ति दीक्षा
- ✿ रोग मुक्ति दीक्षा
- ✿ सरस्वती दीक्षा
- ✿ ज्ञान दीक्षा
- ✿ तंत्र बाधा निवारण दीक्षा
- ✿ पितृदोष निवारण दीक्षा
- ✿ भाग्योदय दीक्षा
- ✿ शत्रु बाधा निवारण दीक्षा
- ✿ राज्याभिषेक दीक्षा
- ✿ ज्योतिषज्ञान प्राप्ति दीक्षा
- ✿ योग सिद्धि दीक्षा
- ✿ मंगली दोष निवारण दीक्षा
- ✿ व्यापार वृद्धि दीक्षा
- ✿ ईष्ट दर्शन दीक्षा

- ✽ महाकाली दीक्षा
- ✽ महालक्ष्मी दीक्षा
- ✽ शीघ्र विवाह दीक्षा
- ✽ पुत्र प्राप्ति दीक्षा
- ✽ मुकदमों में सफलता प्राप्ति दीक्षा
- ✽ ग्रहबाधा दोष निवारण दीक्षा
- ✽ गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा
- ✽ स्वतः भाग्य लेखन दीक्षा
- ✽ मनोकामना सिद्धि दीक्षा
- ✽ कालज्ञान दीक्षा
- ✽ साधना साफल्य दीक्षा
- ✽ गर्भस्थ शिशु चैतन्य दीक्षा
- ✽ जगदम्बा सिद्धि दीक्षा
- ✽ ब्रह्मत्व प्राप्ति दीक्षा
- ✽ सप्तहृदय गुरु धारण दीक्षा
- ✽ हृदय चक्र जागरण दीक्षा
- ✽ भ्रम निवारण दीक्षा
- ✽ महामृत्युञ्जय दीक्षा
- ✽ मंत्र सिद्धि दीक्षा
- ✽ यंत्र सिद्धि दीक्षा
- ✽ तंत्र सिद्धि दीक्षा
- ✽ यश प्राप्ति दीक्षा
- ✽ शिव दर्शन दीक्षा
- ✽ वाणी सिद्धि दीक्षा
- ✽ भूत-बाधा निवारण दीक्षा
- ✽ सम्मोहन दीक्षा
- ✽ सौन्दर्य प्राप्ति दीक्षा
- ✽ गृह क्लेश निवारण दीक्षा
- ✽ दाम्पत्य जीवन साफल्य दीक्षा
- ✽ आत्म उन्नति दीक्षा
- ✽ अकाल मृत्यु निवारण दीक्षा

- ✽ तीव्र भाग्योदय दीक्षा
- ✽ काल सर्प योग निवारण दीक्षा
- ✽ दुर्घटना नाशक दीक्षा

नोट : उपरोक्त दीक्षाएँ मांसाहार एवं मदिरापान करने वालों पर क्रियाशील नहीं होंगी। सभी दीक्षाएँ फोटो द्वारा भी प्रदान की जाती हैं। फोटों से दीक्षा प्राप्त करने वाले पत्र के साथ एक बिल्व पत्र (बेल पत्ती) अवश्य भेजें।

जबाबी लिफाफे के अभाव में पत्रोत्तर की अपेक्षा न करें।

दीक्षा संस्कार सम्बन्धित कार्यक्रम में अर्थ का उपयोग निषिद्ध है। सभी दीक्षाएँ आजीवन निःशुल्क सम्पन्न की जायेंगी। (गुरु आज्ञा)

सभी दीक्षाएँ निम्न पते पर प्रदान की जायेंगी-

साधना सिद्धि विज्ञान

फ्लेट नं. 1, 2 मिनाल व्यू-॥ पंजाबी बाग, भोपाल,
दूरभाष: 583637, 576346, 591143, 284177,

271116

-: दीक्षाओं का समय :-

प्रत्येक रविवार सायं 5 बजे से 8 बजे तक
(अन्य दिवसों पर पूर्व अनुमति से)



विशेष दीक्षाएँ

प्रत्येक गुरुवार को डॉ. साधना जी द्वारा विशेष शक्तिपात युक्त दीक्षाएँ प्रदान की जाती हैं साथ ही साधकों/शिष्यों की तमाम जिज्ञासाओं का समाधान भी निःशुल्क रूप से किया जाता है। दीक्षा सम्बन्धी जानकारी एवं आध्यात्मिक जिज्ञासाओं और सभी प्रकार की समस्याओं के लिए पाठक एवं साधकगण गुरु माँ साधना जी से दूरभाष क्रमांक 554925, 271116 पर सीधे बात कर सकते हैं।

उदासी एवं मानसिक अवसाद (होम्यो. चिकित्सा)

(सुप्रसिद्ध होम्योपैथ डॉ. साधना द्वारा)

निरंतर एक जैसा जीवन जीने के कारण या आज के युग में अत्यधिक भागम-भाग के कारण मनुष्य के मन में अचानक निराशा एवं उदासीनता के भाव प्रकट होने लगते हैं। इस बीमारी में जीवन शक्ति का अत्यधिक हास हो जाता है और रोगी के अंदर उत्साह एवं उल्लास की कमी आ जाती है। उसे जीवन जीने के लिए निरंतर प्रोत्साहन एवं सहारे की जरूरत मालूम पड़ने लगती है। ऐसे रोगियों को निरंतर प्यार एवं सद्भावना की अत्यधिक आवश्यकता होती है। जीवन में अवसाद एवं उदासी आने के कई कारण हो सकते हैं जैसे कि जीवन के हर क्षेत्र में निरंतर असफल होते रहना, लंबे समय तक गंभीर रोगों से ग्रसित रहना, परिवार का वातावरण अनुकूल न होना, यौन इच्छा की पूर्ति न हो पाना, अर्थ का अभाव रहना, बहुत अधिक व्यस्त जीवन जीना, जीवन साथी का वियोग हो जाना, अचानक सदमा लग जाना, शरीर में विशेष प्रकार का रासायनिक परिवर्तन होना, लंबे समय तक मद्यपान या अन्य नशीले पदार्थ का सेवन करना इत्यादि।

उदासीनता की गंभीर अवस्था आ जाने पर रोगी को सहानुभूति एवं मानसिक प्रोत्साहन के साथ-साथ निम्नलिखित होमियोपैथिक औषधियों का सेवन करने से लाभ मिलता है।

- ❖ लंबे समय से मानसिक कष्टों के साथ-साथ शारीरिक बीमारियों से भी ग्रसित रहना, बीमारी के कारण आत्महत्या करने की इच्छा होना जैसे लक्षणों में **आर्सेनिक 30** का सेवन हितकर है।
- ❖ अचानक अकेले हो जाने का भय मन में बैठ जाना, मानसिक रूप से दबाव महसूस होना, निरंतर दुख प्रकट करना एवं उदास रहना जैसे लक्षणों में **लायकोपोडियम 30** का सेवन हितकर है।
- ❖ एकांत में बैठकर दुखी होते रहना एवं हमेशा रोते-धोते रहना, दूसरों की सांत्वना के कारण और भी गंभीर हो जाना, स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाना, शारीरिक स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण हमेशा उदास रहना जैसे लक्षणों में **नैट्रम म्यूर 200** का सेवन हितकर है।

❖ किसी भी प्रकार के मानसिक अवसाद की स्थिति में **इंग्रेशिया 200** का सेवन करने से रोगी को निश्चित लाभ मिलता है। यदि रोगी के अंदर उदासी का कारण भय, व्यर्थ की चिंता या कोई शोक है तो यह औषधि तुरंत लाभ प्रदान करती है। ऋतु संबंधी तकलीफों के कारण स्त्री की मानसिक दशा ठीक न होने पर भी उपरोक्त औषधि का सेवन किया जा सकता है।

❖ जीवन के प्रति घृणा के भाव आ जाना, हमेशा रोते रहना व बार-बार आत्महत्या करने की कोशिश करना जैसे लक्षणों में **आरम म्यूर 3x** का सेवन हितकर है।

❖ रोगी का हमेशा कुछ न कुछ सोचते रहना, स्वयं में डूबे रहना, लोगों के बीच उठने-बैठने से कतराना एवं चेहरे पर सदैव उदासी के भाव प्रकट होना जैसे लक्षणों में **काक्युलस 30** का सेवन हितकर है।

❖ अत्यधिक धार्मिक एवं अध्यात्मिक चिंतन में डूबे रहना, स्वयं की गलती हमेशा निकालते रहना, हीन भावना से ग्रसित होना, रोगी के अंदर स्वच्छता की प्रवृत्ति न होना, पुराने वस्त्रों के प्रति अत्यधिक मोह होना, रात्रि के समय अचानक पसीने से तर-बतर हो जाना जैसे लक्षणों में **सल्फर 30** का सेवन हितकर है।

❖ स्त्री रोगों से ग्रसित होने के कारण हमेशा उदास रहना एवं स्वभाव में चिड़चिड़ाहट आ जाना, शरीर के निचले हिस्सों का ठंडा पड़ने लगना, दूसरों के प्रति व्यवहार का ठीक न होना, व्यर्थ का घमंड प्रकट करना, विशेषकर स्त्रियों में प्रसव के बाद स्वभाव में विपरीत परिवर्तन आ जाना जैसे लक्षणों में **प्लेटिना 30** का सेवन हितकर है।

❖ अनियमित ऋतु स्राव होने के कारण अत्यधिक मानसिक अवसाद उत्पन्न हो जाना, नींद का ठीक से न आना, चेहरे पर दाग धब्बे दिखाई पड़ना, भविष्य के प्रति आशंकित रहना, डिंबग्रंथि एवं गर्भाशय की बीमारियों से ग्रसित होना, थोड़ी-थोड़ी बातों पर आत्महत्या करने की इच्छा होना जैसे लक्षणों में **सिमिसिफ्यूगा 30** स्त्रियों

के लिए अत्यधिक उपयोगी औषधि है।

- ❖ मानसिक खिन्नता एवं उदासी के कारण भूख न लगना, शारीरिक रूप से अत्यधिक कमजोरी महसूस होना, स्नायविक दुर्बलता के कारण यौन इच्छा की पूर्ति न कर पाना, पेट में हमेशा कब्ज बने रहना जैसे लक्षणों में **एल्फा मडर टिंचर** की पाँच बूँदे एक गिलास स्वच्छ जल में डालकर रात्रि के समय लेने से नींद ठीक से आती है व स्नायविक दुर्बलता भी धीरे-धीरे खत्म हो जाती है।
- ❖ बिना किसी कारण के दूसरों को कोसते रहना, खाना खाने में अरुचि होना, भोजन स्वादहीन लगने लगना संवेदनायें न्यून हो जाना, देखने व सुनने की शक्ति का भी धीरे-धीरे कम होने लगना जैसे लक्षणों में **हेलेबोरस 30** का सेवन हितकर है।
- ❖ रात्रि के समय अचानक चौंक-चौंककर उठ जाना, प्रातःकाल नींद का ठीक से न आना, अत्यधिक मद्यपान एवं अन्य नशीले पदार्थों का सेवन करने का आदी होना, कई स्त्रियों से शारीरिक संबंध होना जैसे लक्षणों में **नक्सवोमिका 30** का सेवन हितकर है। उपरोक्त औषधि के प्रति संवेदनशील रोगी बिना नशा किये हुए चुपचाप एवं उदास बैठा रहता है। मद्यपान इत्यादि करने के बाद ही उसके अंदर उमंग जागृत होती है।
- ❖ अकारण भय-ग्रस्त रहना, हमेशा मृत्यु-भय के कारण उदास रहना, रात्रि के वक्त ठीक से नींद न आना एवं बिस्तर पर अत्यधिक बेचैन होकर पाँव का अचानक सुन्न हो जाना जैसे लक्षणों में **एकोनाइट नेप 30 व 200** का सेवन हितकर है।
- ❖ जीवन में अत्यधिक विषम परिस्थितियों के कारण रोगी का हिम्मत हार बैठना एवं तंग आकर आत्महत्या की इच्छा प्रकट करना जैसे लक्षणों में **आरम मेट 30 व 200** का सेवन हितकर है।
- ❖ हमेशा मृत्यु व मृत्यु के बाद की स्थिति के बारे में सोचना, मोक्ष प्राप्ति की तीव्र इच्छा होना, त्वचा रोगों से ग्रसित होना, मानसिक रूप से हमेशा उदास रहना, जैसे लक्षणों में **ग्रेफाइटिस 30** का सेवन हितकर है।
- ❖ रोगी का गंभीर रूप से मानसिक अवसाद से ग्रसित होना, अचानक ही फूट-फूटकर रोने लगना जैसे लक्षणों में **एम्पोनिया कार्ब 200** का सेवन हितकर है।

- ❖ मानसिक अवसाद से ग्रसित रहने के कारण पेट संबंधी गंभीर समस्यायें उत्पन्न हो जाना, शौच जाते समय काफी समय लेना व मल का कड़ा टुकड़ों-टुकड़ों में होना जैसे लक्षणों में **प्लम्बम 30** का सेवन हितकर है।
- ❖ अचानक किसी मानसिक आघात या प्रियजन की मृत्यु के कारण संपूर्ण शरीर का बर्फ के समान ठंडा पड़ जाना, रोगी को अंदर से गर्मी महसूस होना व वस्त्र उतारकर फेंक देना जैसे लक्षणों में **केम्पर 30** का सेवन हितकर है।
- ❖ अचानक किसी अप्रत्याशित शुभ समाचार मिलने के कारण रोगी का मानसिक आघात से ग्रसित हो जाना जैसे लक्षणों में **कॉफिया 30** का सेवन हितकर है।
- ❖ अत्यधिक मासिक स्त्राव होने के कारण स्त्रियों में रक्त की कमी आ जाना, चेहरे का भाव शून्य हो जाना, किसी भी काम में मन न लगना जैसे लक्षणों में **चायना 30** का सेवन हितकर है।
- ❖ प्रत्येक परिस्थिति में उदासीन बने रहना, कभी भी खुशी व दुख का इजहार न करना, हमेशा शारीरिक कष्ट झेलना, मूर्खों के समान व्यवहार करना, सोचने की क्षमता का हास हो जाना जैसे लक्षणों में **कार्बोवेज 30 व 200** का सेवन हितकर है।
- ❖ स्त्री के अंदर अत्यधिक कामकाज के कारण उदासी आ जाना, घर का वातावरण अनुकूल न होना, स्त्री का हमेशा प्रताड़ित होते रहना, जीवन से असंतुष्ट रहना, पति का स्नेह न मिल पाना जैसे कारणों से स्त्री के अंदर उदासीनता के भाव आ जाने पर **सीपिया 30** का सेवन हितकर है। उपरोक्त औषधि स्त्री रोगों में अत्यधिक लाभकारी है। कमजोरी इत्यादि के कारण यौन सुख का आनन्द न ले पाना, योनि के अंदर घाव होना, गर्भाशय का विभिन्न बीमारियों से ग्रसित होना, श्वेत-प्रदर से ग्रसित रहना जैसे लक्षणों में उपरोक्त औषधि स्त्रियों के लिए अत्यधिक हितकर है।
- ❖ रोगी का अंदर से निराशावादी होना, स्वर यंत्र का ठीक से काम न करना, जोड़ों का विकृत होना, भविष्य के प्रति आशंकित रहना जैसे लक्षणों में **मानसिक उदासीनता** आने पर **क्रिस्टिकम 30 व 200** का सेवन हितकर है।

४४

साधना सिद्धि विज्ञान
के प्रकाशन के एक वर्ष पूर्ण होने पर पत्रिका
की ओर से अनुपम भेंट पूर्व प्रकाशित सभी 12
अंकों का सेट (मूल्य मात्र 101/- रुपये)

- ✽ यह एक ऐसी पत्रिका है जो अध्यात्म के विविध पहलुओं को स्पर्श करती है
- ✽ पत्रिका में आप पायेंगे अध्यात्म, दर्शन, पूजा पद्धति, योग, आयुर्वेद होम्योपैथी आदि के अलावा विभिन्न प्राच्य विद्याओं पर समग्र चिंतन
- ✽ शास्वत् मूल्यों पर आधारित एक क्रियात्मक पत्रिका जिसमें उपलब्ध सामग्री जीवन के हर क्षण में आपके लिए उपयोगी सिद्ध होगी

आज ही अपनी प्रतियाँ सुरक्षित करा लें,
प्रतियाँ सीमित हैं

सम्पर्क
साधना सिद्धि विज्ञान
फ्लेट नं. 1,2 मिनाल व्यू-॥ पंजाबी बाग भोपाल
दूरभाष : (0755) 576346, 591143

नोट: 101/- रुपये ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा भेजने पर आपको सभी 12 अंकों का सेट (जिनकी कीमत 220/- रुपये है) भेज दिया जायेगा।

तांत्रोक्त हनुमंत प्रयोग

मनोज भटनागर (भोपाल)

अजर, अमर, अखण्ड ब्रह्मचारी, पवनपुत्र, रुद्रावतार आदि नामों से प्रसिद्ध प्रबल पराक्रमी श्री हनुमान जी की महिमा किसी से छिपी नहीं है। संसार में ऐसा कोई कार्य नहीं है जो हनुमान जी के लिए असम्भव हो। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के प्रिय सेवक श्री हनुमान जी की उपासना करने से साधक को बुद्धि, बल, कीर्ति, धीरता, निर्भीकता, आरोग्य, सुदृढ़ता और वाक्पटुता की प्राप्ति होती है सभी वैदिक ग्रंथों में श्री हनुमान जी की उपासना की महत्ता को प्रतिपादित किया गया है। श्री हनुमान जी की कृपा प्राप्ति तथा विभिन्न प्रयोजनों की पूर्ति के लिए यहाँ कुछ दुर्लभ प्रयोग दिए जा रहे हैं जिनका असर रामबाण की तरह होता है।

प्रयोग विधि

साधक को चाहिए कि वह स्नानादि से निवृत्त होकर लाल वस्त्र धारण कर स्वच्छ पूजा स्थल पर उत्तर या पूर्व की ओर मुँह करके आसन पर बैठें। सर्वप्रथम निम्नानुसार विनियोग व न्यास करें।

साधक के सम्मुख श्री हनुमान जी की प्रतिमा या यंत्र चौकी पर लाल वस्त्र के ऊपर स्थापित होना चाहिए। विनियोग व न्यास के पश्चात् गुरु पूजन सम्पन्न करें तत्पश्चात् बजरंगबली का ध्यान करें और विविध उपचारों से हनुमान जी का पूजन कर निम्न मंत्र का 12 हजार जप करें।

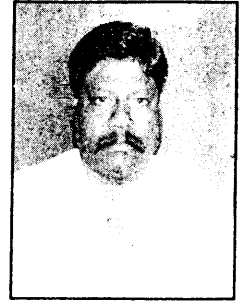
हौं हस्त्रे ख्त्रे हस्त्रौं हस्त्रे ह् सौं हनुमते नमः॥

विनियोग

अस्य श्री हनुमन्महामन्त्रराजस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः, जगतीच्छन्दः, श्रीहनुमान्, देवता, ह् सौं बीजं, हस्त्रे शक्तिः श्रीहनुमत्-प्रसादसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास

श्रीरामचन्द्र ऋषये नमः (शिरसि)। जगतीच्छन्दसे नमः (मुखे)। श्रीहनुमदेवतायै नमः (हृदये)। हसौं बीजाय नमः (गुह्ये)। हस्त्रे शक्तये नमः (पादयोः)। (इसमें कीलक नहीं है)। विनियोगाय नमः (सर्वांगे)।



मन्त्रोक्त छः बीजों से करन्यास एवं षडंगन्यास करें। पूरे मंत्र के एक-एक अक्षर से-

मस्तके, ललाटे, नेत्रयोः, मुखे, कण्ठे, बाहवोः, हृदये, कुक्षयोः, नाभौ, लिंगे, जान्वोः चरणयोः बोलते हुए द्वादशांग न्यास करें।

इसी प्रकार छः बीज और दो पदों से-

मस्तके, ललाटे, मुखे, हृदये, नाभौ, ऊर्वो, जङ्घयोः, चरणयोः, बोलते हुए अष्टांग न्यास करें।

ध्यान

उद्यत्कोट्यकेसइकाशं जगत्प्रक्षोभकारकम्।
श्रीरामाङ्घ्रिध्याननिष्ठं, सुग्रीवप्रमुखार्चितम्॥
महाबलसमायुक्तं भक्तभीति-निवारकम्।
वित्रासयन्तं नादेन राक्षसान् मारुतिं भजे॥

इस प्रकार पूजन सम्पन्न करने के पश्चात् जिस प्रयोजन के लिए प्रयोग करना है उसके अनुसार आगे वर्णित मंत्र निर्धारित संख्या में जप करने से मनोनुकूल फल प्राप्त होता है।

बन्धन मुक्ति के लिए

“हरि मर्कट मर्कट वाम करे
परिमुञ्चति मुञ्चति श्रृंखलिकाम्।

इस मंत्र को दायें हाथ पर बायें
हाथ से लिखकर मिटा दें और 108
बार इसका जप करें।

ब्रह्मचर्य रक्षा एवं तत्त्व ज्ञान के
लिए

ॐ नमो हनुमते मम मदनक्षोभं
संहर संहर आत्मतत्त्वं प्रकाशय
प्रकाशय हुं फट् स्वाहा।

भूत-प्रेत नाश के लिए

ॐ श्री महाञ्जनेयाय
पवनपुत्रावेशयावेशय ॐ श्री
हनुमते फट्।

प्रेतबाधानिवारण के लिए-

ॐ दक्षिणमुखाय पुचमुखहनुमते करालवदनाय
नारसिंहाय नारसिंहाय ॐ हां हीं हूं हौं हः
सकलभूतप्रेतदमनाय स्वाहा।

इस मंत्र का जप दस हजार बार करें तथा अष्ट गंध
से हवन सम्पन्न करें।

विषापहार के लिए

ॐ पश्चिममुखाय गरुडाननाय पंचमुखहनुमते मं मं
मं मं मं सकलविषहराय स्वाहा।

इस मंत्र का जप दीपावली के दिन अर्धरात्रि में हनुमान
जी के सम्मुख घृतदीप जलाकर दस हजार बार करें।

शत्रु संकट निवारण के लिए

ॐ पूर्वकपिमुखाय पंचमुखहनुमते टं टं टं टं टं
सकलशत्रुसंहरणाय स्वाहा।

इस मंत्र का पंद्रह हजार बार जप करें।



महामारी, अमंगल एवं ग्रहदोष निवारण के लिए

ॐ उत्तरमुखाय आदि वराहाय लं लं लं लं लं लं सी
हं सी हं नीलकण्ठमूर्तये लक्ष्मणप्राणदात्रे वीरहनुमते
लंकोपदहनाय सकल सम्पत्तिकराय पुत्र पौत्राद्यभीष्ट
कराय ॐ नमः स्वाहा।

वशीकरण के लिए

ॐ नमो भगवते पंचवदनाय हनुमते ऊर्ध्वमुखाय
हयग्रीवाय रुं रुं रुं रुं रुं रुं रुद्रमूर्तये सकललोक
वशकराय वेदविद्यास्वरूपिणे ॐ नमः स्वाहा।

ॐ

नोट- यहाँ यह ध्यान देना आवश्यक है कि
उक्त प्रयोगों में प्रयुक्त यंत्र व माला पूर्णतः
चैतन्य व प्राण प्रतिष्ठित होनी चाहिए। दिव्यतम
वैदिक मंत्रों द्वारा चैतन्यता प्राप्त सामग्री के
अभाव में अभीष्ट सिद्धि की कामना न करें।

कुमारी पूजन

यह एक ऐसा दुर्लभ व अमोघ प्रयोग है जिसे सम्पन्न कर लेने से न सिर्फ तमाम ज्ञात-अज्ञात शत्रुओं व बाधाओं से साधक की रक्षा होती है बल्कि वह पृथ्वी, विद्या और अपार तेज का स्वामी होता है। कुमारी पूजन वर्ष में एक बार अवश्य सम्पन्न करना चाहिये। प्रायः सभी बड़े पर्वों और खासकर महानवमी की तिथि को कुमारी पूजन का विशेष महत्व है।

रुद्रयामल में कुमारी पूजन के महत्व को प्रतिपादित करते हुये कहा गया है कि कुमारी पूजा से मनुष्य सम्मान, लक्ष्मी, धन, पृथ्वी, श्री, सरस्वती और महान तेज प्राप्त कर लेता है उसके ऊपर दसों महाविद्यायें और देवगण प्रसन्न होते हैं इसमें कोई संदेह नहीं है। कुमारी पूजन मात्र से पुरुष त्रिभुवन को वश में कर लेता है और उसे परमशांति मिलती है।

योगिनी तन्त्र में कहा गया है कि कुमारी पूजा का फल अवर्णनीय है इसलिए सभी जाति की बालिकाओं का पूजन करना चाहिए कुमारी पूजन में जातिभेद का विचार करना उचित नहीं है। जाति भेद करने से मनुष्य नरक से छुटकारा नहीं पाता। संशय में पड़ा हुआ मंत्र साधक अवश्य पातकी होता है इसलिए भक्त को चाहिए कि देवीबुद्धि से कुमारी पूजन करें क्योंकि कुमारी सर्वविद्यास्वरूपिणी है इसमें कोई संदेह नहीं है। जहाँ पर कुमारी पूजन होता है वह देश परम पावन होता है और उस स्थान से चारों ओर पाँच कोस तक पृथ्वी पवित्र हो जाती है।

कुमारी पूजन पूर्ण श्रद्धा व भक्ति के साथ मातृ भाव से करना चाहिए। साधक के मन में किसी प्रकार का विकार आने पर वह नरक का भागी होता है काली तन्त्र के अनुसार वस्त्र, आभूषण और भोजन आदि से कुमारी

पूजन करने से मन्द भाग्य पुरुष भी विजय और मंगल प्राप्त करता है। साधक को चाहिए कि फल, फल अनुलेप और बालप्रिय नैवेद्य आदि देकर उनकी सेवा भाव में प्रवृत्त हो जाय। कन्या ही सबसे बड़ी समृद्धि और सबसे उत्तम तपस्या है। वीर पुरुष कुमारी पूजन से कोटि गुना फल प्राप्त करता है। यदि कुलीन पण्डित कन्या को पुष्पान्जलि अर्पण करे तो वह पुष्प करोड़ों सुवर्णमय मेरु के समान हो जाता है। उस मेरु के दान का जो पुण्य है उसे वह उसी क्षण प्राप्त कर लेता है। साधक कुमारी भोज कराकर त्रिभुवन को तृप्त कर लेता है।

“वृहन्नीलतन्त्र” कहता है कि महान भय, दुर्भिक्ष, आदि उत्पात, दुःस्वप्न, दुर्मृत्यु तथा मनुष्यों के लिए अन्य जो दुखदायी समय हैं वे सभी कुमारी पूजन से असम्भव हो जाते हैं। विधिपूर्वक कुमारी पूजन करने से पूजित कुमारियां विघ्न, भय और अत्यन्त उत्कृष्ट शत्रुओं को भी नष्ट कर डालती हैं। कुमारी पूजन करने वाले के ग्रह, रोग, भूत और सर्पादि से होने वाले भय मिट जाते हैं।

‘रुद्रयामल’ के अन्य एक प्रसंग के अनुसार कुमारी साक्षात् योगिनी और श्रेष्ठ देवता है। कुमारी को पाद्य, अर्घ्य, धूप, कुंकुम और शुभ चंदन आदि अर्गण करके भक्ति भाव से उसकी पूजा करनी चाहिए। जो कन्या की पूजा करता है उसके ऊपर असुर, दुष्ट नाग, दुष्ट ग्रह, भूत वेताल, गन्धर्व, डङ्किनी, यक्ष, राक्षस तथा अन्य सभी देवता, भूः भुवः स्वह, भैरवगण, पृथ्वी, आदि बृह्माण्ड, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, ईश्वर और सदाशिव ये सभी प्रसन्न होते हैं।

कुमारी निरूपण-

विभिन्न वैदिक ग्रन्थों ने कुमारी पूजन को न सिर्फ महत्व

दिया है बल्कि इसे सर्वोपरि माना है। आयु के आधार पर कुमारी कन्याओं को देवी के विविध स्वरूप मानकर पूजन करना चाहिए जैसे तो 1 वर्ष से लेकर सोलह वर्ष तक की कन्याओं के पूजन का विधान है किन्तु इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कन्या का ऋतु चक्र प्रारम्भ न हुआ हो। मासिक धर्म शुरू होने के पश्चात् कन्या का पूजन निषिद्ध है। सनातन धर्म में 'नारी' को हमेशा सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है और ऐसी मान्यता है कि "यत्र नारियेषु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता" किन्तु कुमारी पूजन का विधान अलग है।

'रुद्रयामल' में 1 वर्ष से लेकर 16 वर्ष तक की कन्याओं का पूजन प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा तक वृद्धि भेद से करने का उल्लेख किया गया है अर्थात् प्रतिपदा को 1 वर्ष की कन्या का पूजन द्वितीया को 2 वर्ष इसी क्रम से पूर्णिमा तक पूजन करना चाहिए। एक वर्ष की उम्र वाली कन्या "संध्या" दो वर्ष की "सरस्वती" तीन वर्ष की "त्रिधामूर्ति" चार वर्ष की "कालिका" पांच वर्ष की "सुभागा" छः वर्ष की "उमा" सात वर्ष की "मालिनी" आठ वर्ष की "कुब्जा" तथा 9 वर्ष की कन्या "काल सन्दर्भा" कहलाती है।

इसी प्रकार 10 वें वर्ष में "अपराजिता" ग्यारहवें वर्ष में "रुद्राणी" बारहवें वर्ष में "भैरवी" तेरहवें वर्ष में "महालक्ष्मी" चौदह पूर्ण होने पर "पीठ नायिका" पन्द्रहवें वर्ष में "क्षेत्रज्ञा" और सोलहवें वर्ष में अम्बिका मानी जाती हैं।

"मंत्र महोदधि" में दो वर्ष से लेकर 10 वर्ष तक की कन्याओं के पूजन का उल्लेख किया गया है। इस ग्रंथ के अनुसार दो वर्ष की उम्र वाली कन्या "कुमारी" तीन वर्ष की "त्रिमूर्ति" चार वर्ष की "कल्याणी" पांच वर्ष की "रोहणी" छः वर्ष की "कालिका" सात वर्ष की "चण्डिका" आठ वर्ष की "साम्भवी" नौ वर्ष की "दुर्गा" और दस वर्ष की "सुभद्रा" कही गयी है सभी वैदिक ग्रंथों में कुमारी पूजन के फल के बारे में कहा गया है कि-

कुमारी पूजनफलं वक्तुं नार्हामि सुन्दरि।

जिह्वाकोटि सहस्रैस्तु वक्त्रकोटिशतैरपि॥

उपर्युक्त पंक्तियों का आशय यह है कि अनेक जिह्वा

और अनेक मुखों से भी इस पूजा का महत्व वर्णित नहीं हो सकता।

पूजन विधान-

साधक को चाहिए कि वह स्नानादि नित्य क्रियाओं से निवृत्त होकर पूजन के एक दिन पूर्व कन्या के घर जाय वहाँ मूलमंत्र का स्मरण करके नारियल और सुपारी अर्पित करते हुये प्रार्थना करे कि- भगवती कुमारिका मै आपको पूजन के लिए निमन्त्रित करता हूँ आप पधारकर कृतार्थ करें आवाहन का मन्त्र निम्नानुसार है-

मन्त्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातृकारूप धारिणीम्।

नवदुर्गात्मिकां साक्षात् कन्यामावाहयाम्यहम्॥

इस प्रकार पहले दिन विधिवत आमंत्रण देकर अगले दिन नित्य पूजा के पश्चात् पूजा गृह से अलग कन्या को आसन पर बिठाकर उसके चरण प्रक्षालित करें तत्पश्चात् पूजा गृह में लाकर चौकी पर पश्चिमाभिमुख बिठायेँ और स्वयं आसन पर बैठें तथा कुमारी पूजन का संकल्प लें। सर्वप्रथम गणेश पूजन व गुरु पूजन सम्पन्न कर पीठ पूजा करके कुमारी देवी का आवाहन कर ध्यान तथा विविध उपचारों से पूजन करें तत्पश्चात् भोजन करायेँ। कुमारी के भोजन करने के दौरान अपने ईष्ट मंत्र अथवा गुरु मंत्र या नवार्ण मंत्र का जप करते रहें। भोजन कर लेने पर कुमारी के हस्त प्रक्षालित कर ताम्बूल समर्पित करें व आरती करने के उपरान्त यथाशक्ति वस्त्र अलंकार व द्रव्य दक्षिणा अर्पित करें और प्रणाम करके विसर्जित अर्थात् विदा करें।

पूजा मंत्र-

प्रत्येक दिन कुमारी के चतुर्थी विभक्त्यन्त नाम के पहले "ऐं ह्रीं श्रीं ह्रूं हसौ" इन बीज मन्त्रों को तथा अन्त में नमः लगाना चाहिए। यदि नवरात्रि में पूजन करना हो तो "प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी" इस क्रम से नवों रूपों का पूजन करना चाहिए तथा पूजन सामाग्री (विविध उपचार) अर्पित करते हुए "ऐं ह्रीं क्लीं शैल पुत्र्यै नमः" मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

कुमारी पूजन के साथ-साथ बाल भैरव की पूजा करने का भी विधान है। बाल भैरव के पूजन में "कर कलित कपालः वन्दे बालं" अथवा ऊँ ह्रीं वं वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं ऊँ इस मंत्र के

साथ बाल भैरवा नमः जोड़कर पूजन करें।

साधक यदि चाहता है कि कुमारी पूजन के साथ कुमारी स्तोत्र का पाठ भी कर सकते हैं जिससे पूजन को पूर्णता मिलती है तथा अभीष्ट सिद्धि का मार्ग आसान हो जाता है।

कुमारी-स्तोत्रम्

जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्ति स्वरूपिणि।
पूजा गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोस्तुते॥

त्रिपुरां त्रिपुराधारां त्रिवर्षा ज्ञानरूपिणीम्।
त्रैलोक्य-वन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम्॥

कालात्मिकां कलातीतां कारुण्यहृदयां शिवाम्।
कल्याणजननीं देवीं कल्याणीं पूजयाम्यहम्॥

अणिमादिगुणाधाराम् अकाराद्यक्षरात्मिकाम्।
अनन्तशक्तिकलां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम्॥

कामाचारीं शुभा कान्तां कालचक्रस्वरूपिणीम्।
कामदां करुणोदारां कालिकां पूजयाम्यहम्॥

चण्डवीरां चण्डमायां चण्डमुण्डप्रभञ्जनीम्।
पूजयामि सदा देवीं चण्डिकां चण्डविक्रमाम्॥

सदानन्दकरीं शान्तां सर्वदेव-नमस्कृताम्।
सर्वदेवात्मिकां लक्ष्मीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम्॥

दुर्गमे दुस्तरेकाग्र्यं भवदुःखविनाशिनीम्।
पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गार्त्तिनाशिनीम्॥

सुन्दरीं सर्ववर्णाभां सुखसोभाग्यदायिनीम्।
सुभद्राजननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम्॥

इति कुमारीस्तोत्रम्

४५



सूर्य उपासना साधना शिविर



उपरोक्त शिविर में विभिन्न दीक्षाये प्रदान की जायेंगी तथा साधकों की जिज्ञासाओं का समाधान किया जायेगा साथ ही अत्यंत दुर्लभ भास्कर साधना सम्पन्न कराई जायेगी। साधना सिद्धि विज्ञान के अंतर्गत होने वाले सभी शिविर पूर्ण रूप से आडम्बरहीन वातावरण में आजीवन निःशुल्क सम्पन्न किये जायेंगे। शिविर में विशेष रूप से साधकों को शनि जैसे कष्टप्रद ग्रह की पीड़ा से मुक्ति दिलाने वाली दुर्लभ दीक्षा प्रदान की जायेगी।

विशेष : प्रत्येक माह की 21 तारीख को आयोजित होने वाले शिविरों में भगवान पारदेश्वर का रुद्राभिषेक वैदिक विधि-विधान से सम्पन्न किया जाता है। शिविर में उपस्थित सभी शिष्य/साधक रुद्राभिषेक में बिना किसी शुल्क के सम्मिलित हो सकते हैं।

विस्तृत जानकारी के लिए

: शिविर स्थल :

दूरभाष क्रमांक. 576346, 583637, 554925

1,2 मिनाल व्यू-2 पंजाबी बाग भोपाल

पर सम्पर्क किया जा सकता है।

घर में लक्ष्मी के चिरस्थाई निवास तथा धन, धान्य, यश, प्रसिद्धि
व मान, सम्मान की प्राप्ति हेतु
दीपावली के शुभ मुहूर्त में दिव्यतम मंत्रों द्वारा प्राण प्रतिष्ठित



पारद लक्ष्मी

मूल्य 2100/-

विवाह में आ रही बाधाओं, गृहकलह के शमन तथा
मंगलमय जीवन के लिए आज ही प्राप्त करें



पारद गणपति

मूल्य 2100/-

सम्पर्क
साधना सिद्धि विज्ञान

फ्लेट नं. 1,2 मिनाल व्यू-॥ पंजाबी बाग भोपाल

दूरभाष : (0755) 576346, 591143

नोट: उपरोक्त सामग्री मनीआर्डर अथवा ड्राफ्ट द्वारा निर्धारित राशि (20 रुपये डाक व्यय सहित) भेजने पर ही उपलब्ध हो सकेगी।

युद्ध तो गुरु और शिष्य में भी होता है

बारह वर्ष का वनवास एवं एक वर्ष का अज्ञात वास पूर्ण होने के पश्चात् जब अर्जुन का सामना उसको खोज रहे कौरवों एवं उनके गुरुओं से होता है तो उसके अंदर का योद्धा जाग उठता है। वह शमी वृक्ष पर रखे अपने अस्त्र-शस्त्र को उठा क्रोध के साथ अकेले ही कौरवों से लड़ने निकल पड़ता है और फिर एक भीषण संघर्ष छिड़ता है महाभारत के युद्ध से पूर्व यह एक प्रकार से अर्जुन का युद्धाभ्यास ही था। इस युद्ध में वह अपने समक्ष द्रोण, कृपाचार्य, भीष्म पितामह जैसे गुरुओं को पाता है एवं उन्हें पराजित भी करता है। इस युद्ध में कर्ण, अस्वस्थामा, दुर्योधन इत्यादि तो अर्जुन के युद्ध कौशल के सामने दुम दबाकर भाग उठते हैं। यह युद्ध आने वाले महाभारत की आहट भर है। नीचे मैं पाठकों के लिए कुछ दृश्यों को प्रस्तुत कर रहा हूँ कहने का सीधा सा तात्पर्य है युद्ध क्षेत्र में सम्बन्ध नहीं चलते।

जब कौरव सेना की व्यूहरचना हो गयी तो तुरंत ही अर्जुन अपने रथ की घरघराहट से आकाश को गुंजायमान करते हुए आ गये। यह सब देखकर द्रोणाचार्य ने कहा, वीरों! देखो, दूर से ही वह अर्जुन की ध्वजा का अग्रभाग दिख रहा है। यह उसी के रथ की घरघराहट है और उसकी ध्वजा पर बैठा हुआ वानर ही किलकारी मार रहा है। इस उत्तम रथ पर बैठा हुआ यह महारथी अर्जुन ही वज्र के

समान कठोर टङ्कार करने वाले गाण्डीव धनुष को खींच रहा है। देखो, एक साथ ही ये दो बाण मेरे पैरों पर आकर गिरे हैं और दो मेरे कानों को स्पर्श करते हुए निकल गये हैं। इस समय वह अनेकों अतिमानुष कर्म करके वनवास से लौटा है, इसलिये इनके द्वारा वह मुझे प्रणाम करता है और मुझसे कुशल-समाचार पूछता है। अपने बन्धु-बान्धवों के अत्यंत प्रिय अर्जुन को आज हमने बहुत दिनों में देखा है।

इधर अर्जुन ने कहा- सारथे! तुम रथ को कौरव सेना से इतनी दूरी पर ले चलो, जितनी दूर कि एक बाण जाता है। वहाँ से मैं देखूँगा कि कुरुकुलाधम दुर्योधन कहाँ है।

इसके बाद अर्जुन ने सारी सेना पर दृष्टि डालकर देखा, किन्तु उन्हें दुर्योधन कहीं दिखाई नहीं दिया। तब वे कहने लगे, मुझे दुर्योधन तो यहाँ दिखायी नहीं देता। मालूम होता है वह दक्षिणी मार्ग से गौएँ लेकर अपने प्राण बचाने के लिये हस्तिनापुर की ओर भाग गया है। अच्छा, इस रथ सेना को तो छोड़ दो; उस ओर चलो, जिधर दुर्योधन गया है। अर्जुन की आज्ञा पाकर उत्तर ने उसी ओर को रथ हाँक दिया, जिधर दुर्योधन गया था। दुर्योधन के पास पहुँचकर अर्जुन अपना नाम सुनाकर उसकी सेना पर टिड्ड़ियों के समान बाण बरसाने लगे। उनके छोड़े हुए बाणों से ढक जाने के कारण पृथ्वी और आकाश दिखायी

देने बंद हो गये। अर्जुन के शङ्ख की ध्वनि, रथ के पहियों की घरघराहट, गाण्डीव की टङ्कार और उनकी ध्वजा में रहने वाले दिव्य प्राणियों के शब्द से पृथ्वी काँप उठी तथा गौएँ पूँछ उठाकर रँभाती हुई सब ओर से लौटकर दक्षिण की ओर भागने लगीं।

अर्जुन धनुर्धारियों में श्रेष्ठ था, उसने शत्रुसेना को बड़े वेग से दबाकर गौओं को जीत लिया। इसके बाद युद्ध की इच्छा से वह दुर्योधन की ओर चला। कौरव वीरों ने देखा गौएँ तो तीव्र गति से विराट नगर की ओर भाग गयीं और अर्जुन सफल होकर दुर्योधन की ओर बढ़ा आ रहा है, तो वे बड़ी शीघ्रता से वहाँ आ पहुँचे। कौरवों की उस सेना को देखकर अर्जुन ने विराट कुमार उत्तर से कहा- राजपुत्र! आजकल दुर्योधन का सहारा पाकर कर्ण बड़ा अभिमानी हो रहा है, वह मुझसे युद्ध करना चाहता है, अतः पहले उसी के पास मुझे ले चलो।

उत्तर ने अर्जुन का रथ युद्ध भूमि के मध्य भाग में ले जाकर खड़ा किया। इतने में चित्रसेन, संग्रामजित, शत्रुसह और जय आदि महारथी वीर उसके मुकाबले में आ डटे। युद्ध छिड़ गया। अर्जुन ने इनके रथों को उसी प्रकार भस्म कर दिया, जैसे आग वन को जला डालती है। जब यह भयानक संग्राम हो रहा था, उसी समय कुरुवंश का श्रेष्ठ योद्धा विकर्ण रथ पर बैठकर अर्जुन के ऊपर चढ़ आया। आते ही वह विपाठ नामक बाणों की वर्षा करने लगा। अर्जुन ने उसका धनुष काटकर रथ की ध्वजा के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। विकर्ण तो भाग गया, किन्तु शत्रुन्तप नामक राजा सामने आकर अर्जुन के हाथ से मारा गया फिर तो जैसे प्रचण्ड आँधी के वेग से बड़े-बड़े जंगलों के वृक्ष हिल उठते हैं, उसी प्रकार अर्जुन की मार खाकर कौरव सेना के वीर काँपने लगे कितने ही आहत हो प्राण त्यागकर पृथ्वी पर गिर पड़े। इस युद्ध में इन्द्र के समान पराक्रमी वीर भी अर्जुन के द्वारा परास्त हुए। वह शत्रुओं का संहार करता हुआ युद्धभूमि में विचर रहा था, इतने

में कर्ण के भाई संग्राम जित से उसकी मुठभेड़ हो गयी। अर्जुन ने उसके रथ में जुते हुए लाल-लाल घोड़ों को मारकर ही बाण से उसका सिर काट लिया। भाई मारे जाने पर कर्ण अपने पराक्रम के जोश में आकर अर्जुन की ओर दौड़ा और बारह बाण मारकर उसने अर्जुन को बँध डाला, उसके घोड़ों को छेद दिया और राजकुमार उत्तर के हाथ में भी चोट पहुँचाई। यह देख अर्जुन भी, जैसे गरुड़ नाग की ओर दौड़े उसी प्रकार, कर्ण पर टूट पड़ा। ये दोनों वीर सम्पूर्ण धनुर्धारियों में श्रेष्ठ, महाबली और सब शत्रुओं का प्रहार सहने वाले थे। इनका युद्ध देखने के लिये सभी कौरव वीर ज्यों के त्यों खड़े हो गये।

अपने अपराधी कर्ण को सामने पाकर अर्जुन क्रोध और उत्साह से भर गया और एक ही क्षण में उसने इतनी बाण वृष्टि की कि रथ, सारथि और घोड़ों सहित वह छिप गया। इसके बाद कौरवों के अन्यान्य योद्धाओं को भी अर्जुन ने रथ और हाथियों सहित बेध डाला। भीष्म आदि भी अपने रथ सहित अर्जुन के बाणों से ढँक गये। इससे उनकी सेना में हाहाकार मच गया इतने में कर्ण ने अर्जुन के तमाम बाणों को काट दिया और अमर्ष में भरकर उसके चारों घोड़ों तथा सारथि को बँध दिया। साथ ही रथ की ध्वजा को भी काट डाला। इसके बाद उसने अर्जुन को भी घायल किया। कर्ण के बाणों से आहत होकर अर्जुन सोते हुए सिंह के समान जाग उठा और उसके ऊपर पुनः बाणों की वर्षा करने लगा। अपने वज्र के समान तेजस्वी बाणों से उसने कर्ण के बाँह, जंघा, मस्तक, ललाट और कण्ठ आदि अंगों को बँध डाला। कर्ण का शरीर क्षत-विक्षत हो गया, उसे बड़ी पीड़ा होने लगी फिर तो, जैसे एक हाथी से हारकर दूसरा हाथी भाग जाता है, उसी प्रकार वह युद्ध के मैदान से भाग खड़ा हुआ।

कर्ण के भाग जाने पर दुर्योधन आदि वीर अपनी-अपनी सेना के साथ धीरे-धीरे अर्जुन की ओर बढ़ आये। तब अर्जुन ने हँसकर दिव्य अस्त्रों का प्रयोग करते हुए कौरव

सेना पर प्रत्याक्रमण किया। उस समय उस सेना के रथ, घोड़े, हाथी और कवच आदि में से कोई भी ऐसा नहीं बचा था जिसमें दो-दो अंगुल पर अर्जुन के तीखे बाणों का घाव न हुआ हो। अर्जुन के दिव्यास्त्र का प्रयोग, घोड़ों की शिक्षा, उत्तर की रथ हाँकने की कला, पार्थ के अस्त्रसंचालन का क्रम और पराक्रम देखकर शत्रु भी बड़ाई करने लगे। अर्जुन प्रलयकालीन अग्नि के समान शत्रुओं को भस्म कर रहा था; उस समय उसके तेजस्वी स्वरूप की ओर शत्रु आँख उठाकर देख भी न सके। उसके दौड़ते हुए रथ को समीप आने पर एक ही बार कोई भी शत्रु पहचान पाता था, दुबारा उसे इसका अवसर नहीं मिलता, क्योंकि अर्जुन तुरंत ही उस शत्रु को रथ से गिराकर परलोक भेज देता था। समस्त कौरव सैनिकों के शरीर उसके द्वारा छिन्न-भिन्न होकर कष्ट पा रहे थे, वह अर्जुन का ही काम था, दूसरे से उसकी तुलना नहीं हो सकती थी। उसने द्रोणाचार्य को तिहत्तर, दुस्सहको दस, अश्वत्थामा को आठ, दुःशासन को बारह, कृपाचार्य को तीन, भीष्म को साठ और दुर्योधन को सौ बाणों से घायल किया। फिर कर्ण नामक बाण मारकर कर्ण का कान बींध डाला; साथ ही उसके घोड़े, सारथि तथा रथ को भी नष्ट कर दिया। यह देखकर सारी सेना तितर-बितर हो गयी।

तब विराटकुमार उत्तर ने अर्जुन से कहा- विजय! अब आप किस सेना में चलना चाहते हैं? आज्ञा दीजिये, मैं वहीं रथ ले चलूँ। अर्जुन ने कहा उत्तर! जिस रथ के लाल-लाल घोड़े हैं, जिस पर नीली पताका फहरा रही है, उस रथ पर बैठे हुए अत्यंत कल्याणकारी वेष में व्याघ्रचर्मधारी महापुरुष दिखाई पड़ते हैं, वे हैं कृपाचार्य और वही है उनकी सेना। तुम मुझे उसी सेना के निकट ले चलो। और देखो! जिनकी ध्वजा में सुवर्णमय कमण्डलु का चिन्ह है, वे ही ये सम्पूर्ण शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ आचार्य द्रोण हैं। तुम मेरे रथ से इनकी प्रदक्षिणा करो। जब ये मुझ पर प्रहार करेंगे, तभी मैं भी इन पर शस्त्र छोड़ूँगा, ऐसा करने से

ये मुझ पर कोप नहीं करेंगे। इन से थोड़ी ही दूर पर, जिसके रथ की ध्वजा में धनुष का चिन्ह दिखायी देता है, यह आचार्य द्रोण का पुत्र महारथी अश्वत्थामा है। तथा जो रथों की सेनाओं में तीसरी सेना के साथ खड़ा है, सुवर्ण का कवच पहने है, जिसकी ध्वजा के ऊपर सुवर्णमय हाथी का चिन्ह बना है, वही यह धृतराष्ट्र का पुत्र राजा सुयोधन है। जिसकी ध्वजा के अग्रभाग में हाथी की सुन्दर श्रृंखला का चिन्ह दिखायी दे रहा है, यह कर्ण है, इसे तो तुम पहले ही जान चुके हो तथा जिनके सुन्दर रथ पर सुवर्णमय पाँच मण्डलवाली नीले रंग की पताका फहराती है, जो हस्तत्राण पहने हुए हैं, जिनका धनुष बहुत बड़ा और पराक्रम महान् है, जिनके उत्तम रथ पर सूर्य और ताराओं के चिन्हवाली अनेकों ध्वजाएँ हैं, मस्तक पर सोने का टोप और उसके ऊपर श्वेत छत्र शोभा पा रहा है, जो मेरे मन में भी उद्वेग पैदा करते रहते हैं- ये हैं हम सब लोगों के पितामह शान्तनुनन्दन भीष्म जी। इनके पास सबसे पीछे चलना चाहिए क्योंकि ये मेरे कार्य में विघ्न नहीं डालेंगे।

अर्जुन की बातें सुनकर उत्तर सावधान हो गया और जहाँ कृपाचार्य का रथ खड़ा था, वहीं अर्जुन का रथ भी ले गया।

विराटकुमार ने रथ बढ़ाकर कृपाचार्य की प्रदक्षिणा की और फिर उनके सामने उसे ले जाकर खड़ा कर दिया। तदनन्तर, अर्जुन ने अपना नाम बताकर परिचय दिया और देवदत्त नामक बड़े भारी शंख को जोर से बजाया। उससे इतनी ऊँची आवाज हुई मानों पर्वत फट रहा हो। वह शंखनाद आकाश में गूँज उठा और उससे जो प्रतिध्वनि हुई, वह वज्रपात के समान जान पड़ी। युद्धार्थी महारथी कृपाचार्य ने भी अर्जुन पर कुपित हो अपना शंख जोर से बजाया। उसका शब्द तीनों लोकों में व्याप्त हो गया फिर उन्होंने अपना महान् धनुष हाथ में ले उसकी टङ्कार की और अर्जुन के ऊपर दस हजार बाणों की वर्षा करके विकट गर्जना की। तब अर्जुन ने भल्ल नामक तीखा बाण मारकर

कृपाचार्य का धनुष और हस्तत्राण काट दिया और कवच के टुकड़े-टुकड़े कर दिये किन्तु उनके शरीर को तनिक भी क्लेश नहीं पहुँचाया। कृपाचार्य ने दूसरा धनुष उठाया, पर अर्जुन ने उसे भी काट दिया। इस प्रकार जब कृपाचार्य के कई धनुष काट डाले तो उन्होंने प्रज्वलित वज्र के समान दमकती हुई एक शक्ति अर्जुन के ऊपर फेंकी। आकाश से उल्का के समान अपने ऊपर आती हुई उस शक्ति को अर्जुन ने दस बाण मारकर काट डाला फिर एक बाण से कृपाचार्य के रथ का जुआ काट दिया, चार बाणों से घोड़े मार दिये और छठे बाण से सारथि का सिर धड़ से अलग कर दिया। धनुष, रथ, घोड़े और सारथि के नष्ट हो जाने पर कृपाचार्य हाथ में गदा लेकर कूद पड़े और उसे अर्जुन के ऊपर फेंका। यद्यपि कृपाचार्य ने उस गदा को बहुत सँभलकर चलाया था, तो भी अर्जुन ने बाण मारकर उसे उलटे लौटा दिया। तब कृपाचार्य की सहायता करने वाले योद्धा कुन्तीनन्दन को चारों ओर से घेरकर बाण बरसाने लगे। यह देख विराटकुमार उत्तर ने घोड़ों को वामावर्त घुमाया और यमक नामक मण्डल बनाकर शत्रुओं की गति रोक दी। तब वे रथहीन कृपाचार्य को साथ ले अर्जुन के निकट से भाग गये।

जब कृपाचार्य रणभूमि से हटा लिये गये तो लाल घोड़ों वाले रथ पर बैठे हुए आचार्य द्रोण धनुष-बाण से सुसज्जित हो अर्जुन के ऊपर चढ़ आये। दोनों ही अस्त्रविद्या के पूर्ण ज्ञाता, धैर्यवान् और महान् बलवान् थे, दोनों ही युद्ध में पराजित होने वाले नहीं थे। इन दोनों गुरु-शिष्यों की आपस में मुट-भेड़ होते देख भरतवंशियों की वह विशाल सेना बारम्बार काँपने लगी। महारथी अर्जुन अपना रथ द्रोणाचार्य के पास ले गया और अत्यन्त हर्ष में भरकर मुस्काराते हुए उसने गुरु को प्रणाम करके कहा- युद्ध में सदा ही विजय पाने वाले गुरुदेव हमलोग आजतक तो वन में भटकते रहे हैं, अब शत्रुओं से बदला लेना चाहते हैं, आपको हम लोगों पर क्रोध नहीं करना चाहिये। जब तक आप मुझ पर प्रहार

नहीं करेंगे, मैं भी आप पर अस्त्र नहीं छोड़ूँगा-ऐसा मैंने निश्चय कर लिया है, इसलिये पहले आप ही मुझ पर प्रहार करें।

तब आचार्य द्रोण ने अर्जुन को लक्ष्य करके इक्कीस बाण मारे, वे बाण अभी पहुँचने भी नहीं पाये थे कि अर्जुन ने बीच में ही काट डाले। इसके बाद उन्होंने अर्जुन के रथ पर हजार बाणों की वर्षा करते हुए अपना अद्भुत हस्तलाघव दिखलाया, तथा उनके श्वेतवर्ण वाले घोड़ों को भी घायल किया। इस प्रकार दोनों-ही-दोनों पर समान भाव से बाण-वर्षा करने लगे। दोनों ही विख्यात पराक्रमी और अत्यन्त तेजस्वी थे। दोनों का वेग वायु के समान तीव्र था और दोनों ही दिव्यास्त्रों का प्रयोग जानते थे। अतः बाणों की झड़ी लगाते हुए वे वहाँ खड़े हुए राजाओं को मोहित करने लगे। युद्ध के मुहाने पर खड़े हुए वीर विस्मय के साथ कहते थे, भला, अर्जुन के सिवा दूसरा कौन है जो युद्ध में द्रोणाचार्य का सामना कर सके। क्षत्रिय का धर्म भी कितना कठोर है, जिसके कारण अर्जुन को गुरु के साथ लड़ना पड़ रहा है। द्रोणाचार्य ऐन्द्र, वायव्य और आग्नेय आदि जो-जो अस्त्र अर्जुन पर छोड़ते थे, उन सबको वह दिव्यास्त्रों के द्वारा नष्ट कर देता था। आकाशचारी देवता आचार्य द्रोण की प्रशंसा करते हुए कहते, सब दैत्यों और देवताओं पर विजय पाने वाले प्रबल प्रतापी अर्जुन के साथ जो द्रोणाचार्य ने युद्ध किया, यह बड़ा ही दुष्कर कार्य है।

अर्जुन को युद्ध-केला की अच्छी शिक्षा मिली थी, वह निशाना मारने में कभी चूकता नहीं था, उसके हाथों में बड़ी फुर्ती थी और वह दूर तक अपने बाण फेंकता था। यह सब देखकर आचार्य द्रोण को भी बड़ा विस्मय होता। गाण्डीव धनुष को ऊपर उठाकर अमर्ष में भरा हुआ अर्जुन जब दोनों हाथों से खींचता, उस समय टिड्डियों के समान बाणों की वर्षा से आकाश छा जाता और देखने वाले आश्चर्य में पड़कर धन्य-धन्य कहकर उसकी सराहना करने लगते थे। जब आचार्य के रथ के पास लाखों बाणों की वर्षा

होने लगी और वे रथ सहित ढक गये, तब उस सेना में बड़ा हाहाकार मच गया। द्रोणाचार्य के रथ की ध्वजा कट गयी थी, कवच के टुकड़े-टुकड़े हो गये थे और उनका शरीर भी बाणों से क्षत-विक्षत हो रहा था, अतः वे जरा-सा मौका मिलते ही अपने शीघ्रगामी घोड़ों को हाँककर तुरंत रण भूमि से बाहर हो गये।

तदनन्तर अश्वत्थामा ने अर्जुन के ऊपर धावा किया। जैसे मेघ पानी बरसाता है, उसी प्रकार उसके धनुष से बाणों की वृष्टि होने लगी। उसका वेग वायु के समान प्रचण्ड था, तो भी अर्जुन ने सामना करके उसे रोक दिया और उसके घोड़ों को अपने बाणों से मारकर अधमरा कर दिया। घायल हो जाने के कारण उन्हें दिशा का भान न रहा। महाबली अश्वत्थामा ने भी अर्जुन की प्रत्यञ्चा काट दी। उसके इस अलौकिक कर्म को देखकर देवताओं ने प्रशंसा की और द्रोण, भीष्म, कर्ण तथा कृपाचार्य ने भी साधुवाद दिया। तत्पश्चात् अश्वत्थामा ने अपना श्रेष्ठ धनुष तानकर अर्जुन की छाती में कई बाण मारे। अर्जुन खिलखिलाकर हँस पड़ा और उसने गाण्डीव को बलपूर्वक झुकाकर तुरंत ही उस पर नयी प्रत्यञ्चा चढ़ा दी। फिर उन दोनों में रोमाञ्चकारी युद्ध आरम्भ हो गया। दोनों ही शूरवीर थे, इसलिये अपने सर्पाकार प्रज्वलित बाणों से वे एक-दूसरे पर चोट करने लगे। महात्मा अर्जुन के पास दो दिव्य तरकस थे, जिसमें कभी बाणों की कमी नहीं होती थी, इसलिए वह युद्ध में पर्वत के समान अचल था। इधर अश्वत्थामा जल्दी-जल्दी प्रहार कर रहा था, इसलिये उसके बाण समाप्त हो गये, अतः उसकी अपेक्षा अर्जुन का जोर अधिक रहा। यह देखकर कर्ण ने अपने धनुष की टंकार की, उसकी आवाज सुनकर अर्जुन ने जब उधर देखा तो कर्ण पर उसकी दृष्टि पड़ी। देखते ही अर्जुन क्रोध में भर गया और कर्ण को मार डालने की इच्छा से आँखें फाड़-फाड़ कर उसकी ओर देखने लगा। फिर अश्वत्थामा को छोड़कर उसने सहसा कर्ण पर धावा किया और निकट जाकर कहा- कर्ण। तू सभा में जो डींग हाँकता था कि

युद्ध में मेरे समान कोई है ही नहीं, उसे सत्य करके दिखाने का आज यह अवसर प्राप्त हुआ है। मुझसे मुकाबला हुए बिना ही जो तू बड़ी-बड़ी बातें बना चुका है, आज इन कौरवों के बीच मेरे साथ युद्ध करके उसको सत्य सिद्ध कर। याद है, सभा के बीच में दुष्ट लोग द्रोपदी को कष्ट पहुँचा रहे थे और तू तमाशा देख रहा था? आज उस अन्याय का फल भोग। उन दिनों धर्म के बन्धन में बँधे रहने के कारण मैंने सब कुछ सहन कर लिया था, किंतु आज उस क्रोध का फल इस युद्ध में मेरी विजय के रूप में तू देख।

कर्ण ने कहा- अर्जुन। तू जो कहता है, उसे करके दिखा। बातें बहुत बढ़-बढ़कर बनाता है, पर काम जो तूने किया है, वह किसी से छिपा नहीं है। पहले जो कुछ तूने सहन किया है, उसमें तेरी असमर्थता ही कारण थी। हाँ, आज यदि देखूँगा, तो तेरा पराक्रम भी मान लूँगा। और मुझसे लड़ने की जो तेरी इच्छा है, यह तो अभी-अभी हुई है, पुरानी नहीं जान पड़ती। अच्छा आज तू मेरे साथ युद्ध कर और मेरा बल भी देख।

अर्जुन ने कहा- राधापुत्र। अभी थोड़ी ही देर हुई, तू मेरे सामने युद्ध से भाग गया था, इसीलिये तेरी जान बच गयी, केवल तेरा छोटा भाई ही मारा गया। भला तेरे सिवा दूसरा कौन मनुष्य होगा, जो अपने भाई को मरवाकर युद्ध छोड़कर भाग भी जाय और सत्पुरुषों के बीच खड़ा होकर ऐसी बातें बनावे।

ऐसा कहकर अर्जुन कर्ण के ऊपर कवच को भी छिन्न-भिन्न कर देनेवाले बाणों का प्रहार करने लगा। कर्ण भी बाणों की वृष्टि करता हुआ मुकाबले में डट गया। अर्जुन ने पृथक्-पृथक् बाण मारकर कर्ण के घोड़ों को बंध डाला, उसका हस्तत्राण काट दिया और भाथे लटकाने की रस्सी भी काट डाली। तब कर्ण ने भी तरकस से तीर निकाले और अर्जुन के हाथों को बंध दिया, इससे उसकी बँधी हुई मुट्ठी खुल गयी। तत्पश्चात् महाबाहु अर्जुन ने कर्ण के धनुष को काट दिया। धनुष कट जाने पर उसने शक्ति का प्रहार किया, किन्तु अर्जुन ने बाणों से उसके

भी टुकड़े-टुकड़े कर दिये। यह देख कर्ण के अनुगामी योद्धाओं ने एक साथ अर्जुन पर आक्रमण किया, परन्तु गाण्डीव से छूटे हुए बाणों द्वारा वे सब-के-सब यमलोक के अतिथि हो गये। इसके बाद अर्जुन ने कान तक धनुष खींच कर कई तीखे बाणों से कर्ण के घोड़ों को बींध डाला। घायल हुए घोड़े पृथ्वी पर गिरकर मर गये फिर अर्जुन ने एक तेजस्वी बाण कर्ण की छाती में मारा। वह बाण कवच को भेदकर उसके शरीर में घुस गया। कर्ण बेहोश हो गया, उसकी आँखों के सामने अंधेरा छा गया। भीतर ही भीतर पीड़ा सहता हुआ वह युद्ध छोड़कर उत्तर दिशा की ओर भाग गया। महारथी अर्जुन तथा उत्तर उच्च स्वर से गर्जना करने लगे।

कर्ण पर विजय पाने के अनन्तर अर्जुन ने उत्तर से कहा- जहाँ रथ की ध्वजा में सुवर्णमय ताड़का चिन्ह दिखायी दे रहा है, उसी सेना के पास मुझे ले चलो। वहाँ मेरे पितामह भीष्म जी, जो देखने में देवता के समान जान पड़ते हैं, रथ में विराजमान हैं और मेरे साथ युद्ध करना चाहते हैं। उत्तर का शरीर बाणों से बहुत घायल हो चुका था। अतः उसने अर्जुन से कहा- वीरवर! अब मैं आपके घोड़ों को काबू में नहीं रख सकता। मेरे प्राण संतप्त हैं, मन घबरा रहा है। आज तक किसी भी युद्ध में मैंने इतने शूरवीरों का समागम नहीं देखा था। आपके साथ जब इन लोगों का युद्ध देखता हूँ, तो मेरा मन डौवाडोल हो जाता है। गदाओं के टकराने का शब्द, शंखों की ऊँची ध्वनि, वीरों का सिंहनाद, हाथियों की चिंघाड़ तथा बिजली की गड़गड़ाहट के समान गाण्डीव की टंकार सुनते-सुनते मेरे कान बहरे हो रहे हैं, स्मरण शक्ति क्षीण हो गयी है। अब मुझमें चाबुक और बागडोर सँभालने की शक्ति नहीं रह गयी है।

अर्जुन ने कहा- नरश्रेष्ठ! डरो मत, धैर्य रखो; तुमने भी युद्ध में बड़े अद्भुत पराक्रम दिखाये हैं। तुम राजा के पुत्र हो। शत्रुओं का दमन करने वाले मत्स्य नरेश के विख्यात वंश में तुम्हारा जन्म हुआ है। इसलिये इस अवसर पर

तुम्हें उत्साहहीन नहीं होना चाहिये। राजपुत्र! भली भाँति धीरज रखकर रथ पर बैठो और युद्ध के समय घोड़ों पर नियन्त्रण रखो। अच्छा, अब तुम मुझे भीष्मजी की सेना के सामने ले चलो और देखो कि मैं किस प्रकार दिव्य अस्त्रों का प्रयोग करता हूँ। आज सारी सेना को तुम चक्र की भाँति घूमते हुए देखोगे। इस समय मैं तुम्हें बाण चलाने की तथा अन्य शस्त्रों के संचालन की भी अपनी योग्यता दिखाऊँगा। मैंने मुट्ठी को दृढ़ रखना इन्द्र से, हाथों की फुर्ती ब्रह्माजी से तथा संकट के अवसर पर विचित्र प्रकार से युद्ध करने की कला प्रजापति से सीखी है। इसी प्रकार रुद्र से रौद्रास्त्र की, वरुण से वरुणास्त्र की, अग्नि से आग्नेयास्त्र की और वायु देवता से वायव्यास्त्र की शिक्षा प्राप्त की है। अतः तुम भय मत करो, मैं अकेले ही कौरवरूपी वन को उजाड़ डालूँगा।

इस प्रकार अर्जुन ने जब धीरज बँधाया, तब उत्तर उसके रथ को भीष्मजी के द्वारा सुरक्षित रथ सेना के पास ले गया। कौरवों पर विजय पाने की इच्छा से अर्जुन को अपनी ओर आते देख निष्ठुर पराक्रम दिखाने वाले गङ्गानन्दन भीष्म ने धीरतापूर्वक उसकी गति रोक दी। तब अर्जुन ने बाण मारकर भीष्मजी के रथ की ध्वजा जड़ से काटकर गिरा दी। इसी समय महाबली दुःशासन, विकर्ण, दुःसह और विविंशति- इन चार वीरों ने आकर धनञ्जय को चारों ओर से घेर लिया। दुःशासन ने एक बाण से विराटनन्दन उत्तर को बींधा और दूसरे से अर्जुन की छाती में चोट पहुँचायी। अर्जुन ने भी तीखी धार वाले बाण से दुःशासन का सुवर्णजटित धनुष काट दिया और उसकी छाती में पाँच बाण मारे। उन बाणों से उसको बड़ी पीड़ा हुई और वह युद्ध छोड़कर भाग गया। इसके बाद विकर्ण अपने तीखे बाणों से अर्जुन को घायल करने लगा। तब अर्जुन ने उसके ललाट में एक बाण मारा- उसके लगते ही घायल होकर वह रथ से गिर पड़ा। तदनन्तर दुःसह और विविंशति दोनों एक साथ आकर अपने भाई का बदला लेने के लिये अर्जुन

पर बाणों की वर्षा करने लगे। अर्जुन तनिक भी विचलित नहीं हुआ, उसने दो तीखे बाण छोड़कर उन दोनों भाइयों एक ही साथ बींध दिया और उनके घोड़ों को भी मार डाला। जब सेवकों ने देखा कि दोनों के घोड़े मर गये और शरीर घायल होकर लहू-लुहान हो रहे हैं, तो वे उन्हें दूसरे रथ पर बिठाकर युद्ध भूमि से हटा ले गये। और जिसका निशाना कभी खाली नहीं जाता था, वह महाबली अर्जुन रणभूमि में चारों ओर घूमने लगा।

जनमेजय! धनञ्जय के ऐसे पराक्रम देखकर दुर्योधन, कर्ण, दुःशासन, विविंशति, द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा तथा महारथी कृपाचार्य अमर्ष से भर गये और उसे मार डालने की इच्छा से अपने दृढ़ धनुषों की टङ्कार करते हुए पुनः चढ़ आये। वहाँ आकर सब एक साथ अर्जुन पर बाण बरसाने लगे। उनके दिव्यास्त्रों से सब ओर से आच्छन्न हो जाने के कारण उसके शरीर का दो अंगुल भाग भी ऐसा नहीं बचा था, जिस पर बाण न लगे हों। ऐसी अवस्था में अर्जुन ने तनिक हँसकर अपने गाण्डीव धनुष पर ऐन्द्र-अस्त्र का सन्धान किया और बाणों की झड़ी लगाकर समस्त कौरवों को ढक दिया। वर्षा होते समय जैसे बिजली आकाश में चमककर सम्पूर्ण दिशाओं और भूमण्डल को प्रकाशित करती है, उसी प्रकार गाण्डीव धनुष से छूटे हुए बाणों द्वारा दसों दिशाएँ आच्छन्न हो गयीं। रणभूमि में खड़े हुए हाथी सवार और रथी सब मूर्च्छित हो गये। सबका उत्साह ठंडा पड़ गया, किसी को होश न रहा। सारी सेना तितर-बितर हो गयी; सभी योद्धा जीवन से निराश होकर चारों ओर भागने लगे।

यह देखकर शान्तनुन्दन भीष्मजी ने सुवर्णजटित धनुष और मर्मभेदी बाण लेकर अर्जुन के ऊपर धावा किया। उन्होंने अर्जुन की ध्वजा पर फुफकाराते हुए सर्पों के समान आठ बाण मारे। उनसे ध्वजा पर स्थित हुए वानर को बड़ी चोट पहुँची और उसके अग्रभाग में

रहने वाले भूत भी घायल हुए। तब अर्जुन ने एक बहुत बड़े भाले से भीष्म जी का छत्र काट डाला; कटते ही वह पृथ्वी पर गिर पड़ा। साथ ही उसने उनकी ध्वजा पर भी बाणों से आघात किया और शीघ्रतापूर्वक उनके घोड़ों को, पार्श्वरक्षक को तथा सारथि को भी घायल कर दिया। भीष्मपितामह इस बात को सहन नहीं कर सके। वे अर्जुन पर दिव्यास्त्रों का प्रयोग करने लगे। जवाब में अर्जुन ने भी दिव्यास्त्रों का प्रहार किया। उस समय इन दोनों वीरों में बलि और इन्द्र के समान रोमाञ्चकारी संग्राम होने लगा। कौरव प्रशंसा करते हुए कहने लगे-भीष्मजी ने अर्जुन के साथ जो युद्ध ठाना है, यह बड़ा ही दुष्कर कार्य है। अर्जुन बलवान् है, तरुण है, रणकुशल और फुर्ती करने वाला है; भला युद्ध में भीष्म और द्रोण के सिवा दूसरा कौन इसके वेग को सह सकता है? अर्जुन और भीष्म दोनों ही महापुरुष उस युद्ध में प्राजापत्य, ऐन्द्र, आग्नेय, रौद्र, वारुण, कौबेर, याम्य और वायव्य आदि दिव्यास्त्रों का प्रयोग करते हुए विचर रहे थे।

अर्जुन और भीष्म सभी अस्त्रों के ज्ञाता थे। पहले तो इनमें दिव्यास्त्रों का युद्ध हुआ, इसके बाद बाणों का संग्राम छिड़ा। अर्जुन ने भीष्म का सुवर्णमय धनुष काट दिया। तब महारथी भीष्म ने एक ही क्षण में दूसरा धनुष लेकर उस पर प्रत्यञ्चा चढ़ा दी और क्रुद्ध होकर वे अर्जुन के ऊपर बाणों की वर्षा करने लगे। उन्होंने अपने बाणों से अर्जुन की बांयी पसली बींध डाली। तब उसने भी हँसकर, तीखी धारवाला एक बाण मारा और भीष्म का धनुष काट दिया। उसके बाद दस बाणों से उनकी छाती बींध डाली। इससे भीष्मजी को बड़ी पीड़ा हुई और वे रथ का कूबर थामकर देरतक बैठे रह गये। भीष्मजी को अचेत जानकर सारथि को अपने कर्तव्य का स्मरण हुआ और वह उनकी रक्षा के लिये उन्हें युद्ध भूमि से बाहर ले गया।

✽

समस्या समाधान

जीवन पथ पर कई ऐसे मोड़ आते हैं जब विपरीत परिस्थितियों के कारण मनुष्य बहुत कुछ चाहकर भी नहीं कर पाता। कदम-कदम पर तमाम बाधाओं का सामना करना पड़ता है। अनेकों नकारात्मक अदृश्य शक्तियाँ परेशान करती हैं, व्यापार व्यवसाय में हानि होने लगती है।

क्या आप भी किसी समस्या से परेशान हैं ?

यदि आपको व्यापार में हानि हो रही है, शत्रु आप पर हावी हो रहे हैं, आपकी इच्छा होते हुये भी विवाह नहीं हो रहा है, मानसिक रूप से परेशान हैं या फिर तंत्र प्रयोग से ग्रसित हैं तो आपको परेशान होने की जरूरत नहीं है।

उठाइये अपनी कलम और हमें अपनी समस्या लिख भेजिए, हम उसका समाधान निःशुल्क करेंगे। पत्र के साथ अपना पासपोर्ट साइज का फोटो, पूरा नाम, पिता का नाम, गोत्र, जन्म की तारीख, समय, जन्म स्थान तथा तीन रुपये के टिकिट युक्त लिफाफे पर अपना पूरा पता पिन (कोड सहित) स्पष्ट एवं सुवाच्य अक्षरों में लिखकर अवश्य भेजें। लिफाफे के अभाव में पत्रोत्तर की अपेक्षा न करें।

हमारा पता

समस्या समाधान

साधना सिद्धि विज्ञान

फ्लेट नं. 1,2 मिनाल व्यू-॥ पंजाबी बाग भोपाल

दूरभाष : (0755) 576346, 591143

निःशुल्क अनुष्ठान एवं हवन

साधना सिद्धि विज्ञान संस्था द्वारा प्रति सप्ताह जनकल्याण के लिये पूर्ण वैदिक विधि से हवन एवं अनुष्ठान का कार्यक्रम सम्पन्न किया जाता है।

अगर आप जीवन में किसी भी प्रकार की समस्या से ग्रसित हैं तो अपना नाम, पिता/पति का नाम, गोत्र आदि हमें लिखकर भेज दें।

आपके कल्याण के लिये संस्था द्वारा निःशुल्क हवन व अनुष्ठान किया जायेगा।

हमारा पता

समस्या समाधान

साधना सिद्धि विज्ञान

फ्लेट नं. 1,2 मिनाल व्यू-॥ पंजाबी बाग भोपाल

दूरभाष : (0755) 576346, 591143

अर्जुन द्वारा पाशुपतास्त्र तथा दिव्यास्त्र की प्राप्ति

पं. सत्येन्द्र रोडे (इन्दौर)

महारथी एवं दृढ़निश्चयी अर्जुन हिमालय लाँघकर एक बड़े कँटीले जंगल में जा पहुँचे। उसकी शोभा अपूर्व थी। उसे देखकर अर्जुन के मन में प्रसन्नता हुई। वे डाभ (कुश) के वस्त्र, दण्ड, मृगछाला और कमण्डलु धारण करके आनन्दपूर्वक तपस्या करने लगे। पहले महीने में उन्होंने तीन-तीन दिन पर पेड़ों से गिरे सूखे पत्ते खाये। दूसरे महीने में छः छः दिन पर और तीसरे महीने में पंद्रह-पंद्रह दिन पर। चौथे महीने में बाँह उठाकर पैर के अंगूठे की नोक के बल पर निराधार खड़े हो गये और केवल हवा पीकर तपस्या करने लगे। नित्य जल में स्नान करने के कारण उनकी जटाएँ पीली-पीली हो गयी थीं। बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों ने भगवान् शंकर के पास जाकर प्रार्थना की। उन्होंने कहा- भगवन्! अर्जुन की तपस्या के तेज से दिशाएँ धूमिल हो गयीं। भगवान् शंकर ने उनसे कहा- मैं आज अर्जुन की इच्छा पूर्ण करूँगा। ऋषियों के जाने पर भगवान् शंकर ने सोने का-सा दमकता हुआ भील का रूप ग्रहण किया। सुन्दर धनुष, सर्पाकार बाण लेकर पार्वती जी के साथ वे अर्जुन के पास आये। बहुत-से भूत-प्रेत भी वेष बदलकर भील-भीलनियों के वेष में उनके साथ हो लिये। भीलवेषधारी भगवान् शंकर ने अर्जुन के पास आकर देखा कि मूक दानव जंगली शूकर का वेष धारण कर तपस्वी अर्जुन को मार डालने की घात देख रहा है। अर्जुन ने भी शूकर को देख लिया। उन्होंने गाण्डीव धनुष पर सर्पाकार बाण चढ़ाकर धनुष टंकारते हुए मूक दानव से कहा- दुष्ट! तू मुझ निरपराध को मारना चाहता है इसलिए मैं तुझे पहले ही यमराज के हवाले करता हूँ। ज्यों ही उन्होंने बाण छोड़ना चाहा, भील वेषधारी शिवजी ने

रोककर कहा कि मैं पहले से ही इसे मारने का निश्चय कर चुका हूँ। इसलिए तुम इसे मत मारो। अर्जुन ने भील की बात की कुछ भी पराजना न करके शूकर पर बाण छोड़ दिया। शिवजी ने भी उसी समय अपना वज्र सा बाण चलाया। दोनों के बाण मूक के शरीर पर जाकर टकराये, बड़ी भयंकर आवाज हुई। इस प्रकार असंख्य बाणों से शूकर का शरीर बिंध गया, वह दानव के रूप में प्रकट होकर मर गया। अब अर्जुन ने भील की ओर देखा। उन्होंने कहा- तू कौन है? इस मण्डली के साथ निर्जन वन में क्यों घूम रहा है? यह शूकर मेरा तिरस्कार करने के लिये यहाँ आया था, मैंने पहले ही इसको मारने का विचार भी कर लिया था। फिर तूने इसका वध क्यों किया? अब मैं तुझे जीता नहीं छोड़ूँगा। भील ने कहा- इस शूकर पर मैंने तुमसे पहले प्रहार किया। मेरा विचार भी तुमसे पहले का था। यह मेरा निशाना था, मैंने ही इसे मारा है। तुम तनिक ठहर जाओ। मैं बाण चलाता हूँ, शक्ति हो तो सहो। नहीं तो तुम्हीं मुझ पर बाण चलाओ। भील की बात सुनकर अर्जुन क्रोध से आगबबूला हो गये। वे भील पर बाणों की वर्षा करने लगे।

अर्जुन के बाण जैसे ही भील के पास आते, वह उन्हें पकड़ लेता। भीलवेषधारी भगवान् शंकर हँसकर कहते कि मन्दबुद्धे। मार, खूब मार; तनिक भी कमी न कर। अर्जुन ने बाणों की झड़ी लगा दी। दोनों ओर से बाणों की चोट होने लगी। भील का एक बाल भी बाँका न हुआ। यह



देखकर अर्जुन के आश्चर्य की सीमा न रही। अर्जुन कुढ़-कुढ़कर बाण छोड़ते और वे हाथ से पकड़ लेते। अर्जुन के बाण समाप्त हो गये। अब अर्जुन ने धनुष की नोक से मारना शुरू किया। भील ने धनुष भी छीन लिया। तलवार का प्रहार किया तो वह दो टुकड़े होकर जमीन पर गिर पड़ी। पत्थरों और वृक्षों से प्रहार करना चाहा तो भील ने प्रहार करने के पहले ही छीन लिया। अब घूसे की बारी आयी। भील ने बदले में जो घूसा मारा, उससे अर्जुन का होश हवा हो गया। अब भील ने अर्जुन को दोनों भुजाओं में दबाकर पिण्डी कर दिया, वे हिलने-डुलने में भी असमर्थ हो गये। दम घुटने लगा, लहू-लुहान होकर जमीन पर पड़ गये।

थोड़ी देर बाद अर्जुन को होश आया। उन्होंने मिट्टी की एक वेदी बनायी, उस पर भगवान् शंकर की स्थापना की और शरणागत होकर उनकी पूजा करने लगे। अर्जुन ने देखा कि जो पुष्प उन्होंने शिवमूर्ति पर चढ़ाया है, वह भील के सिर पर है। अर्जुन को प्रसन्नता हुई, कुछ-कुछ शांत हुए। उन्होंने भील के चरणों में प्रणाम किया। भगवान् शंकर ने प्रसन्न होकर आश्चर्यचकित और घायल अर्जुन से मेघगम्भीर वाणी में कहा- अर्जुन! तुम्हारे अनुपम कर्म से मैं प्रसन्न हूँ। तुम्हारे जैसा शूर और धीर क्षत्रिय दूसरा नहीं है। तुम्हारा तेज और बल मेरे समान है। मैं तुम पर प्रसन्न हूँ। तुम मेरे स्वरूप का दर्शन करो। तुम सनातन ऋषि हो। तुम्हें मैं दिव्य ज्ञान देता हूँ। इसके प्रभाव से तुम शत्रुओं और देवताओं को भी जीत सकोगे। मैं प्रसन्न होकर तुम्हें एक ऐसा अस्त्र बतलाता हूँ, जिसका कोई निवारण नहीं कर सकता। तुम क्षण भर में ही मेरा वह अस्त्र धारण कर सकोगे। अब अर्जुन ने भगवती पार्वती और भगवान् शंकर का दर्शन किया। उन्होंने घुटने टेक, चरणों का स्पर्श कर भगवान् गौरीशंकर को प्रणाम किया।

अर्जुन भगवान् शंकर को प्रसन्न करने के लिए स्तुति करने लगे-प्रभो! आप देवताओं के स्वामी महादेव हैं। आपके कण्ठ में जगत् के उपकार का चिन्ह नीलिमा है, सिर पर जटा है। आप कारणों के भी परम कारण, त्रिनेत्र एवं व्यापक हैं। आप देवताओं के आश्रय एवं जगत् के मूल कारण हैं। आपको कोई नहीं जीत सकता। आप ही शिव और आप ही विष्णु हैं। मैं आपके चरणों में प्रणाम करता हूँ। आप दक्ष के यज्ञ के विध्वंसक एवं हरिहरस्वरूप



हैं। आपके ललाट में नेत्र है। आप सर्वस्वरूप, भक्तवत्सल, त्रिशूलधारी एवं पिनाकपाणि हैं और सूर्यस्वरूप, शुद्धमूर्ति एवं सृष्टि के विधाता हैं। मैं आपके चरणों में प्रणाम करता हूँ। सर्वभूतमहेश्वर, सर्वेश्वर, कल्याण-कारी, परमकारण, स्थूल-सूक्ष्म-स्वरूप! मैं आपसे क्षमा-याचना करता हूँ। मुझे क्षमा कीजिए। मैं आपके दर्शन की लालसा से इस पर्वत पर आया हूँ। मैंने अज्ञानवश आपसे युद्ध करने का साहस किया है। इसे अपराध न मानिये, मुझ शरणागत को क्षमा कीजिए। अर्जुन की स्तुति सुनकर भगवान् शंकर हँस पड़े और अर्जुन का हाथ पकड़कर बोले-क्षमा किया। फिर भगवान् शंकर ने अर्जुन को गले लगा लिया।

भगवान् शंकर ने कहा- अर्जुन! तुम नारायण के नित्य सहचर नर हो। पुरुषोत्तम विष्णु और तुम्हारे परम तेज के आधार पर ही जगत् टिका हुआ है। इन्द्र के अभिषेक के समय तुमने और श्रीकृष्ण ने धनुष उठाकर दानवों का नाश किया था। आज मैंने माया से भील का रूप धारण करके तुम्हारे अनुरूप गाण्डीव धनुष और अक्षय तरकस को छीन लिया है। अब तुम उन्हें ले लो। तुम्हारा शरीर भी निरोग हो जायेगा। मैं तुम पर प्रसन्न हूँ; तुम्हारी जो इच्छा हो,

वर माँग लो। अर्जुन ने कहा- भगवन्! आप मुझे अपना पाशुपतास्त्र दे दीजिए। वह ब्रह्मशिर अस्त्र प्रलय के समय जगत् का नाश करता है। उस अस्त्र से मैं भावी युद्ध में सबको जीत सकूँ, ऐसी कृपा कीजिए। मैं उस अस्त्र से रणभूमि में दानव, राक्षस, भूत, पिशाच, गन्धर्व और सर्पों को भी भस्म कर डालूँ। मैं जानता हूँ कि मंत्र पढ़कर छोड़ने पर पाशुपतास्त्र में से हजारों त्रिशूल, भयंकर गदाएँ और सर्पाकार बाण निकल पड़ते हैं। मैं उस पाशुपतास्त्र से भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य और कटुवादी कर्ण के साथ लड़ूँ। भगवान् शंकर ने कहा कि समर्थ अर्जुन! तुम्हें मैं अपना प्यारा पाशुपतास्त्र देता हूँ; क्योंकि तुम उसके धारण, प्रयोग और उपसंहार के अधिकारी हो। इन्द्र, यमराज, कुबेर, वरुण और वायु भी उस अस्त्र के धारण, प्रयोग और उपसंहार में कुशल नहीं हैं। फिर मनुष्य तो भला जान ही कैसे सकते हैं। मैं तुम्हें यह अस्त्र देता हूँ, परन्तु तुम इसे किसी के ऊपर सहसा छोड़ मत देना। अल्पशक्ति मनुष्य के ऊपर प्रयोग करने पर यह जगत् का नाश कर डालेगा। यदि संकल्प, वाणी, धनुष अथवा दृष्टि से किसी भी प्रकार शत्रु पर इसका प्रयोग हो तो यह उसका नाश कर डालता है।

अर्जुन स्नान करके पवित्रता के साथ भगवान् शंकर के पास आये और बोले कि अब मुझे पाशुपतास्त्र की शिक्षा दीजिए। महादेव जी ने अर्जुन को प्रयोग से लेकर उपसंहार तक सब तत्व, रहस्य समझा दिया। अब पाशुपतास्त्र मूर्तिमान् काल के समान अर्जुन के पास आया और उन्होंने उसे ग्रहण कर लिया। उस समय पर्वत, वन, समुद्र, नगर, गाँव और खानों के साथ सारी पृथ्वी डगमगाने लगी। भगवान् शंकर ने अर्जुन को आज्ञा दी कि अब तुम स्वर्ग जाओ। अर्जुन भगवान् शंकर को प्रणाम करके हाथ जोड़े खड़े रहे। भगवान् शंकर ने गाण्डीव धनुष अपने हाथ से उठाकर अर्जुन को दे दिया। वे अर्जुन के सामने ही आकाशमार्ग से चले गये।

अर्जुन की मानसिक स्थिति बड़ी विलक्षण हो रही थी। वे सोच रहे थे कि आज मुझे भगवान् शंकर के दर्शन मिले। उन्होंने मेरे शरीर पर अपना वरदहस्त फेरा। मैं धन्य हूँ। आज मेरा काम पूर्ण हो गया। अर्जुन यही सब सोच रहे थे कि उनके सामने वैदूर्यमणि के समान कान्तिमान् जलचरो से घिरे जलाधीश वरुण, सुवर्ण के समान द्रमकते हुए शरीरवाले धनाधीश कुबेर, सूर्य के पुत्र यमराज और बहुत

से गुह्यक-गन्धर्व आदि मन्दराचल के तेजस्वी शिखर पर आकर उतरे। कुछ ही क्षण बाद देवराज इन्द्र भी इन्द्राणी के साथ ऐरावत पर बैठकर देवगणोंसहित मन्दराचल पर आये। सब देवताओं के आ जाने पर धर्म के मर्मज्ञ यमराज ने मधुर वाणी से कहा-अर्जुन! देखो, सब लोकपाल तुम्हारे पास आये हैं। आज तुम हमलोगों के दर्शन के अधिकारी हो गये हो। इसलिए दिव्य दृष्टि लो। हमारा दर्शन करो। तुम सनातन ऋषि नर हो। तुमने मनुष्य रूप में अवतार ग्रहण किया है। अब तुम भगवान् श्रीकृष्ण के साथ रहकर पृथ्वी का भार मिटाओ। मैं तुम्हें अपना वह दण्ड देता हूँ, जिसका कोई निवारण नहीं कर सकता। अर्जुन ने आदर के साथ वह दण्ड स्वीकार किया। उसका मंत्र, पूजा का विधान तथा प्रयोग उपसंहार की विधि भी सीख ली। वरुण ने कहा- अर्जुन! मेरी ओर देखो। मैं जलाधीश वरुण हूँ। मेरा वारुण पाश युद्ध में कभी निष्फल नहीं होता। तुम इसे ग्रहण करो और छोड़ने-लौटाने की गुप्त विधि भी सीख लो। तारकासुर के घोर संग्राम में इसी पाश से मैंने हजारों दैत्यों को पकड़कर कैद कर लिया था। तुम इसके द्वारा चाहे जिसको कैद कर सकते हो।

अर्जुन के पाश स्वीकार कर लेने पर धनाधीश कुबेर ने कहा- अर्जुन! तुम भगवान् के नररूप हो। पहले कल्प में तुमने हमारे साथ बड़ा परिश्रम किया है इसलिए तुम मुझसे अन्तर्धान नामक अनुपम अस्त्र ग्रहण करो। यह बल, पराक्रम एवं तेज देने वाला अस्त्र मुझे बहुत ही प्यारा है। इससे शत्रु सोये-से होकर नष्ट हो जाते हैं। भगवान् शंकर ने त्रिपुरासुर को नष्ट करते समय इसका प्रयोग करके असुरों को भस्म कर डाला था। यह तुम्हारे लिये ही है, तुम इसे धारण करो। अर्जुन के स्वीकार कर लेने पर देवराज इन्द्र ने मेघगम्भीर वाणी से कहा- प्रिय अर्जुन, तुम भगवान् के नररूप हो। तुम्हें परम सिद्धि, देवताओं की परम गति प्राप्त हो गयी है। तुम्हें देवताओं के बड़े-बड़े काम करने हैं और स्वर्ग में भी चलना है। इसके लिये तुम तैयार हो जाओ। उसी समय मैं तुम्हें दिव्य अस्त्र भी दूँगा। इस प्रकार सभी लोकपालों ने प्रत्यक्ष प्रकट होकर अर्जुन को दर्शन और वरदान दिये। अर्जुन ने प्रसन्नता से सबकी स्तुति एवं फल-फूल आदि से पूजा की। देवता अपने-अपने धाम को चले गये।

✽

सभी व्याधियों के नाश व दीर्घायु प्राप्ति का अमोघ साधन महामृत्युंजय मंत्र

राजेन्द्र वर्मा (कानपुर)

यह महामंत्र अपने नाम के अनुरूप मृत्यु पर भी विजय प्राप्त करने वाला है और जब मृत्यु पर ही विजय प्राप्त हो जाएगी तो फिर व्याधियाँ तो पास फटक ही नहीं सकती। विभिन्न वैदिक ग्रंथों में महामृत्युंजय मंत्र की महिमा का विस्तार से वर्णन है इसका नियम पूर्वक जप करने वाला प्रत्यक्षतः मोक्ष को प्राप्त कर लेता है।

मूल मंत्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

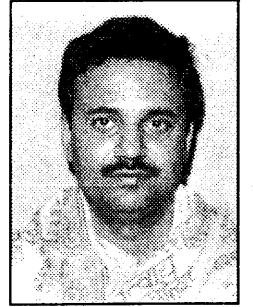
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

इस मंत्र को विभिन्न बीज मंत्रों के साथ सम्पुटित करके भी जप किया जाता है जिससे साधक की समस्त मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती हैं तथा उसे इस लोक में सभी प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं और मरणोपरांत वह पावन शिवधाम को प्राप्त करता है।

जप विधि

साधक को चाहिए कि वह स्नानादि नित्य क्रियाओं से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण कर स्वच्छ आसन पर उत्तराभिमुख होकर बैठे। पूजन के लिए आवश्यक समस्त

सामग्री अपने पास रख लें। अपने सम्मुख चौकी पर किसी प्लेट में पारद शिवलिङ्ग स्थापित करें तत्पश्चात् आचमन, पवित्रीकरण, गणपति स्मरण व गुरु पूजन के पश्चात् निम्नानुसार संकल्प करें-



अमुकोऽहं अमुकवासरदौ स्वस्य (यजमानस्य वा) निखिलारिष्टनिवृत्तये महामृत्युंजयमंत्रजपमहं करिष्ये।

तत्पश्चात् हाथ में जल लेकर इस प्रकार न्यासादि करना चाहिए-

ॐ अस्य श्रीमहामृत्युंजयमंत्रस्य वामदेवकहोलवसिष्ठा। ऋषयः

पंक्तिगायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, सदाशिव महामृत्युंजय रुद्रो देवता, ह्रीं शक्तिः, श्रीं बीजम्, महामृत्युंजयप्रीतये ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

यों कहकर हाथ का जल छोड़ दें।

पुनः वामदेवकहोलवसिष्ठऋषिभ्यो नमः, मूर्ध्नि। षड्क्तिगायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः, वक्त्रे।

स द ा श ि ा व -
महामृत्युंजयरुद्रदेवतायै नमः,
हृदि। ह्रीं शक्तये नमः, लिङ्गे।
श्रीं बीजाय नमः, पादयोः।

उपर्युक्त मंत्रों से सिर, मुख,
हृदय, लिङ्ग तथा चरण का स्पर्श
करें।

तत्पश्चात् निम्न मंत्रों से पहले
अंगूठे आदि का स्पर्श करते हुए
करन्यास करके फिर उन्हीं मंत्रों से
हृदयादि को स्पर्श करते हुए
हृदयादिन्यास करना चाहिए।

करन्यास

ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः
स्वः त्र्यम्बकं
ॐ नमो भगवते रुद्राय
शूलपाणये स्वाहा
अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

(तर्जनी से अंगूठे को छुएं)

ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः यजामहे।
ॐ नमो भगवते रुद्राय अष्टमूर्तये मां जीवय।।
तर्जनीभ्यां नमः।

(दोनों तर्जनी अंगुलियों को अंगूठों से मिलायें)
ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं
ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा।
मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः ऊर्वारुक्मिव
बन्धनात्

ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रीं।



अनामिकाभ्यां नमः।

(दाहिने हाथ से बायां कंधा तथा बायें हाथ से दाहिना
कंधा छुएं।)

ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय
ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋषयजुः साममन्त्राय।
कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः मामृतात्
ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय उज्ज्वलज्वाल मां
रक्ष रक्ष अघोराय।

करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

इसके पश्चात् उपरोक्त मंत्रों द्वारा ही हृदयादि न्यास क्रमशः हृदयाय नमः, शिरसे स्वाहा, शिखायै वषट्, नेत्रत्रयाय वौषट् और अस्त्राय फट् आदि का उच्चारण करते हुये करें।

ध्यान

इस मंत्र के जप में ध्यान परमावश्यक है। शिवपुराण में यह ध्यान इस प्रकार बतलाया गया है-

हस्ताम्भोजयुगस्थकुम्भयुगलादुद्धृत्य तोयं शिरः
सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधत् स्वाङ्गे सकुम्भौ करौ।
अक्षस्त्रङ्मृगहस्तमम्बुजगतं मूर्धस्थचन्द्रस्रवत्
पीयूषार्द्रतनुं भजे सगिरिजं त्र्यक्षं च मृत्युञ्जयम्॥

ध्यान का स्वरूप यह है कि भगवान् मृत्युञ्जय के आठ हाथ हैं। वे अपने ऊपर के दोनों करकमलों से दो घड़ों को उठाकर उसके नीचे के दो हाथों से जल को अपने सिर पर उड़ेल रहे हैं। सबसे नीचे के दो हाथों में भी दो घड़े लेकर उन्हें अपनी गोद में रख लिया है। शेष दो हाथों में वे रुद्राक्ष की माला तथा मृगी-मुद्रा धारण किये हुए हैं। वे कमल के आसन पर बैठे हैं और उनके शिरःस्थ चन्द्र से निरन्तर अमृतवृष्टि के कारण उनका शरीर भीगा हुआ है। उनके तीन नेत्र हैं तथा उन्होंने मृत्यु को सर्वथा जीत लिया है, उनके वामाङ्गभाग में गिरिराजनन्दिनी भगवती उमा विराजमान हैं।

इस प्रकार ध्यान करके रुद्राक्ष की माला से मंत्र का जप करना चाहिए मंत्र का स्वरूप इस प्रकार है-

मंत्र

ॐ हौं जूं सः, ॐ भूर्भुवः स्वः। ॐ त्र्यम्बकं
यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव
बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। स्वः भुवः भूः ॐ।
सः जूं हौं ॐ।

यह सम्पुट युक्त मंत्र है। इसका प्रायः सवा लाख जप

सर्वार्थसाधक माना गया है। जप के बाद इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए-

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर॥
मृत्युञ्जय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम्।
जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः॥

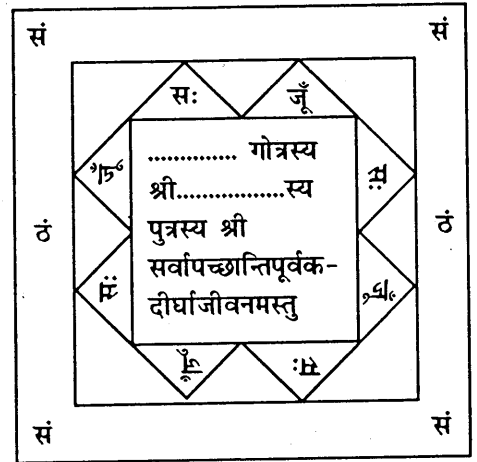
जप के अंत में दशांश हवन, उसका दशांश तर्पण, उसका दशांश मार्जन तथा ब्राह्मण-भोजन आदि कराना चाहिए।

सर्वव्याधिनाश के लिये लघु मृत्युञ्जय-जप
ॐ जूं सः (नाम जिसके लिए किया जाय) पालय
पालय सः जूं ॐ।

इस मंत्र का 11 लाख जप तथा एक लाख दस हजार दशांश का जप करने से सब प्रकार के रोगों का नाश होता है। इतना न हो तो कम-से-कम सवा लाख जप और साढ़े बारह हजार दशांश जप अवश्य करना चाहिए। इसके साथ ही आगे लिखा यंत्र भी हाथ में बाँध देना चाहिए।

श्री महामृत्युञ्जय-कवच-यंत्रम्

भोजपत्र पर अष्टगंध से यंत्र लिखकर गुग्गुल का धूप देकर पुरुष के दाहिने और स्त्री के बायें हाथ में बाँध देना चाहिए गोत्र, पिता का नाम, पुत्र या पुत्री (रोगी) का नाम यथास्थान लिख देना चाहिए। यंत्र इस प्रकार है-



ॐ ॐ ॐ ॐ

अद्भुत एवं चमत्कारिक वनस्पति बहेड़ा

बहेड़ा नामक वनस्पति से आप सभी भलीभांति परिचित होंगे। यह त्रिफला नामक प्रसिद्ध योग का एक अभिन्न अंग है इस पौधे की छाल व फल बहुत उपयोगी हैं। इसका पेड़ प्रायः जंगलों में होता है तथा आकार में महुआ या चिरौजी के पेड़ की तरह काफी बड़ा होता है इसके कई औषधीय प्रयोग तो हैं ही साथ ही तंत्र शास्त्र में भी इसका काफी महत्व है। यहाँ यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि जब हम किसी भी वनस्पति का तांत्रिक प्रयोग करने जा रहे हों तो हमें उसे प्राप्त करने के समय व विधि को सर्वोपरि महत्व देना चाहिए। साधना के क्षेत्र में नियम व संयम का बहुत महत्व है वैसे भी यजुर्वेद में प्रत्येक वनस्पति को सजीव मानते हुये उसका कोई भी हिस्सा (फूल, फल, पत्ता) ग्रहण करने से पूर्व विधिवत् प्रार्थना करने का विधान है।

प्राप्त करने की विधि-

किसी रविवार को यदि रवि पुष्य योग हो तो उसके एक दिन पूर्व अर्थात् शनिवार की शाम को वृक्ष के पास जाकर चन्दन, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, धूप-दीप आदि से उसका पूजन करें। इस दौरान मम कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा। इस मंत्र का जप करते रहें अंत में वृक्ष पर मौली बाँधकर आ जायें अगले दिन यानि रविवार को स्नानादि नित्य क्रियाओं से निवृत्त होकर सूर्योदय से पूर्व जायें और निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुये पेड़ की जड़, पत्ते, फूल आदि लें आवें।

मंत्र

ॐ नमः सर्वभूताधिपतये ग्रस शोषय
भैरवीञ्चाज्ञापयति स्वाहा ॥

घर लाकर पत्तों, फूल, जड़ आदि को अच्छी तरह धोकर पञ्चामृत से स्नान कराकर उपर्युक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर स्वच्छ स्थान पर रख दें नियमित धूप दीप आदि से पूजन करने के साथ 21 दिन तक उक्त मंत्र की 21 माला जपें तथा 21 आहुतियां दें इस प्रकार वह सिद्ध हो जाएगा।

तांत्रिक प्रयोग

मंत्र सिद्ध किया हुआ बहेड़े का पत्ता व जड़ अन्न भण्डार अथवा तिजोरी में रखने से या घर में किसी पवित्र स्थान पर रखने से धन-धान की वृद्धि होती है।

अभिमंत्रित जड़ को दाहिनी जाँघ के नीचे रखकर भोजन करें तो वह व्यक्ति अपनी खुराक से बीस गुना ज्यादा भोजन कर सकता है।

औषधीय प्रयोग

- पेट सम्बन्धी तकलीफों अपच, मन्दाग्नि पीड़ा, वायु विकार, कोष्ठबद्धता आदि की शिकायत होने पर अभिमंत्रित बहेड़ा मूल को दाहिनी जाँघ के नीचे रखकर पालथी मारकर बैठ जायें और भोजन करें इस प्रकार भोजन करने से तांत्रिक प्रभाव से भोजन सुपाच्य हो जाता है तथा रोगी को आरोग्य बनाता है।
- श्वास सम्बन्धी रोग होने पर बकरी के मूत्र में बहेड़े को मिलाकर, उसकी गोली बनाकर खाने से आराम मिलता है।
- कफ हो जाने पर बहेड़े के पत्ते और शक्कर का काढ़ा बनाकर पीने से कफ निकल जाता है।
- दाह सम्बन्धी पीड़ा होने पर बहेड़े के गूदे को बारीक पीसकर, उसका लेप शरीर पर लगाने से फायदा होता है।
- ढोरों के हुए घाव के गहरे होने या उसमें कीड़े पड़ जाने पर बहेड़े की छाल मोटी रोटी के साथ खिलाना चाहिए। इससे कीड़े नष्ट हो जाते हैं और घाव जल्दी भरते हैं।
- पुरानी खांसी दूर करने के लिए एक बरतन में पानी भरकर उसमें बहेड़ों को उबालें। फिर उसके पानी में शक्कर डालकर उसे गाढ़ा करके चाशनी तैयार करें। अब उसमें उबले हुए बहेड़ों को डाल दें। साथ ही छोटी पीपल का चूर्ण डालकर किसी शीशे के बरतन में रख दें। इस प्रकार के मुर्ब्बे खांसी का समूल नाश कर देते हैं।

४१

महालक्ष्मी के सम्पूर्ण स्वरूपों को प्राप्त करने के लिये तथा
ब्रह्माण्डीय शक्तियों को केन्द्रीयकृत करने का सबसे दिव्य यंत्र

वृहद

श्री यंत्र

कूट 301/-

यह वही दुर्लभ यंत्र है जिसे आदि गुरु
श्री शंकराचार्य जी प्रत्येक सनातनधर्मी के
गृह में स्थापित करना चाहते थे।

नोट: उपरोक्त यंत्र किसी धातु का टुकड़ा मात्र नहीं है बल्कि पूर्ण
वैदिक विधान से चैतन्य किया गया जीवित जागृत शरीर है।
अतः अन्य जगहों पर उपलब्ध यंत्रों से इसकी तुलना न करें।

हमारा पता
साधना सिद्धि विज्ञान

फ्लेट नं. 1,2 मिनाल व्यू-॥ पंजाबी बाग भोपाल

दूरभाष : (0755) 576346, 591143

शिवोपासना और ज्योतिष

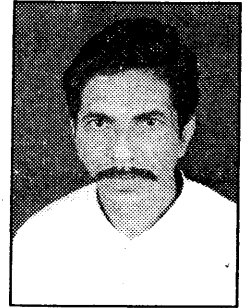
रवि रतन नायक (उड़ीसा)

वैसे तो ज्योतिष का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है जिसके माध्यम से किसी भी व्यक्ति का वर्तमान भूत व भविष्य तक देखा जा सकता है और ग्रहों की गणना, उनकी अन्तर्दशा महादशा देखकर यह भी बताया जा सकता है कि व्यक्ति के जीवन के किस पड़ाव पर उन्नति का योग है तथा कब वह मृत्युतुल्य कष्ट भोगेगा किन्तु शिव के बिना ब्रह्माण्ड की कोई भी विद्या या ज्ञान पूर्ण नहीं है क्योंकि सम्पूर्ण सृष्टि शिवमय है। शिव ही सबकी उत्पत्ति स्थिति और विनाश के कारण हैं अतः शिव उपासना के बिना जीवन निरर्थक है।

कुछ लोगों का मानना है कि मनुष्य इस जन्म के कर्मों का फल अगले जन्म में भोगता है किन्तु यथार्थ यह है कि अपने दुष्कर्मों का फल उसे इसी जन्म में रोग, शोक, निर्धनता, लाचारी व परेशानियों के रूप में भोगना पड़ता है। जाने अनजाने मनुष्य कई गुप्त पाप करता है जिन्हें वह प्रकट नहीं करता किन्तु शिव तो कण-कण में व्याप्त हैं उनकी मर्जी के बिना एक पत्ता भी नहीं हिलता अतः निश्चित है कि हमारे ज्ञात और अज्ञात हर कर्मों का हिसाब किताब उनके पास रहता है। इसलिए जीवन को सार्थक, सुखी व समृद्धिशाली बनाने के लिए शिवोपासना अपरिहार्य है इसीलिए साधना सिद्धि विज्ञान पत्रिका द्वारा साधकों को अद्भुत रमेश्वरी विद्या द्वारा निर्मित एवं दिव्यतम वैदिक मंत्रों द्वारा प्राण प्रतिष्ठित पारद शिवलिङ्ग स्थापित करने की सलाह दी जाती है ताकि उनके जीवन में आ रहे अवरोधों तथा विषतुल्य परेशानियों का शमन हो सके।

ज्योतिष शास्त्र में स्वप्न, शकुन, प्रश्न, दशा, महादशा आदि के माध्यम से समय का परिज्ञान किया जाता है।

जातक की कुण्डली के अनुसार मिलने वाले सुख-दुखों की फलप्राप्ति में काल निर्णय का बहुत महत्व है जिन्हें ग्रहों की दशा अन्तर्दशाओं तथा गोचर आदि के माध्यम से जाना जाता है। यहाँ हम ज्योतिष शास्त्र की बारीकियों



में न जाकर शिव भक्तों के लिए कुछ ऐसी दुर्लभ जानकारी प्रस्तुत कर रहे हैं जिनके द्वारा विभिन्न ग्रहों की महादशा व अन्तर्दशा के कारण आने वाली परेशानियों से छुटकारा मिलता है। जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है कि शिव उपासना ही समस्त विपत्तियों का नाश करने वाली है अतः साधकों को चाहिए कि वे विभिन्न ग्रहों की शांति के लिए बताए नीचे अनुसार भगवान सदाशिव के दुर्लभ मंत्रों का जाप व अनुष्ठान करें क्योंकि भगवान भोलेनाथ की कृपा प्राप्त कर लेने पर सभी ग्रहजन्य बाधाएं दूर हो जाती हैं, साधक की कभी अकाल मृत्यु नहीं होती तथा सभी दिव्य सुखभोग प्राप्त कर लेते हैं और भगवान के श्री चरणों में अखण्ड प्रीति भी प्राप्त हो जाती है।

ज्योतिष शास्त्र में नौ ग्रह बताए गये हैं जो विभिन्न राशियों पर विचरण करते रहते हैं इसी तरह प्रत्येक राशि का एक स्वामी होता है तथा किसी एक ग्रह की महादशा के साथ यदि अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा ठीक नहीं रहती तो साधक को तरह-तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

सूर्य की महादशा में सूर्य की अनिष्टकारक अन्तर्दशा हो तो उस दोष की निवृत्ति के लिये मृत्युंजय मंत्र का जप करना चाहिए। इससे समस्त दोषों की निवृत्ति हो जाती

महालक्ष्मी के सम्पूर्ण स्वरूपों को प्राप्त करने के लिये तथा
ब्रह्माण्डीय शक्तियों को केन्द्रीयकृत करने का सबसे दिव्य यंत्र

वृहद

श्री यंत्र

कूट 301/-

यह वही दुर्लभ यंत्र है जिसे आदि गुरु
श्री शंकराचार्य जी प्रत्येक सनातनधर्मी के
गृह में स्थापित करना चाहते थे।

नोट: उपरोक्त यंत्र किसी धातु का टुकड़ा मात्र नहीं है बल्कि पूर्ण
वैदिक विधान से चैतन्य किया गया जीवित जागृत शरीर है।
अतः अन्य जगहों पर उपलब्ध यंत्रों से इसकी तुलना न करें।

हमारा पता
साधना सिद्धि विज्ञान
फ्लेट नं. 1,2 मिनाल व्यू-॥ पंजाबी बाग भोपाल
दूरभाष : (0755) 576346, 591143

हैं और भगवान शिव एवं ग्रहराज सूर्यदेव का अनुग्रह प्राप्त होता है-

**तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युंजयजपं चरेत्।
सूर्यप्रीतिकरीं शान्तिं कुर्यादारोग्यमादिशेत्॥**

इसी प्रकार सूर्य की महादशा में शनि एवं केतु की अन्तर्दशा होने पर मृत्युंजय मंत्र का अनुष्ठान करने से अपमृत्यु का निवारण होता है- मृत्युंजयजपं चरेत्।

चन्द्रमा की महादशा में गुरु की अन्तर्दशा होने पर यदि अनिष्टकारक योग हो तो अपमृत्यु होती है, इसलिए इस दोष की निवृत्ति के लिए शिवसाहस्रनाम का जप करना चाहिए। तद्दोषपरिहारार्थं शिवसाहस्रकं जपेत्। शनि की अन्तर्दशा होने पर शरीर में कष्ट होता है, अतः मृत्युंजय मंत्र का जप करना चाहिए। चन्द्रमा में केतु की अन्तर्दशा में भय होता है तथा शरीर में रोग उत्पन्न होते हैं, इसलिए मृत्युंजय मंत्र का जप करना चाहिए। मृत्युंजयं प्रकुर्वीत सर्वसम्पत्प्रदायकम्। इसी प्रकार चन्द्र में शुक्र की अन्तर्दशा में तथा सूर्य की अन्तर्दशा में क्रमशः रुद्र-जाप तथा शिवपूजन करना चाहिए। तद्दोषविनिवृत्त्यर्थं रुद्रजापं च कारयेत्, तद्दोषपरिहारार्थं शिवपूजां च कारयेत्।

मंगल की महादशा में, मंगल की अन्तर्दशा में रुद्र-जप तथा वृषभदान करना चाहिए। राहु की अन्तर्दशा होने पर नाग का दान, ब्राह्मण-भोजन तथा मृत्युंजय मंत्र के जप कराने से आयु एवं आरोग्य की प्राप्ति होती है-

नागदानं प्रकुर्वीत देवब्राह्मणभोजनम्।

मृत्युंजयजपं कुर्यादायुरारोग्यमादिशेत्॥

मंगल में बृहस्पति की खराब अन्तर्दशा होने पर शिवसाहस्रनामावली का जप करना चाहिए- तद्दोषपरिहारार्थं शिवसाहस्रकं जपेत्। इसी प्रकार शनि की दोषयुक्त अन्तर्दशा में मृत्युंजय मंत्र के जप का विधान है।

राहु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा दोषकारक होने पर अपमृत्यु की सम्भावना रहती है, इसलिए स्वर्णप्रतिमा का दान तथा शिवपूजन करना चाहिए-स्वर्णस्य प्रतिमादानं शिवपूजां च कारयेत्।

बृहस्पति की महादशा में अनिष्टकारक बृहस्पति के योग होने पर शिवसाहस्रनाम का जप, रुद्र-जप तथा गोदान करने से सुख-शांति की प्राप्ति होती है-तद्दोषपरिहारार्थं शिवसाहस्रकं जपेत्। रुद्रजाप्यं च गोदानं कुर्यादिष्टं समाप्नुयात्॥ इसी प्रकार राहु की अन्तर्दशा होने पर मृत्युंजय मंत्र के जप का विधान है।

शनि की महादशा में शनि तथा राहु की खराब अन्तर्दशा होने पर मृत्युंजय मंत्र का जप करना चाहिए। इसी प्रकार बृहस्पति की अनिष्टकारक अन्तर्दशा होने पर शिवसाहस्रनाम का जप तथा स्वर्ण-दान करना चाहिए इससे आरोग्य प्राप्त होता है और सभी बाधाएं दूर हो जाती हैं-

तद्दोषपरिहारार्थं शिवसाहस्रकं जपेत्।

स्वर्णदानं प्रकुर्वीत ह्यारोग्यं भवति ध्रुवम्॥

बुध की महादशा में मंगल, बृहस्पति एवं शनि की अन्तर्दशा यदि ठीक न हो तो वृषभ-दान और मृत्युंजय मंत्र तथा शिवसाहस्रनाम के जप करने से अपमृत्यु का निवारण होता है तथा सर्वसौख्य प्राप्त होता है-

अनङ्गाहं प्रकुर्वीत मृत्युंजयजपं चरेत्।

तद्दोषपरिहारार्थं शिवसाहस्रकं जपेत्।

केतु की महादशा सात वर्ष तक रहती है। इस सात वर्ष में निश्चित क्रम से सभी ग्रह अपना समय अन्तर्भुक्त करते हैं। केतु में केतु तथा बृहस्पति ग्रह की दोषकर अन्तर्दशा रहने पर स्वास्थ्य-हानि तथा आत्मबन्धु से वियोग और अपमृत्यु होती है, ऐसी स्थिति में मृत्युंजय जप तथा शिवसाहस्रनाम का पाठ करने से सभी दुर्योग दूर हो जाते हैं।

तद्दोषपरिहारार्थं शिवसाहस्रकं जपेत्।

महामृत्युंजयं जाप्यं सर्वोपद्रवनाशनम्॥

शुक्र ग्रह की महादशा में दोषयुक्त राहु, बृहस्पति तथा केतु की अन्तर्दशा में मृत्युंजय मंत्र के जप करने से अपमृत्यु दूर होती है और सौख्य प्राप्त होता है तथा भगवान् शंकर की प्रसन्नता प्राप्त होती है-

तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युंजयजपं चरेत्।

चैतन्य पूजन सामग्री

कोई भी साधना या मंत्र जप माला के बिना सम्पन्न नहीं होता और यदि माला एवं साधना में प्रयुक्त होने वाली सामग्री प्रामाणिक, अभिमंत्रित और पूर्ण चैतन्य हो तो अभीष्ट सिद्धि का मार्ग आसान हो जाता है।

कर्मकाण्ड, जप, तप, साधना आदि में विश्वास रखने वाले साधकों के लिये हमने विभिन्न प्रकार की मालाओं तथा साधना सामग्री को वैदिक विधि विधान से चैतन्य किया है। सम्पूर्ण सामग्री चैतन्यता प्रदान करने वाले दिव्यतम मंत्रों से प्राण प्रतिष्ठित तथा सिद्ध है जो साधना के पथ पर आपके लिये वरदान सिद्ध होगी-

❀	रुद्राक्ष माला	150/-
❀	स्फटिक माला	200/-
❀	कमलगट्टे की माला	120/-
❀	हकीक माला	120/-
❀	मूँगे की माला	125/-
❀	पीताम्बर (शिव मंत्र युक्त)	300/-
❀	सूर्य यंत्र	150/-
❀	द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग यंत्र	150/-

नोट: उपरोक्त सामग्री मनीआर्डर अथवा ड्राफ्ट द्वारा निर्धारित राशि (20 रुपये डाक व्यय सहित) भेजने पर ही उपलब्ध हो सकेगी।

सम्पर्क

साधना सिद्धि विज्ञान

फ्लेट नं. 1,2 मिनाल व्यू-॥ पंजाबी बाग भोपाल

दूरभाष : (0755) 576346, 591143

गौरवशाली मासिक पत्रिका
'साधना सिद्धि विज्ञान' द्वारा आयोजित

महालक्ष्मी साधना शिविर

दिनांक

26 नवम्बर 2000 दिन रविवार



-शिविर स्थल-

अप्पा जी की बगीची, महू नाका चौराहा, अन्नपूर्णा रोड इन्दौर-452009

- ✽ सर्वग्रह दोष, पूर्वजन्मकृत दोष व पाप-ताप निवारण के लिए भगवान पारदेश्वर का रुद्राभिषेक
- ✽ दुर्लभ महालक्ष्मी दीक्षा एवं कालसर्प योग निवारण दीक्षा तथा संबंधित साधनाएं
- ✽ सभी साधकों को मनोवांछित दीक्षायां विशेष शक्तिपात द्वारा प्रदान की जायेंगी

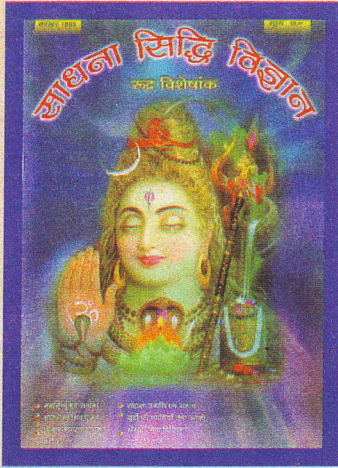
**विशेष : कार्यक्रम पूरी तरह से निःशुल्क है। दीक्षाएँ लेने वाले
साधक अपने साथ विल्व पत्र अवश्य लायें।**

-: आयोजक :-

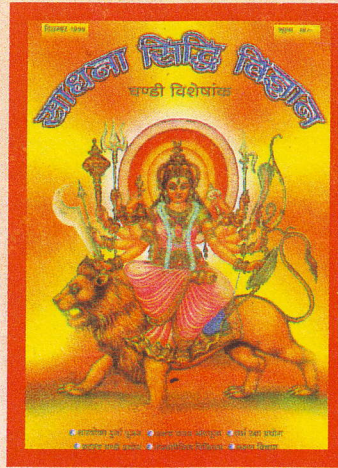
पं सत्येन्द्र आनंदराव रोडे, दूरभाष: 283369, 256557, 221122, 560311, 489521, 233004

-: सहयोगी :-

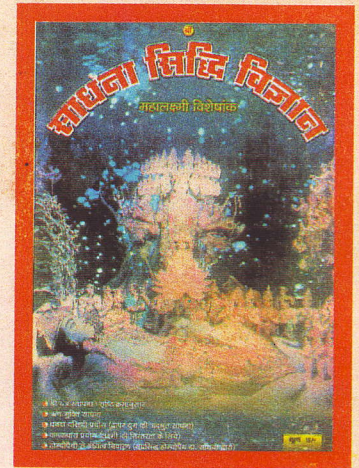
हरिकृष्णा, राकेश कोरी, डॉ. रामेश्वर मिश्रा (बरोठा देवास), राजेन्द्र विश्वकर्मा, विनोद बाघ, भुवनेश्वर
यादव, राजेन्द्र जोनवाल, विनय कुशवाह, सुधीर देड़गे।



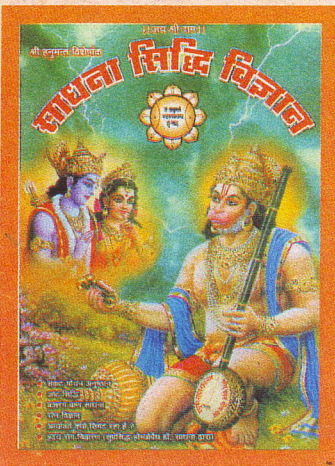
रुद्र विशेषांक



चण्डी विशेषांक



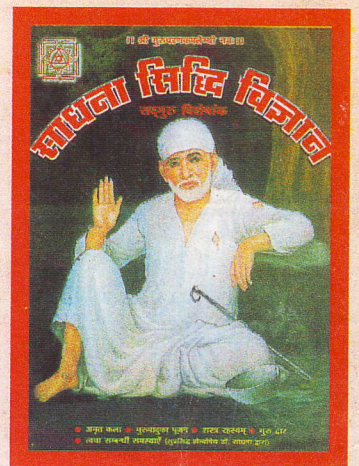
महालक्ष्मी विशेषांक



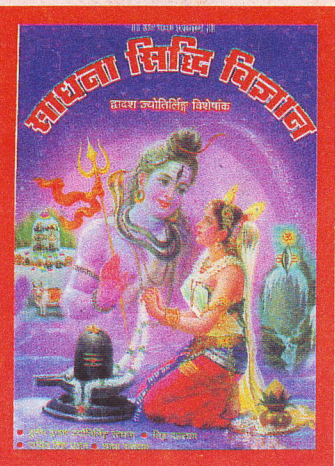
श्री हनुमन्त विशेषांक



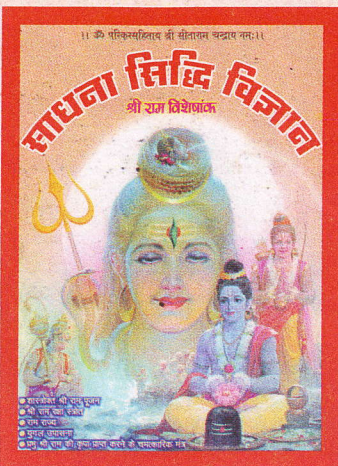
श्री महाकालिका विशेषांक



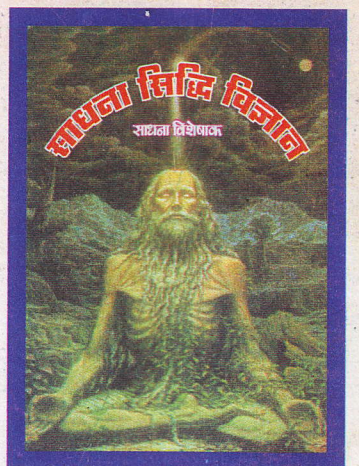
सद्गुरु विशेषांक



द्वादश ज्योतिर्लिंग विशेषांक



श्रीराम विशेषांक



साधना विशेषांक

अपने नजदीकी पुस्तक विक्रेता से खरीदें या हमें लिखें

साधना गब्लिकेशन

शॉप नं. 3, प्लाट नं. 210 नफीस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, जोन-1, भोपाल-462 011 दूरभाष : 576346

नोट : वांछित पुस्तकों के मूल्य के साथ डाक व्यय 20/- अतिरिक्त भेजें।